❁ प्रस्तावना. ❁

बुद्धि फलं तत्त्व विचारंच । देहस्यसारं व्रत धारणंच ॥
अर्थस्य सारं कर पात्र दानम् । वाचा फलं प्रीतिकरं नराणाम् ॥

मनुष्य जन्म की प्राप्ति का मुख्य प्रयोजन है कि कृतव्य परामण होना, क्योंकि-आहार निद्रा भय मैथुन आदि कितनेक कृतव्यों तो मनुष्य के और पशुके एक सेही है, जिसका विशेपत्व फक्त बुद्धि शरीर द्रव्य और वच्चन शक्ति आदि काही देखा जाताहै. जिसका फल बुद्धिसे तत्वज्ञ होना, शरीर से व्रत धारण करना, द्रव्य से पात्र दान देना और वचन से सर्व के साथ प्रेम बृद्धि करना, येही होता है. जो ऊपरोक्त चारों रत्नों को प्राप्त हो जो फल उनसे प्राप्त करने का है वो न किया तो वो मनुष्य पशु से भी निपाट-खराब है क्योंकि-पशुको तो वो साधन प्राप्त हुवे हीनहीहैं तो वो बेचारे करेही क्या? परन्तु जिनको जो साधन प्राप्त हुवे हैं और वो उनका लाभोपार्जन न करते व्यर्थ गमाते हैं या कु कर्मों मे लगा उलट खराब करते हैं उसके जैसे बेवकूप मूर्ख और है ही कोन? अर्थात्—येही है. ! ! ऐसा जान ऐसी अज्ञान तासे हुइ दुदर्शा का अवलोकन कर स्वात्म हितार्थी हो जो उपरोक्त - चारो पदार्थ प्राप्त हुवे हैं उनका यथा शक्ति यथार्थ लाभ लेते हैं वो मनुष्य हो

यो पशुहो किसी भी द्रव्य पर्याय को प्राप्त हुवे हो परन्तु भावों की और कृतव्यों की उ-
त्तमता कर वो उत्तम होता है और अनेक दूसाध्य कामों कोभी सुसाध्य बना देव मानव
दानवों का पूज्य बन अनेक एहिक और परमार्थिक सुख सम्पति का भुक्ता हो धर्मार्थ
साधन से साध्यहो स्वर्ग और ऽपवर्ग (मोक्ष) प्राप्त करता है, यह बात ताहामेव सत्य
है. इसका हूबेहू चित्र दर्शाने के लियेही मानो यह वीरसेण कुसुमश्री चरित्र रचागया हो
ऐसा, इसके पठन श्रवन मन से पाठ को श्रोताओं स्वतःही समझ सकेंगे, और जैसी कृ-
तव्य परायणता वीरसेण नृपतिव कुसुमश्री सती और चुडामणी शूक (तोता) ने करी है
उसे ध्यान में ले कर आपभी करेंगे तो वो जरूरही वैसेही सुख के भुक्ता बनेगें इस उम्मे-
दसे इस चरित्र की ५०० प्रत तो यहां की गुप्तपरमार्थ की इच्छाक शास्त्र कोविंद सुव्रतिसो
भाग्य वती श्राविका वाइ के द्रव्यके सदव्य से और ५०० प्रतों यहां के ज्ञान वृद्धि खा
ते मे जमा हुवा द्रव्य जिसके सदव्यय से यों सब १००० प्रतों का अमूल्य लाभदेताहुवा
कृतव्य परायणता का इच्छ
कृतज्ञता हूइ समझताहूं

राजाबहादर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसाद जौहरी
(दक्षिण) [illegible] वीराब्द २४४ १.

श्रीवीरसेण कुसुमश्री चरित्र का शुद्धिपत्र.

पाठक गणो ! प्रथम निम्न लिखित अशुद्धियों को शुद्धकर फिर यत्नासे पढीयेजी

पर्व	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	१	चिडाका	चिदाकार
२	१	२	पृति	पाति
३	२	३	छत्राय	छत्राया
५	१	१४	गुरू	श्वरु
८	१	३	मन्यो	मच्यो
९	१	१०	इल	इम
१०	२	५	डर	उर
११	१	४	शोशित	शोभित
"	"	५	उछित	उचित
"	१	१२	लुली	लुली २
"	२	१२	मोटो	फोटोलेइ
१३	१	८	देता	देतो
१४	१	३	पल्यां	पल्य
"	२	४	दीन	दीनी
१६	१	३	भ्रमेर	भ्रमेरे
"	"	११	दाछ	दाल
"	२	१२	घात	वास
१९	१	१३	मे	०
"	२	१०	अपढी	आपढी
२२	१	१	पत	तप
२३	१	१	हरी	हरा
२४	१	१२	शीकारे	शीखरे
२५	२	३	कोइ	पडाकोइ
२६	२	४	पडगये	पढगये
"	"	"	कैसे	०

,,	,,	११	रीतभर	रातिभर
,,	,,	१२	मिलगांदी	मिल बाटी
२७	,,	१४	विन	विननहीछू
२८	,,	१२	कस्मान	कसर नही
३०	२	६	लखय	लखाय
३२	१	९	मुझा	मुझ
,,	१	२	तपातारेताप	तापतपतारे
,,	,,	११	मीठे	मीठेरे
,,	२	३	चालोरी	चालेरे
३३	१	११	हर्षिप्फा	हर्षिपुप्फा
३४	१	२	कीजीये	नकीजीये
,,	२	१०	करखी	करणी
,,	,,	१३	छोडो	छेडो
३६	२	१३	तंतो	तूतो,

,,	,,	,,	पंसे	पैसे
,,	१	८	जुगला	चुगला
,,	२	१०	देहै	है
४०	२	१३	क्षत्रा	क्षत्रार
४१	१	४	आदि	०
४२	१	१	वाठी	बैठी
,,	१	७	मनत्रोर	मनत्रारे
४३	२	१४	कानसे	लालसे
,,	,,	४	लीलं	लीला ॥
,,	,,	,,	असके	आसके
,,	,,	१३	तूंयह	तूंकहे ॥यह
४४	,,	,,	अखण्ड	खण्ड
,,	१	६	किककरी	किंकरी
,,	२	२	देवों	०

,,	,,	,,	यो	०
४८	२	९	वमी	भवी
५१	१	१३	जोया	जोय।
,,	१	१४	वहुरें	वहु
५२	,,	१	मल	माल
५४	और	५	होहा	वैठाहो
,,	१	१०	तती	सती
५५	,,	५६	के पृष्टाक उलट लग गयेहैं	
५७	२	२	परज	परजा
,,	,,	६	नीजको	के बीच
,,	,,	७	थाराया	थरराया
,,	,,	१०	फनेरी	फफेरी
५८	१	१४	वल्ला	वल्ली
,,	२	२	नत	तन

५८	१	३	सत्यक	सत्य
,,	२	७	मोहा	माहा
,,	१	८	में	०
५९	२	१२	आदेख	आदेख
६१	२	९	पर	कर
६२	,,	१२	करोजली	कराजली
६३	१	६	धर	धन
६४	१	७	से	०
,,	२	२	कहाव	पहोच
६५	,,	१०	नवमी	दशवीं
६६	२	३	सवा	सवाय
,,	१	४	अमो	अमोल
,,	३	१२	लगते	लये
६९	१	१	चलते	हम चलते

पत्र	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
७१	१	१	भेल	भेले
"	"	२	कोण देखे	कौन देखे
"	"	८	निकल लिय	निक लिये
"	"	१०	जहाज	जहाज में
"	"	"	चली नसरे	चाली येलरे
७२	"	९	आरी	अरी
"	"	११	सिणगरे	सिणगारे
७३	४	"	मुनिकरो	मुनिकहे
७५	१४	"	यथातथा	यथातथ्य
७७	२	"	फलेफले	फले
"	८	"	मया	रया
"	११	"	वनत्र	वन्धन

७७	पृष्ठांक		८७	७८
"	१३	१	कहवाय	कहेसोय
८१	९	१	गमावोगा	गमावोगे
८२	१२	१	आयुअन्त	आयुअन्त स म
"	१४	१	पाचवी	०
८३	१	१	पेरेरे	मेरे
"	८	१	छोगरे	जोगरे
"	१२	१	वारेरे ,	वरेरे
८३	४	१	भारे	भारे
"	१२	१	नपतिये	पतिनतये
८४	११	१	तस्य	तस्य शिष्य

इस सिवाय और भी दृष्टि दोष विग्रह मन और बुद्धि की, मन्दता से व कम्पो जिटर की अज्ञता से अनेक भूलों रह गइ है उन सब को सुधारीयेजी

अमोल ऋषि.

॥ ॐ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ श्री वीरसेन कुसुम श्री चरित्र प्रारंभ ॥

॥दुहा–सचिदानन्द आनन्द कन्द । चिदाका चिद्रूप ॥ जय शुद्ध चेतन्यमय । प्रभू-जगत्के भूप॥१॥जिनवरेन्द्र त्रिकालके। हे हुवा होवे अनंत ॥ ते जग तारण युग पदे । मुझ उतमांग नमत ॥२॥ सर्वज्ञ गणेश सूरी सुती । थिविर तपश्वी अणगार ॥ विद्या चरण धारक भणी । वारम्वार नमस्कार॥ ३॥ भरम तिम्रहर विशुद्धकर । ज्ञानादि गुण दातार ॥ अगाध उपकारी गुरु भणी । नमू अनन्ती वार ॥४॥ भारती बुद्धी उद्धारती । कोविदे पूज्य कवीमाय ॥ जिनानने जे प्रगटी । नमू छू करजो सहाय ॥५॥ इत्यादि सर्व जे टका । सरण गृहूं कर जोड ॥ विघ्न हरो शांति करो । पूरो म्हारा कोड ॥६॥ चउँ विध धर्म जग तारणो । दान शील तप भाव ॥ शील शिरोमणी सर्व मे । पूरे पालक के चाव॥७॥ कुसुम श्री मोटी सती। रही विश्वराणी आवास ॥ ब्रह्म वृत शुद्ध पालियो । तस चरी करुं प्रकाश॥८॥पांच प्रमाद को परिहारी । धरी चित उत्साव ॥ नित्य नियम धरके सूणो । गृहो गुण शुभ भाव॥९॥❀ढाल१ली-धम्मो मंगल महिमा नीलो॥यह देशी शीलसे सर्वसुख संपजे।

शीले लील विलास॥शीलसेसर्व संकट टले।शीले फळे सर्व आस।शी२।सर्व द्वीपोंमें दीपता। सर्वपृथवीका मध्य॥सर्व द्वीपोंसे लघु कहा। जंबूद्वीप सुसद्य ॥ शी२॥ नग नगेन्द्र सुदर्शण। तेहथी दक्षिण दिश ॥ भरत क्षेत्र कर्म भूमीका । शोभित विश्वावसि॥शील३॥ वैताड और गंगा सिन्धू से। हुवा तस छः भाग। दक्षिण के मध्य भाग मे। शोभित है बहू जाग ॥शील४॥ कनकशाल पुर तिण विषे। स्वर्ग तणे अनुहार॥ ऋद्धि सिद्धी से पूरण भरा। दो चक्र भय निवार ॥शील ५॥ गढ पक्के कर वींटिया। कांगूरा फिरणी बूरज ॥ द्वार बहू वहूशोभिता। खाइ कपाट सूरज ॥शील ६॥ राज मार्ग चौवटादिक। पन्थ निर्मल सुख कार ॥ उतंग मेहल ने हवेलीयां। रंगीछे विविध प्रकार॥शी७॥चार-वर्ण कौम छेमिली। वसे सर्व सुख मांय। दूंदाला रुपाला कमलपति। तेह वजारे शोभाय ॥शील ८॥ धर्म स्थान घणा तिण विषे। दातार उदार प्रणाम। जाचक जन संतुष्ट रहे। पावे इच्छित आराम ॥ शील ९॥ नट खट चोर क्षुद्रादिसे। रहित वस्ती अभीराम ॥ शील संतोष दयादि गुणे। शोभे जन से गाम ॥शील १०॥ हरी केसरी तस महीपति। हरी ने केशरी समान ॥ अरी-भजे रंजे सज्जन ने। मानी मछरालो सुलतान ॥शील ११॥ न्याय नीती मे निपुण घणो। विचक्षण चित उदार॥ रुप तेज दीपे इन्द्रसमो। राष्ट ऊपर अति प्यार ॥शील १२॥ प्रीति

वी कु १

१ स्वचक्री परचक्री

२-शेठ

वासुदेव

४ सिंह १

माति पटरागणी । इन्द्राणी सी ससनूर ॥ अहीण अंगी दिस अनंगी । लज्जादि गुण भरपूर ॥शील १३॥ शीलवती ने महासती । पृतीवृत्ता पती प्राणाधार ॥ कुशल ते सकल कला विषे । धर्मार्थ काम जाणनार॥शी१४॥ भारती चंद्र सचीवजी । चारो बुद्धि निधान ॥ राज धुरंधर गुण नीलो । प्रजा को जविन प्राण ॥शील १५॥ गज गाजी रथ पायका । चतुरंगी शैन्य श्रेय कार॥ देखी कम्पेरिपु कालजा । करे ते जय २ कार ॥शील१६॥ श्रीवसी भन्डार मे । कुशल सामंत के माय । आवक जावक दोनो घणी । विलसे पुण्य पसाय ॥शी०१७॥ सूमही आदि उद्यान में । वृक्ष अनेक प्रकार ॥ बहू आकारे बहू शोभिता । नम्या फल फूल के भार ॥शी० १८॥ वेली छाइ मंडपे । फूल फूल्या गुलस्यार ॥ पक्षी युग्म क्रिडा करे । पंथी जन ने आधार ॥शी० १९॥ वावी कूपादि सरोवरे । निर्मल भरीयो नीर ॥ मिष्ट लहू निरोग्यता । कमलादि शोभे तीर ॥शील २०॥ पूर्व पुण्य पसायथी । होवे सर्व सुखदाय । मंडण ढाल पहिली कथी । अमोल ऋषि हितलाय ॥शी०२१ ❀ ॥ दुहा—सयन भवन सुहामणो । चित विचित्र रंग भर ॥ स्थंभ खूंटी ललित पूतली । सुगन्ध मह के बहू पर ॥१॥ हीरेण ईस पाया हेमकों । पंच रंग रेशमी निवार ॥ मुखमल खोली अकतुले भरी । तोपक तकीया सूखकार ॥३॥ सौम्य द्रष्टी सिंह शार्दुलो । खेलतो गगन मझार ।

१ चांदी
२ सोना

राणी उवाशी लेवतां। पेठो उदर ते वार ॥४॥ तत्क्षिण जागी हर्ष भर। मन मे स्मर नव-
कार ॥ अर्थ पूछण हंस गति करि। आइ जिहां भरतार ॥५॥ ❀॥ ढाल २ री ॥ म्हाने
साधु मिलावोरे ॥यह०॥ हम स्वपनो दीठो ॥ अर्थ कहोजी शाणा साहिबा ॥आं०॥ निद्रा
निवारण श्वामीनी सेर। माननी करे उपचार ॥ सयम सार अलापी रागणी। मधुर म-
ध्य श्वर सार जी ॥हम॥१॥ लगार निद्रागत महीपाति। विचारे किहां सूरी गाय॥ दिग
ही प्रेमला ऊभी जाणी। नेत्र विकसी जोवे राय जी ॥हम २॥ देख प्रियवति हर्ष पाय
अति। वैठी आदर दीध ॥ रत्न सिंहासणे वैठाइ पूछे। प्रमुदित आवण विधजी ॥हम
३॥ श्रम निवारी वोली प्यारी। कर जोडी उत्सहाय ॥ प्राणेश तणां पसायथी जी में।
स्वपन लियो सुखदाय जी ॥हम ४॥ सौम्य द्रष्ट शार्दुल केहँरी। रमतो खगथी आय॥
उवासी आतां पेठो पेटते। इम देखी मे जागी रायजी ॥हम ५॥ नाथ पास आइ फल
इच्छाइ। प्रकासो जी जे होय ॥ आनंदित हो वोले भूपाति। अव कमी रही नहीं
कोय जी ॥हम ६॥ सिंह समानो पुत्र प्रशवसो। जग दिनकर कुलचंद ॥ यह अर्थ
राणी हीये धारने पाइ। परमानन्द जी ॥हम ७॥ ले आज्ञा निज स्थाने आइ। धार्मिण
दासी वोलाइ ॥ धर्म कथा कर रयण गुजारी। शुभ फल की इच्छाइजी ॥हम ८॥ प्राते

क्षितीधव सेवक पास । शभा मंडप सजाइ ॥ अष्टांग निमित के जाण विबुधको । सामंत हाथ बोलाइजी ॥हम ९॥ सज हो हर्षी पंडित आया । सत्कारी रायजी बैठाय ॥ यथा विध पूछे स्वप्न फल कहो । हरिणाद्रिप जो किस्यो पाय जी ॥हम १०॥ निमंती वदे सुणीये राजेश्वर । सहू बहोतर स्वप्न बताया ॥ तीस उत्तम में चउदे श्रेष्ट अति । ते पेखे जिनेश्वर माया जी ॥हम ११॥ सात नारायण चार राम । एक मंडलिक के मुनि मात ॥ देखी तत्क्षिण जागे तेहने । कुल दीपक इम थात जी ॥हम १२॥ केहरी स्वपने केहरी सम सुत । सुर वीर थांरे थासी ॥ अरिकुल निकंद राजेश्वर वंद । मुनि मार्ग ने सो दिपासी जी ॥हम १३॥ सुणी दम्पति अति हर्षाया । सत्य मानी तस वायाँ ॥ प्रभूत धन दे घर पहोंचाया । जोतिषी अति हर्षाया जी ॥हम १४॥ सुखे राणी जी गर्भ ने पाले । दोषण सघला टाले ॥ तीन मांस वीत्या आनन्दे । दान धर्म उजमाले जी ॥ हम १५ ॥ एक दिन राय शभा मे बैठा । एक दूत विदेशी आयाँ । नृपति सन्मुख पत्र ठवीने । जय विजय वधाया जी ॥हम १६॥ अरिविंद राय कटक ले प्रबल । दिग विजय करवा जावे ॥ भक्ति शक्ति इच्छा जिम कीजे । तुमे मना आगे सिधावे जी ॥हम१७॥ सुणी नृप क्रोधातुर हो कहे । निकल तू शीघ्र ईहांसे ॥ आवू में पाछे अरिबिंद बींदवा । रहे होंशार कहे तासे जी॥

१ सिंह
२ वचन

जन सव ॥ चिन्ते यह कौन वीर। तेज रुप अजब ॥देखो ११॥ भारती चन्द सचीव । समजे सर्व भेद ॥ आणंदी सर्व सें कहे। सुणो संशय छेद ॥देखो १२॥ गर्भ प्रभाव यह महाराणी साव ॥ प्रवल शत्रू हरायो । राखी राज आंव ॥देखो १३॥ सुन सर्व आश्चर्य पाय। अति हर्षाय ॥ वीर रत्न कूंखे आये । सर्व सुख दाय ॥देखो १४॥ फोज उमराव सव आये निजठाम ॥ सर्व देश मांहे फेले । गर्भ के गुणग्राम ॥देखो १५॥ राय प्रेमला पें आये। पूछे धर प्रेम ॥ लडने की इच्छा प्रिय । तुमको हूंइ केम ॥देखो १६॥ राणी कहे वहुत दिन से। डोहला होता यह । परांजय शत्रू का करुं । जोग मिला तेह ॥दे० १७॥ गर्भ पसाय सर्व । सिद्ध हूवा काम ॥ पूत्र हुवा देस्यां इसका । वीरसेण नाम ॥दे० १८॥ दान पुण्य धर्म करते । वीते नव मास ॥ शुभ मोहूर्त कुंवर जाया हूवा प्रकाश ॥देखो १९॥ प्राते दासी राजाजीने। ज्ञावधाइ दीध ॥ धन वहुत देइ॥ तस वद्धारण कीध ॥देखो २०॥ जन्म महोत्सव मंडाया नगरकें मांय॥ दाण दंड किये बंध। बंधीवान छोडाय ॥देखो २१॥ ढाल अशुभची अहार निपाइ ॥ जिमायो परिवार ॥ धाहा "वीरसेण" नाम दिया तेवार ॥देखो २२॥ ढाल तृतीय मे ॥ कियो जन्म अधिकार॥ आगे पुण्य सुनो कहे अमोल अणगार॥ देखो ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दूहा—शक्रेन्द्र ज्यो कुमरजी ॥ पंच धाय परिवार, ऋद्धि होवे चेन में॥रुप

१ शोभ

२ चद्रमा

तेज गुण सार ॥१॥ वसु वर्ष अनुमान से। हुवे कुमर जिसवार ॥ विद्याभ्यास करावने। आचार्य श्रेयकार ॥२॥ बोलाया शुभ महोर्त। सुरु कियो अभ्यास ॥ प्रबल प्रज्ञा पुण्य से। सीखे विनय प्रयास ॥३॥ वहोतर चौसट नर नारकी। कला धर्म राज नीति। प्रवीन भये स्वल्प काल मे। हर्ष्या सज्जन चित ॥४॥ अखूट धन कलाचार्य को। दे पहोंचाये घर। वीरसेण वे फिकरसे। क्रिडा करे वहूपर ॥५॥ बाल वय यो व्यत्तिक्रमी। जागृत हुवे नव अंग। हिरणाक्षी मन हरण को। नव योवन दिस रंग ॥६॥ लज्जा विनय मर्याद ते॥ यश विस्तर्यो जग मांय ॥ आगे कुसुम श्री तणी। चरि सुणो चित लाय ॥७❀॥ ढाल ४थी—मांग २ वर मांगणी ॥यह०॥ पुण्य से सर्व इच्छित मिले। पुण्य रहित सीदाय हो ॥ ते कारण शुभ पुण्य को। संचो हित चित लाय हो ॥पुण्य १॥ क्षिती मंडण रतन पुरी। ऋद्धि सिद्धि शोभाय हो। रत्न जडित आवास से। देवलोक लज्जाय हो ॥पुण्य २॥ कोट कांगूरा पोलने। मेहल हवेली हाट हो ॥ श्रीमत विनित नर नार से। दिखता है वहू थाट हो ॥पुण्य ३॥ रण में धीर धरी रहै। रण धीर नामें राय हो ॥ रुप पराक्रम बुध्द बले। न्याय निति से शोभाय हो ॥पुण्य ४॥ नारि रत्न रत्नावती। पटराणी सूरुप हो ॥ पतिवृता गुणकीलता। चातुरी से मोहायो भूप हो ॥पुण्य ५॥ शारद चन्द्र मंत्री गुरु। चउ

बुद्धि धरनार हो। और साहेबी बहू भूप के। योग युक्त श्रय कार हो ॥पुण्य ६॥ पण एक
खामी मोटकी। कुल में नहीं संतान हो ॥ ते चिन्ता से दम्पती। नित्य करे आर्त ध्यान
हो ॥पूण्य ७॥ मंत्र तंत्र जंतर जडी ॥ औषधादि उपचार हो ॥ कर कर सहु सो थक ग-
या ॥ न हुवो कुल आधार हो ॥पूण्य८॥ लाभांत्राय जहां लग रहे। तहां लग नहीं मिले
योग्य हो ॥ पुण्य विना कौन अवतरे। भोगवे राज के भोग हो ॥पूणम ९॥ एकदा रण
धीर राजवी। हय शैन्या करी तैयार हो ॥ गया उध्या ने क्रिडा भणी। फेरवतो तोखार
हो ॥पूण्य १०॥ तव तिहां तुरंगकी। अजगर दृष्टी ए आय हो। भडकी भगा कंतार[1] में।
फाल भरंता जाय हो ॥पुण्य ११॥ खेंच्या न रहे बाग[2] से। घबरायो नरपाल हो ॥ न जा-
णे किहां ल्हाख से। अकाले आवे काल हो ॥पू० १२॥ घोडा तो जावो आगडा। ब-
चावूं म्हारा प्राण हो ॥ तब वृक्ष एक आवीया। तात्क्षिण आया अवशान हो ॥पू० १३॥
डाली से झूली रहा। तुरी गया गिरि मांय हो ॥ महीप मही[3] पर ऊतरी। सूतो ठंडी छांय
हो ॥पू० १४॥ श्रम शम्यो निद्रा लगी। फिर सो जागृत थाय हो ॥ चिंते हूं किहां
आवीयो। अब जावूं किन ठाय हो ॥पू० १५॥ किहां राज सायबी रही। कहां शैन्या
उमराव हो ॥ हाहा कर्म विटम्बना। क्षिण में करे रंक राव हो ॥पू० १६॥ चिन्ता किये

[1] जगल
[2] चोटा
[3] पृथवी

सो क्या होवे । करना कोइ उपाव हो ॥ ज्यो सम्पत पीछी मिले । यो चिन्ती धरे ओ-
छाव हो ॥पू० १७॥ उठ चले रन उजाड मे । धुम्र निकलता जोय हो ॥ चिन्ते वन में
वन्ही हे । तो नर इहां निश्चय होय हो ॥पु० १८॥ तस अनुसार तिहां आवीया । जो-
गी देखा एक हो ॥ अशुची तन अशुद्धी में । पडा है निर विवेक हो ॥पू० १९॥ करु-
णा व्यापी घट मे । तुम्बी से जल लाय हो ॥ न्हवाइ पवित्र किया । वकल वस्त्र पहरायहो
॥पु० २०॥ तो पण शुद्ध मे न आवीया । वोलाये न कहे वाय हो ॥ जीवित के हे चि-
न्ह सहू । चिंतवे तव नरराय हो ॥पू०२१॥ मुरछा गति किम यह हुवा । सावध होवे कौन
उपाचार हो ॥ पूछूं हू कौन से इहां । ज्यों यह होवे होशार हो ॥पु० २२॥ योगी के सा
ता हुवा । होसी मोटो पुण्य हो ॥ ढाल चतुर्थी अमोल कही । पुण्यवंत को क्या न्युन हो॥
पु० २३ ❀॥ दुहा—जितनें शाख सहकार पर । सूवटो तन वहूरंग । चवी मधुर वाणी
तदा । नृप पेखी भयोदग ॥१॥ तुलसी पूछे शुक भणी । कहो खग पत यह भेद ॥ कैसे
योगी सावध हुवे । क्यो हुइ ऐसी खेद ॥२॥ कीरं कहे महीं पीर को । चडाते श्वास समा-
न ॥ चूक्या गति यह जोगीवर । ऐसे हुइ यह व्याध ॥३॥ चलो शिघ्र संग महारे । वूं
टी वतावू एक ॥ उर्द्धेश्वर नेंत्रांजने । लहे चैतन्यता विवेक ॥४॥ राय जाय लाय ते ज-

१ तोता
२ राजा

डी । यथा विधी लगाय ॥ तत्क्षिण ऋषि सावध हुवे । सनन्दाश्चर्य नृप पाय ॥५॥ ❀ ॥
ढाल ५वी–कपूर होवे अति ऊजलोरे ॥यह०॥ पग प्रणम्यों राय जोगी कार्जी। जोगी दीयो सन्मान ॥ उपकारी मोटा नर जान के जी । कहे ऋषि हर्ष आन ॥ चतुर नर। सुख दीया सुख पाय ॥आं०॥ १॥ किण पुरपत छो राजवी जी । वन में भ्रमो किण काज ॥ उपकार आज हम पर कीयो जी । दीयो जीवित दान साज ॥चतूर २॥ भूप नरमाइ कर जोडने जी । कहे हूं पामर जीव ॥ समर्थ नहीं सेवा साधवा जी । आप हो गुण अतीव ॥ चतूर ३ ॥ नहीं बन सकी कुछ मुज थकी जी । श्वामी की किंचित सेव ॥ मैं हूं रत्न पुर राए को जी । सेवक अहो भूदेव ॥चतूर ४॥ अश्व वक्रे इहां आइयोजी । देखा आप दीदार । सफल दिन लेखूं आजका जी । भेट्या जोगी सिरदार ॥ चतर ५॥ देखी नम्रता भूपकी जी । निरभिमानी मिष्ट वेण ॥हर्ष्या जोगी गया वन में जी । कंदलाया तत्क्षिण ॥ चतुर ॥ ६ ॥ वइरोयंणी ताप में धर्यो जी । फूल्यो कुंभ समान ॥ मुख छेदी झटक्यो पत्र पे जी । निकल्यो इष्ट पक्वान ॥ चतर ७ ॥ केली पत्र में धर दीयो जी । जाणे केशरीयां भात ॥ अति स्वादिक राय जीमीयां जी । ते जोगी ने संगात ॥ चतूर ८ ॥ गंगोदक पी त्रप्त हुवा जी ॥ वै ठ गिरी की छांय ॥ धर्म सवाद चरचा करे जी ॥ सेवा करे दिन चहाय ॥ चतुर ॥ ९ ॥

विनीत वितक्षण गभीरता जी। देखी चिन्तवे ऋषिराय ॥ योग्य पात्र ऐसा नहीं मिले जी। देवूं इसी को पसाय ॥चतुर १०॥ संतुष्टी कहे राय को जी। हम जोगी तज्या कन्क नार ॥ तुम हो गुणी महाराजवी जी। क्या करे तुमपर उपकार ॥चतूर ११॥ दुर्लभ्य मिलणी लि जगेजी। तीन वस्तु मुझ पास ॥ ते अर्पूं हुं तुम भणीजी ॥ नाम गुण करुं प्रकाश ॥चतुर १२॥ पहिलो चूडामणी सूवटो जी। अष्टांग निमित को जाण। अतीत अनागत दाखवेजी। सकटे बचावे प्राण ॥चतूर १३॥ दूसरो अश्व रत्न गुस रहेजी। चिन्ते जिहा क्षिण मे पहोंचाय ॥ जल थले गमन सरीखो करेजी। स्वार ही अद्रष्ट रहाय ॥चतुर १४॥ तीसरी सुख शैय्या भलीजी। मालक पीछे आय ॥ वस्त्र भूषण खान पानादि जी। देवें जहां चित चहाय ॥चतुर १५॥ सयन कीयां इस ऊपरेजी। रोग विष थाक गमाय ॥ देव शैय्या सो सुख लहे जी। मीठि निद्रा आय ॥चतुर १६॥ यह तीहुं लेइ पधारीयेजी। सुखे निज राज के मांय ॥ तुम सज्जन समारता होसी जी। तस दुःख देवो गमाय ॥ चतुर १७॥ कर जोडी भणे नृपती जी। श्वामी आप पसाय ॥ मुज घर खामी कुछ नही जी। आपही रखो इण तांय ॥चतूर १८॥ अनुग्रह होय तो दीजीये जी अपूत्र को पूत्र दान ॥ लोक अपवाद निवारके जी। रखीये कुलको मान ॥चतूर १९॥ शकुन पेखी जोगी वदेजी।

। पुत्र को नहीं तुज जोग ॥ कुसुम मंत्री देवूं तुम भणी जी । होसी पुत्री मन्योग ॥चतुर २०॥ में पण वृद्ध हुवो अवे जी । यह तिहूं वस्तु उदार ॥ मरतां चडे को दुष्ट करेजी । करेंते किस्यो प्रकार ॥ चतुर २१ ॥ खुशी से देवूं ए तुज भणी जी । धर्मी पुण्यवन्त जाण ॥ यह देजो मुज पुत्री को जी । होसी तस सुख खाण ॥चतुर २२॥ शुक शकुन साधी कहेजी । सत्य वाणी भूनाथ ॥ सुखदाइ हम होस्या सहीजी । नृप पुत्री और जमात ॥ चतुर २३॥ हट मत करो नरेश्वरजी । हम छां तुम भाग्य मांय ॥ इम अग्रह से महीपती जी । तीनो लीया पसाय॥चतुर२४॥साता दीयां साता मिली जी । देखो प्रत्यक्ष दया फल ॥ ढाल पांचमी अमोलख कहेजी । करणी फळ न विफळ ॥चतुर २५ ❀॥दुहा—खुशी होइ रणधीर जी । प्रणम्या जोगी पाय ॥ श्वामी कृपा मुझ पर करी । पधारो पुर माय ॥१॥ ऋषि कहे वस्ती विषे । हमको नहीं सुहाय ॥ आनन्द में हम यहां रहें । तुम जावो पुर राय॥२॥ अग्रह कयों मान्यो नहीं । तब सुख अश्व और राय लुळी २ जोगी पग नमी । नयनाश्रुत कहे वाय ॥ ३ ॥ परपंच फासे हम फस्या । स्वामी सेवा अंतराय ॥ भाग्योदये फिर भेटस्यां । चले पुनः प्रणमी पाय ॥४॥ अश्वारुढ भूधव भया । पलंग भया तस पूठ । सन्मुख शुख आवैठीया । चले सहू संतुष्ट ॥५॥ ढाल ६ ठी॥ वेदर्भीस्यूं मन वस्यो ॥यह०॥ अ-

श्व वके गया पछे । भूप का सेवक लोक होलाल ॥ दोडी देखे चहु दीशी । नमिल्या उप
न्यो सोक होलाल ॥ चिंतीत मिल शुभ जोग से ॥आ० १॥ थाका भागा सहू आवीया
। सुणी सहुने यह वात हो लाल ॥ हाहा कार मच्यो शेहर मे । सहु नृप को भलो चहात
हो लाल ॥चिंतीत२॥केइ प्रभुको केइ कर्मको । दोष दे करे विलाप होलाल ॥ मानता लेवे
इष्ट समरके । हेवे शीघ्र नृप मिलाप हो लाल ॥चिंतीत३॥ सामंत पुरजन भेला हो । बैठा
वाहिर शभा माय हो लाल ॥ पासा आदि शकुन लेवे । जितने आश्चर्य थाय हो लाल ॥
चिंतीत ४॥ गगन से अचानक ऊतरे । पोपट ने नर राय हो लाल ॥ शभा मध्य ऊभा हू
वा । देखी सर्व विस्माय हो लाल ॥चिंतीण ५॥ कहां से किस्तरह आवीया । ए तोता बहु
रंगी कोण हो लाल ॥ इत्यादि विचार में । सहु लगे पेखते दोन हो ला० ॥चिं० ६॥ ऊ-
भा हो सत्कार दीया सहू । बैठा सिंहासन भूप हो लाल ॥ सुख पूछे सर्व हर्ष से । पूछे वी-
तक स्वरुप हो लाल ॥चिंतीत ७॥ नृपती थोंडा में सहू । दर्शायो वीतक हाल हो लाल ॥
जोगी सेवासे पामीयां । तीनो अमोलक माल हो लाल ॥चिं० ८॥ शभा सहु जय २ क
रे । पुण्य प्रतापी राजान हो लाल ॥ अल्प दुःखे महा सुख मीलया वीरत्न गुन खान हो
लाल ॥चि० ९ ॥ राजा सज्जन को संतोष के । आया राणी पास हो लाल ॥ प्रमुदित

वनीत प्रणमी । मधुरी करे अरदास हो लाल ॥चिं० १०॥ भला पधार्या सहिवा । हमा
रा उज्याथा होस हो लाल ॥ रवे अमंगल होवे अश्वसे । दर्शने हुवो संतोप हो लाल
॥चि० ११॥ रायजी वीती वारता । तीनो ही रत्न की केय हो लाल ॥ राणी कहे कि-
स्यो कीजीये । तनुज विना यह लेय हो लाल ॥चिं० १२॥ प्रिया पती कहे भाग्यविन
। कुलाधार किम थाय हो लाल ॥ कलंक निवारण कारणे । लाया हुं एक उपाय हो ला
ल ॥चिं० १३॥ हर्षी वदे प्राणेश जी । प्रकाशो तेह उपाय हो लाल ॥ रायजी पुष्प व-
तावियो । यह सूंघ्या धूया थाय हो लाल ॥चिं० १४॥ कहे राणी भले कन्यका । हु
वासे भागसी खोड हो ला० ॥ पूत्र करीतसे मानस्या । पूरसा मन का कोड हो ला०
॥चिं० १५॥ कुसुम लेइ नृप कर थकी । हर्षी सूंघ्यो धर प्रेम हो लाल ॥ देव जोग
गर्भ वती हूइ । कुल मे वरत्यो क्षेम हो लाल ॥चिं० १६॥ पुष्प माल पेखी स्वप्न में
। वीत्या शीव नेत्र मांस हो लाल ॥ देव पुष्प शैय्या सयन की । राणी मन हूइ आ-
स हो लाल ॥चिं० १७॥ देव शैय्या किम पामीये । इम जाणी हूइ उदास हो लाल ॥
चिंतातुर राणी देख के । राजा पूछे तास हो ॥ चिं० १८॥ हर्ष समय चिन्ता किसी । इच्छो
सो कहो काम हो ला० ॥ कमी कुल आपणें नहीं । कहो सो पूरुं हाम हो ला० ॥ चिं० १९ ॥

उप जी आसा राणी कही । कहे राय यह तो सहज वात हो लाल ॥ जागा आप्या पल्ग ते । प्रगट करी देखात हो लाल ॥चिं० २०॥ ते पर सूती रत्नावती । वहोत हुइ खुशाल हो लाल ॥ ऋषि अमोलख हर्ष की । कही यह छठ्ठी ढाल हो लाल ॥चि० २१❀॥ दुहा— सुख से पाले गर्भ को । दान धर्म करे हुलास ॥ आनन्द विनोद उत्सवे । वीत्या सवा न व मांस ॥१॥ शुभ लग्ने पुत्री हुइ । चन्द्र ज्यो प्रकाश ॥ दासी वधाइ दी राय को । वद्दार ण करी तास ॥२॥ जन्म उत्सव मंडावीयो । वंदीवान छोडाय ॥ अशुची टाल मोज करी । सह परिवार जीमाय ॥३॥सर्व समक्षे कुमरी को ॥ स्वप्न डोहरुा अनुसार ॥ नाम कुसुम श्री स्थापीयो । सज्जन हर्ष्या अपार ॥४॥ शुक्ल पक्ष शशी परे । वधे रुप गुण विस्तार ॥ कीर्ती पसरी मुल्क मे । कुसुम श्री गुणागार ॥५॥ ढाल ७ मी— मुख से बोले देख जसोदा ॥यह०॥ लावणी में ॥ वर्षुवर्ष माइ आइ वाइ । माइ वाप इस विचारी ॥ सिखाणे तांइ, गणिका बोलाइ । चतूर लज्जावन्ती नारी ॥ सर्व चोसठ कलाइ स्वल्प काले माइ । स्वल्प महेनते शीखीसारी ॥ राजा हर्षाइ, गुरुणी तांइ । धन वस्त्रे वहु सत्कारी ॥ स आनंद पाइ, विदाजो थाइ । गइ निज घर सुख से पोडी ॥ पूर्व पुण्य होवे जो पूरे । तो मिलती ऐसी जोडी ॥आं० १॥ फिर चित चहाइ, साध्वी पासाइ । शिखाइ धर्म करण रीती ॥ आव-

श्यक समर्था, शील गुण नरमाइ। पतिवृता आदि नीती ॥ धर्म जाण्याइ, कूपन्थ कदाइ। ते न जाइ शीले प्रीती ॥ सर्व को सुख दाइ। सत्यवंत थाइ। उज्वाले उभय कुल क्षिती ॥ सर्व कला में सदाइ। कुशल सा वाइ। बाल ख्याल करे घर कोडी ॥पूर्व २॥ हुइ योवन वन्ती। तन मोहन्ती। जे बाला ॥ अंग उपांगी दिस अनंगी। पूर्णांगी सावी शाला ॥ नागण वेणी। लम्बी झीणी। भृंग श्रेणिसा केश काला ॥ अर्ध शशी भाली। तेज कपाली। कम्बा ताणी भूंवाला ॥ कुरंगे नयणी लज्जा लेणी। तिक्षण खूणी तिलक चोडी ॥ पूर्व ॥३॥ शुक जैसी नाशा। भरी सुवासा। अरुणोष्टासा। पुष्प कैरणी ॥ दाडिम कणियां। दंत ज्यों मणियां। सतेज स्वच्छत रंग भरणी ॥ पुष्ट कैपोली। गुलावी गोरी। अैनन गोली चंद पूरणी ॥ कम्बू गिरवा। कंचू हिरवा। वट पुष्ट युत स्तनी ॥ मच्छ जैसे उंदर। कर लंब सुंदर। कंकण वर धर रत्न चूडी ॥पूर्व ३॥ कोमल करतल। अंगुली पातल रक्त नख अमल सिहलकी ॥ पुष्ट नितवी। केली स्थम्बी। निरुम जंघी जानूढंकी ॥ उतरती पिंडी कूर्म पगतली। अंगूली मिली रेखा अंकी ॥ सोवन वरणी पतली तरुणी। गोरा हरणी सा संकी ॥ इम नख शिख सारी। रति अनुहारी। शोहे भारी कौन करे होडी ॥ पूर्व ५॥ एक दिन तस मांइ। देखी वाइ। उपवय पाइ वर जोगी ॥ चिंतें राजा जी। काममें

१

१ हिरण

२ नाक

३ कान

४ गाल

५ मुख

६ शक

१

माजी। मूल्या याजी नहीं छोगी ॥ किम कर रहे घर में । लज्जा शर में । लोक धरे भरम
देखे भोगी ॥ सिणगार सजावूं । शभामें पठावूं । राजाने देखावूं । समयोगी ॥ पीठी ल-
गाइ । न्हवाइ धोवाइ । वेश सजाइ करी रुडी ॥पूर्व ६॥ अंबोडा सिर । तेल कुसुम भर
। विन्दी बोर केकत केवडा ॥ झूमर झल के नथ के हलके । मुखडो मलके टीकी जडा
॥ हार हांसली कसी कांचली । वेरखा वाजू बन्द कडा ॥ छत फूल वींटी । कडदोरो खींटी
। रिम झिम करे झांजर तोडा । घेर दार घाघरी झीणी साडी । हात फूल मुख पान की वी
डी ॥पूर्व ७॥ मुराल गति कर । सैया परिवार । आइ शभा मांहे कुंवारी । देख सकल ज
न । आश्चर्य पाये मन । चिंते उतरी कहां से सुरनारी । पुत्री जानी राय रन्मानी । कर
घर पासे वेसारी । देखी उपवय रुप भारित गये, चिन्ता में गर्क भये तेवारी । किन्को पर
णावूं । जोग मिलावूं । सुख रहे ज्यों सदा यह जोडी ॥पूर्व ८॥ बाल वृद्ध नर अंध का
णेवर । कुष्टादि रोग धर वलहीणो । मूर्ख वैरागी । लोभी अभागी ॥ क्रोधी कूरुपो दीनो ।
निरदया निरमोही पागल सूरोही । इत्यादिने योग्य नही ईनो । योग्य वर व्यावे । तो
सुख पावे । खुशी मे जावे राइ दिनो । इम विचारी कहे ते वारि । वर सोधावू सब काम
छोडी ॥पूर्व ९॥ प्रधान बोलाइ सला ले राइ । तब तिहा जोर करे देव । परदेशी वाण्यो

राय मन जाण्यो । मुजरो कर ऊमेरेवे ॥ नृराती पूछो कहो तुम कुगछो । तब ते विस्तारी बात केवे ॥ कंक शार्दुर श्वामी हरि केशरी नामी वहू। नृराती तेहने सेवे ॥ वीरसेण कुंवर वर । रूप यौवन भर । भागी शत्रु की खोडी ॥ पूर्व १०॥ उर्व कमाली । नयन विशाली । शीश अति काली । शुकनाशी ॥ लम्बी बाया डर ऊंचाया । पृष्ट सुत्रर्ण सिळा खासी ॥ मुख पूर्णचंदू । तेजस्वी सेन्दू । गौर वर्ग गोरि डर वासी ॥ भीमज्यो पाक्रमी । वुद्धि ब्रह्मी । निष्ट ववनी सदा हुळासी । उदार प्रगामी । इत्यादी श्वामी । गुण घगा किम कहूं जीभोडी ॥ पूर्व ११ ॥ त्रीखंड माही । नर ऐसा नाहीं । जो यासे कह सो साची ॥ सुग इस कुंवरी । कुसुमे भमरी । लोभाइ मन लियो जाचो ॥ हंसीनीचो जोइ महु खुशी होइ । जाण्यो वीरसग पर राची ॥ एक वार जोवाइ । देस्यूं परणाइ । कहे राजा यह नहीं काची ॥ वाइ लजाइ । मेहल में जाइ । रहवा लागी वीरपर गोडी ॥ पूर्व १२॥ जो जस ध्यावे । सो तस पावे । जो होवे दैवको संजोग ॥ यह ढाल सताबी रशिक वतावी । शृंगार रस को मिल्यो नोगो ॥ कू इच्छा धारे ते पाप ववारे । नर्क तिर्यंचे करे सोगो ॥ सती संत शोभागी कै गुण अनुरागी । सुगे गावे होवे धर्म जोगो ॥ अमोल वाणी गुणे वखाणी । धन्य ऐसा विषय फास दी तोडी ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ कुमरी

गंचा ५छे नृपती । सारद सचीव बुलाय ॥ कहे सज्ज होइ शेठ संग । कन्क शाल पुरजा
य ॥१॥ देखो केशरी राय का । वीरसेण कुमार ॥ जो होवे वाइ जोगा । तो कर जो वे
सवार ॥ २ ॥ तुम शाणा सहू जाण छो । अपणा घर व्यवहार ॥ योगा योग दे
ख जो सहू । शोक्षित सुख आचार ॥३॥ वयण ते सीश चडाय कर । जाण न योग्यजे
वात ॥ निर्णय कियो पूछी सहू । फिर उछित साज सजात ॥४॥ गर्गा महुरत चालीया
। शेठ सग प्रधान ॥ सुखे मुकाम करता सहू । आया कन्क शाळस्थान ॥५॥❀॥ ढाल
८ वी ॥ मोटी या जग मांहे मोहणी ॥यह०॥ अच्छे को अच्छा मिले । खोटे नर कोहो
खोटा मिले आय ॥ यो जग मे शुभा शुभ उदय । बहोत रंगी हो रीती बरताय ॥अच्छे॥
१॥ कन्क शाल पुर अवलोक के । शारद चंद हो आश्चर्य अति पाय ॥ क्या स्वर्ग टूट
टुकडा पडा । के देव कोइ हो रहे ग्राम वसाय ॥अच्छे॥२॥ मध्य बजारसे चल करी । ते
आया हो राज शभा मझार ॥ हर केशरी हेरी सारीखा । गुण रूप हो देख मोह्या अपार
॥अ०॥३॥ लुली मुजरो कीयो । राजाजी हो जेष्ट नर तस जाण ॥ सत्कारी नेडा ली-
या । वैठाया हो देइ सन्मान ॥अ०॥४॥ पूछे कहां से पधारीया । गाम ठाम काम हो क
हो जे मन मांय ॥ देखी नम्रता राय की । ते सचीवजी हो बोले हुलसाय ॥अ० ॥ ५॥

रत्नपुरी रण धीर पति । उनको हो में सेवक प्रधान ॥ तास राज्ञीं रत्नावति। तस पुत्री हो
कुसुम श्री गुणखान ॥अ०६॥ वरजोगी भइ रति समी । आपतनुज के हो धन्ना शाह सु
ख ॥ गुण सुण हुइ सो रागणी । सोही कार्यज हो आयो आप सन्मुख ॥अं०॥७॥ शे
ठजी से सब पूछीये । हम नीति हो ऋद्धि कंन्या गुन ॥ धन्ना कहे जोडी युक्त यह । शी
घ्र करीये हो इस रत्न के जतन ॥अ०॥८॥ नृप कहे पूछो कुमार ने । सो माने हो तो मे
री मने नाय ॥ मन्त्रीजी आये कुमर कने । रूप गुण देख हो अतीही हर्षाय॥अ०॥९॥
यह कंथ योग्य है वाइ के । दम्पतिने हो सज्जन पाय सुख ॥ हर्ष हुलसित नमन कीया।
कुमरजी हो प्रेक्षी तस सन्मुख॥अ०॥१०॥जेष्ट नर तस जाणीया । सन्मानी हो निज पास बैठाय
॥आगण कारण पूछतां । प्रधानजी हो कुमरी छबी देखाय ॥अ०॥११॥शीघ्र उठाइ जस कुमरजी
। प्रेक्षे हो एकान्त स्थान जाय॥यह है नारीके सुरी।राचा तन मन हो परणन करी चहाय॥अ० १२
॥बोलाये सचीव को।शरमी पूछेहो कहो यस उत्पत॥मन्त्री यथा तथा दाखवी।यह तन मने हो
आपहीने इछत ॥अ०॥१३॥ मोटो कुमर तणा । शुभ महूते हो कीनो सगपण ॥ लग्न महूर्त न
की करी । वीनंती करी हो जान सज्ज लावण ॥अ०॥१४॥ आया फिरी रतन पुरी । सब
वीतक हो कहा नृपने हेवाल ॥ छब्बी देखाइ कुमर की । गुण सुण जो हो भूप हुवा खु

लग्न महोत्सव हो अति जबर मन्डाय ॥
शाल ॥अ०॥१५॥ कुसुम श्री को दी छवी । लग्न महोत्सव हो अति जबर मन्डाय ॥अ०॥१६॥ रत्न पुरी च
वहांभी हरि केशर राजवी । वहू आडम्बर हो जान सज्ज कराय ॥अ०॥१६॥ रत्न पुरी च उतारेहो सुख
ल आवीये । सन्मुख आये हो रण धीर राजान ॥ वधाइ लेगये नगर मे । उतारेहो सुख
करि मकान ॥अ०॥१७॥ गयवरा रूढ वर रायजी । व्यावन को हो चले दुले राय ॥ गाय
न और बा जित्र के । नादे रह्यो हो गगन गरणाय ॥अ०॥१८॥ गोखालम्बी पेखे गोरडी ।
मार्ग में हो जम्या नरका ठाट ॥ गुण रूप लक्षी कूमरके । कहे जोडी हो योगी पुण्य गह गा
ट ॥अ०॥१९॥ महेल झरोके सासुजी । कूसमश्री हो सहेल्या परिवार ॥ वीरसेण वर निरखके
। सब पावे हो दिल हर्ष अपार॥अ०॥२०॥तोरण वदी आये चौरि में । कर मेल्या हो दम्पति
हुल्लास ॥ ढाल आठ अमोलख भणी । आगे स्वार्थ हो गत होवे प्रकाश ॥अ०॥२१॥ ❀ ॥
दोहा॥ पडदान्तर से कन्यका । वार २ वर जोय ॥ जोडी इच्छित देख के । हर्षित हियडे होय
॥१॥ काम रति सम दम्पती । निरखे सर्व सज्जन ॥ परसंस्ये आपस मे । धन्य २ कूमरी पु-
ण्य ॥२॥ जोगी जोडी जो मिले । तो धर्म अर्थ रु काम ॥ साधन सुख से कर सके । दोनो
भव ले आराम ॥३॥ यों जाणी सुखार्थीयों । मन मेलो कू योग्य॥ तो यशः सुख जग पा
वोगे । सन्मति संतती निरोग्य ॥४॥ चोर दृष्टीसे वीरजी । प्रेक्षी त्रिया गुण धाम ॥ इच्छि

त अर्धा गना मिली । पाये वहुत आराम ॥५॥❀॥ढाल ९मी॥ धन्ना मुनि धन मान व
पायो ॥ आसा वरीराग ॥ देखो जी माइ जगमां स्वार्थ सगाइ । सव निज २ मतलव च-
हाइ ॥ आंकडी ॥ काम राग सव राग से महावली । प्रेमला पति से मोहवाइ ॥ आप
जाती सारले जावै घरका । कर मावित्र से जुदाई ॥देखो॥१॥ हो अनुरागीणी कहे समक्ष
से । चित्त में देना प्राणनाथो ॥ मुझ तात घर तीन वस्तु आमोलक । तस गुण कहूं गृहो
साथां ॥देखो॥२॥ 'चूडामणी' नामे शुक सुरंगी । अष्टांग निमित का जाणो ॥ भूत भवि-
ष्य प्रकाश शकुन फल संकटे वचाव प्राणो ॥दे०॥३॥ दूसरा अश्व 'मनोवेग' नामे । चि-
न्तित स्थान पहोंचावे ॥ जल थल गगन गति कर जावे । वक्त पर काम सो अवे ॥दे०॥
४॥ तीसरी सैय्या चिन्तामणी जाणी । वस्त्र भूषण आहार पाणी ॥ चहावे तहां ते अर्पे
तत्क्षीण । चिन्ता सर्व मिटाणी ॥दे०॥५॥ शयन किये उस में सर्व अंग के । रोग क्लेश
विरलावे ॥ स्थावर जंगम विष पणा से । संग रहे गुप्त स्वभावे ॥वे०॥६॥ यह तीनों व-
स्तू त्रिजग दुर्लभ । मुझ तात पास है श्वामी ॥ जो यह लगजावे अपणे हाथ तो । फिर
रहे कुछ न खामी॥दे०॥७॥हस्त मोचन वक्त येही जाच जो । मत होना अन्य के गरजी
॥ अती अग्रहसे अरजी म भूल जो । आगे आपकी मरजी ॥दे०॥८॥ यों समझी वीर

आश्चर्य पाय । अहो त्रिया को स्नेहो ॥ मिलतेही घर का सार बताया । क्या करेगी आ-
येगेह हो ॥दे०॥९॥ यह तीनों रत्नों को न चहावै । महा पुण्ये कर आवे ॥ यों चिन्ति
याचन कियो निश्चय । जब लग्न विधि निपटावै ॥दे०॥१०॥ हस्त मूकाते रण धीर जंपे ।
जो चाहिये सो लीजो ॥ शरम न कीजे घर यह तुमारा । मन में होवे सो कीजें ॥दे०॥११
॥ स्मरी वयण वीरसेण पयंपे । शुक सैय्या अश्व दीजे ॥ तीनों रत्नकी चहा अति महारे ।
और न कांइ चहीजे ॥दे०॥१२॥ खेदाश्चर्य सुण नृपति पामें । मन में करे विचारो ॥ यह
मेरे घरका गुह्य क्या जाने । कुमरीने किया उच्चारो ॥दे०॥१३॥ मेरे तो देना था इनी को
। विन मांगेही देता ॥ परन्तु हा हा स्वार्थ सगाइ । आश्चर्य मोटा एतो ॥दे०॥१४॥ तनु-
जा काजे जोगी सेवे । जीव जों यत्ने पाली ॥ योग्य वर देखी परणाइ । यह तो सार
ले चाली ॥दे०॥१५॥ मेजानता यह पुत्री म्हारी । यह हुइ प्रीतम प्यारी ॥ सर्व राजका
सार बताया । फिकर न कीनी म्हारी ॥दे०॥१६॥ धी धी धी ज्ञानी कहे संसार को । सो
मे प्रत्यक्ष देखा ॥ धी धी मुझको तनुज के कामे । नर भव किया अलेखा ॥दे०॥१७॥
इस कामें कु गुरू देव माने । हिंसादि पाप करिये ॥ उसके फल यहां प्रत्यक्ष देखे । आ-
गे केरी अनुसरीये ॥दे०॥१८॥ होनहार सो तो होगया है । पस्ताये क्या होवै ॥ बाकी र

ही है उसेही सुधारुं । तो भी आत्म सुख जोवे ॥दे॥१९॥ परन्तु अभीवेराग्य कथा तो ।
करनी युक्ति नाहीं ॥ प्रारंभा काम को पार करना । आगे आत्म सुधारांइ ॥देखो॥२०॥
रङ्ग में भङ्ग होने के डर से । वैराग्य भाव को दाबाइ ॥ कहेतीनों रत्नादिये मेने तुमको ॥
और कहो क्या चहाई ॥देखो॥२१॥ दम्पाति को रङ्ग मन्डप पहेंचाय । सज्जन सब हर्षाये
॥ भोजन भाक्ति युक्ति करीसहू । सवही जन सुखपाये ॥देखो॥२२। उदारता परशंस्ये नृ
पतकी । प्राण प्यारी वस्तुदीनी ॥ अमोल कहे धन्य रागे वैरागे । तानेही मोक्ष दीग की
नी ॥देखो॥२३॥ दोहा॥ निजराणी को रायजी । कही सहूमनकी बात ॥ हम दी-
क्षा अवलेयगे ।कहो तुम मन क्या चहात ॥१॥ राणी कहे मुझे आपाविन । सद सूना संसा
र ॥ में भी आर्जिका होवूंगी । जो आप बनो अणगार ॥२॥ प्राते पुती जमात को ।सज्ज
न स्नेही परिवार ॥ बोलाइ कहे रायजी । सुनिये मेरा विचार ॥३॥ धारा सो काम सिद्ध हु
वा । वीरसेण राज जोग ॥ हम सुधारे आत्म निज । आवना इच्छित योग ॥४॥ मना कि
या मानूं नाहीं । सो वात की एक वात॥ यों सुण सब चुंपके हुवे । गाम में हुवे विख्यात
॥५॥ढाल १० वी॥ पणी हारिकी देशीमें ॥ हरी केशरी नृप यों सुणी ॥ सुणो रायारे ॥आ-
गगगभीर पास ॥ अहो सुणो रायारे ॥ कहे तुमतो चातुर चणे ॥ सुणो ॥ जरा ऊंडा क-

रांये विमास ॥अहो॥१॥ रङ्ग में भङ्ग न कीजीये सुणो ॥ यह तो वजे वालख्याल ॥अहो।
नृंद्वये प्राप्ती भये ॥सुणो॥ लेना संयम उजमाल ॥अहो॥२॥ रणधीर कहे सुणो राजजी
सुणो॥ चातुरहो वोलो किसपेर ॥अहो॥पाव पल्या का भरोसा नही ॥सुणो॥ कैसे करुं में दे
र ॥अहो॥३॥ वाल ख्याल है जगत् का ॥सुणो॥ पुण्य खुटे विरलाय ॥अहो॥ ज्ञानी उनों-
कोही जानीये ॥सुणो॥ अवसर गा छिटकाय ॥अहो॥४॥ तुमभी चेतो इस अवसरे॥सुणो॥
वोतो छोडी वात ॥अहो॥ मेरे कोही फसावते ॥सुणो॥ यह क्या योग्य कहात ॥अहो॥५
हरिकेशर वेरागी से भणे ॥सुणो॥ धन्य २ तुम अवतार ॥अहो॥ स शक्ति संयमवरो॥सुणो॥
हम लुब्धे भोग मझार ॥अहो॥६॥ यों कह निज उतारे गयां ॥सुणो॥ कुसुमश्री आइ दोड
॥अहो॥ मात तात के पगमें नमी ॥सुणो॥ रुदन्तिकहे करजोड ॥अहो॥७॥ क्यों छोडकर
जावो तातजी ॥सुणो॥ माता मुझ किसका आधार ॥अहो॥ सासरे दुःख होवे नारीको ॥सु-
॥सुणो॥ पीयरीये कर संभार ॥अहो॥८॥ विश्वासी नृपराणी वदे ॥सुणो॥ तेरेकमी कुछना
य ॥अहो॥ पुण्यात्म प्रीतममिले ॥सुणो॥ और सव सामग्री सहाय ॥अहो॥९॥ यह राजभी
देवूं तुझ भणी ॥सुणो॥ रहो तुम इच्छा चार ॥अहो॥ हमसुधारे निज आतमा ॥सुणो॥ हटक
रे नहीं निकलेसार ॥अहो॥१०॥ यों समझाइ पुत्री भणी ॥सुणो॥ तव मन्त्रि परजा आ

य ॥अहो॥ प्रणमी ऊने नृप सन्मुखे ॥सुणो॥ नृपसन्तोषे सर्व तांय ॥अहो॥११॥ वीरसेण जी राज्य जोगहे ॥सुणो॥ सर्व भणी सुख कार ॥अहो॥ योग्य सुख सबको अर्पगे ॥सुणो॥ यों सब को समझाय ॥अहो॥१२॥ उत्सव कर वीरसेण को ॥सुणो॥ राज तखत बैठाय ॥अहो॥ नीति रीति दरसायदी ॥सुणो॥ दीन दुहाई फिराय ॥अहो॥१३॥ तब तहां पुण्योदय करी ॥ सुणो॥ धर्मोदय ऋषिराय ॥अहो॥ पधारे उतरे बाग में ॥सुणो॥ बहुत साधूसे सोभाय ॥अहो॥१४॥ राजा आदि सुण हर्षीया ॥सुणो॥ संगले सर्व परिवार॥अहो॥ आये वन्दे मुनिराजको ॥सुणो॥ सुणने धर्म उचार ॥अहो॥१५॥ मुनिवर देवे देशना ॥सुणो॥ अनित्य अशुचि शरीर ॥अहो॥ अशाश्वति सर्व सम्पदा ॥सुणो॥ धर्म करो शीघ्र वीर ॥अहो॥१६॥ इत्यादि बोध श्रवण करी ॥सुणो॥ परिषद सर्व हर्षाय ॥अहो॥ यथा शक्ति व्रत आदरी ॥सुणो॥ निज निज स्थाने जाय ॥अहो॥१७॥ रणधीरवन्दि मुनिसे कहे ॥सुणो॥ मे लेवूंगा संमय भार ॥अहो॥ मुनिवर कहे शीघ्रकीजीये ॥सुणो॥ धर्म में ढील नी वार ॥अहो॥१८॥ वंदि आये राजमे ॥सुणो॥ दीक्षा ओत्सव मंडाय ॥अहो॥ राजा राणी सव होय कर ॥सुणो॥ आडम्बर बाग मे आय ॥अहो॥१९॥ लोच करी वेष धारियो ॥सुणो॥ साधु सतीका श्रेयकार ॥अहो॥ लीदीक्षा शुभजोग से॥सुणो॥ वंदीगयो परिवार

॥अहो॥२०॥ साधु साधुमे सती सती मं ॥सुणो॥ रहेशुद्ध पाले आचार ॥अहो॥ असेवना
रु ग्रहणा शिक्षा ॥सुणो॥ शीखे विनय भक्तिधार ॥अहो॥२१॥❀॥ तप जप करणी समा
चरे ॥सुणो॥ ज्ञान ध्यान आत्म रमाय ॥अहो॥ अन्ते आलोइ अणसण करी ॥सुणो॥ स्व
र्ग विराजे जाय ॥अहो॥२२॥ भवकर मोक्षसिधायेगे ॥सुणो॥ यह हुइ दशवी ढाल ॥अ
हो॥ अमोल कहे सुज्ञ सांभलो ॥अहो॥ करणी करोउजमाल ॥अहो ॥२३॥❀॥ दोहा॥
फिर हरीकेशर रायजी । राज संभालण काज ॥ कुमरको तहां छोडकर । चले लेइ निजसा
ज ॥१॥ सीम तक पहोचान को । गये वीरसेण कुमार ॥ पग प्रणमे फिरतात के । नरमी
करे उचार ॥२॥ भूलजो मत अनुचर को । भेटूंगा अवसर पाय ॥ खमजो अविनय जो
हुवा । आपकाजानो सदाय ॥३॥ तात तनुज उरचम्य के । सुखी रहो दे आसीस ॥ ध
र्म व्यवहार सुधारजो । पूरजो सज्जन जगीस ॥४॥ उभय चले भिन्न २ दिशा । आये नि
ज २ स्थान ॥ सुखे २ काला अतिक्रमें । संचे पुण्य धर्म दान ॥५॥❀॥ ढाल॥११वी॥ ध
नरारे लोभी वाणीया ॥यह॥ वीरसेण नृप सोभागीया । सुखसे पाले राजोरे ॥ स्वजन पु-
र जन मन झालवै । साधे आत्म को काजोरे ॥वीर॥१॥ विद्यालय ओपधालय । अनाथा
लय स्थापेरे । दानशाल धर्मशाल करा योग्य वस्तु सदा आपेरे ॥वीर॥२॥ तोल माप तो

वदावीये । हांसलदंड घटायेजी ॥ लायकी बढाइ कामदारोंकी । यों सब वसमें आयेजी
॥वी॥३॥ सब परसंस्ये वीरको । नृपति अच्छे पायेजी ॥ दुःख गमाया जगत् का । चिरं
जीवोजी ऐसे रायाजी ॥वीर॥४॥ कुसुमासी पति रंजणी । शील लज्जा बुद्धिवन्तिजी ।
नमण खमण गुणगण करी ॥ सुख सबको देवन्तिजी ॥वीर॥५॥ आप भला तो जग भ-
ला । गुणवन्त को गुणवन्त पावेजी ॥ पुण्य जोग जग जीवडा ॥ अचिन्त ऋद्धिपावेजी
॥वीर॥६॥ एकदा करे विचारणा । वर्ष बहूत वीत्याइजी ॥ भेटूं मावित्र मित्रको । शीघ्र क
न्क शाल जाइजी ॥वीर॥७॥ कुसुमश्री को पूछीया । हर्षीकरे सा उचारेजी ॥ मुझ मन-
में यह उमंग अति । वास बतावो तुमारेजी ॥वीर॥८॥ महामंत्री को बोलायके । राज का
ज संभलायेजी ॥ हम जावे सज्जन मिलण को । हांश्यारी से रहजो सदायेजी ॥वीर॥९॥
सिरांजली कर सोवदें । सुखे पधारो श्वामीजी ॥ फिकरन करिये गाछली । नहींसी कोइ खा
मीजी॥वीर॥१०॥ सेनापति को बोलायके । कहे यहां रखो फोज आधीजी । आधी हम सं
ग चालिये । न होवे कोइ उपाधीजी ॥वीर॥११॥ राजा राणी सज हुवा । सुखासन वाहन
वैसीजी ॥ सवपरिवारे पगवारे । चाले हर्ष विशेसीजी ॥वीर॥१२॥ मध्य वजार हो संचरे ।
प्रजा पहोचावें चालीजी ॥ हदलग आ नमे नृपको । कहे वेगा लीजो संभालीजो ॥वीर।

॥१३॥ परजा जन पीछे फीरे । नृपगमन आगे कीधाजी ॥ एक योजन के अन्तरे । पडा-
व जाकर दीधाजी ॥वीर॥१४॥ चिन्ते वीरसेना सगे । दिनलग जाय घणेरारे । मनोवेग अ
श्वमेरेकने । फिर क्यो करना देरारे ॥वीर॥१५॥ सेना पतिको बुला कहे । महतो जावेंगे आ
गेरे । तुम सुखे २ पीछे आइये । हम मिलेगे निज जागेरे ॥वीर॥१६॥ वचन प्रमाण उसने
कीया । वीरसेण अश्वसयायारे ॥ दोनों आरुढ हुवे । वीरसे वचन बोलायारे ॥वीर॥
॥१७॥ होणहार के जोगसे । कन्कशाल नाम भूलेरे ॥ कुसुम श्रीमनमे रमे । कुसुमपुरवो
ले प्रतिकूलेरे ॥वीर॥१८॥ मोहलेहर से जो निपजे । सो देखो भव्य भावेरे ॥ ततक्षीण हय ग
गने चला । वायुवेग दरशावेरे ॥वीर॥१९॥ आगे अकित कुसुमश्री । तोतोतस खोले मा
हीरे ॥ शय्या गुप्त आती पीछेसे । जग पेखंतासो जाइरे ॥वीर॥२०॥ थोडीही देरमे वीर-
जी । कुसुमपुरी वार आवेजी । हणणा के तुरी ऊभा रहा । अमोल ढाछ ग्यारे थावेजी ।वी
र॥२१॥❀॥ हरिगीत च्छन्द ॥ प्रथम खन्ड अखन्ड रङ्ग पुण्य फल सङ्ग कहा । वीरसेण कु
सुमश्री का संजोग पुण्य मेला रहा ॥ शृंगार और वैराग्य रस चख श्रोताको मन गेहगहा
॥ कहे अमोल कोतक कर्मगत ॥ अगे सुणीये यथा जहा ॥१॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदा के

वाल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोल ऋषिजी महाराज रचित वीरसेण
कुसुम श्री चरित्रका
पुण्य प्रवन्ध नामे प्रथम खण्ड समाप्तम्

—❀—❀—❀—❀—❀—

॥दोहा॥ विश्वसिरे विश्वेश्वरु । स्वरुपे सिद्ध अनन्त ॥ द्वितीये खन्डा रंभकरत । प्रणमुं वार अत्यन्त॥१॥ प्रभु शुभा शुभकर्म से। छूट भये अवीकार॥ जगजन्तु फसे कर्म में । दुःख सुख सहे वारम्वारा ॥२॥ सुख वल्लभ सवजीवको । सो प्रभुस्मरण से होय ॥ यों जाणके सुख अर्थीयों । प्रभु मत विसरे कोय ॥३॥ उद्योत ढिग अंधन्कारहे। त्यों सुख दुःख का मेल । वीरसेण कुसुमश्री । मिल देखा यह खेल ॥४॥ कर्म ग्रन्थकी वात को । केवली कथीस के नाय ॥ पण किंचित वरणन् करुं। सुणना सव चित्तलाय ॥५॥ उस अवसर वीरसेण नृप । देखेदृष्टि प्रसार ॥ वनलागे विहामणा । नर पशुविन शुन्य कार ॥६॥ बृक्ष अच्छा दित वेलीसे । मार्ग छाया कंटघास ॥ स्थान २ हड्डी ढग लगे । सव खाली पडे घांस ॥७॥ दूसरे श्रवण मे पडे । रौद्र पशुकी पोकार ॥ विस्मय पाये चित अति । अहो यह क्या प्रकार ॥८॥ कहां आया अश्वमुझ लइ । क्या आगे होन हार ॥ दिगमूढ शून्य चित्त भये ।स

चन सद्‌विचार ॥९॥❀॥ ढाल १ ली॥ रंगीला सूडा ॥ यह राग ॥ वीरसेण चिन्ते चित्त माहे । यह कन्क शाल भूमी नाहै । देव तुंरग कैसे भूलौहैरे ॥ रंगीला राया ॥१॥ चिन्ता समुद्रके माये । चित्त गोता रहा हे लगाय ।दिगमूढज्यो सुच न उपायरे ॥रंगी॥२॥ सुक पक्षी देख यहहाल । श्वामी चित्त करने वहाल । सन्मुख आया तत्कालैरि॥रंगी॥३॥ कहे हम सम सेवक श्वामी । तोहे आपके कैसे खामी । फरमावो जो मन हामी हो ॥रंगी॥४॥ तव वीरं कहे सुणोभाइ । मुझ निश्चय न कुछ थाइ । अपन उडआये किसजाइ हो ॥रंगीलासूडा॥५॥ कीर कहे अहो राया । जोगाम नाम आप फरमाया । तहांही अश्व यह लायारे॥ रंगीलाराय ॥६॥ रायकहे कन्कशाल । नहीं नगर का यह थाल । यह दिखे साक्षात महा कालरे ।रंगी॥७॥ तोता कहेयहकुसुमपुरी । जो आप मुलेऊचरी ।अब क्यों जातेहो फीरीरे ॥रगीलाराया॥८॥ यों सुणते वीर शरमाये ।,मूल राणी का नाम मुह आये । तोताभी तव मुस्कायेरे ॥रं० रा०॥९॥ श्वामी हम वाइ गुणधामी । सदा आप चित्तकी विश्रामी ॥ सोही वोला यावक्त नामिहो ॥ रं० रा०॥१०॥ नृपकहे सचभाई । यह नगर जो नाम कहवाइ । तव कुसुमश्री मुलकाइरे ॥ रं० रा०॥११॥ ऐसा प्रेम रखना सदाइ । तुमपे वारु प्राण ने तांइ। अव आगे करणा कांइहो ॥ रं० रा०॥१२॥ सुक कहे कन्कशाल चलीये । रायकहे भूखे मो-

जन से मिलीये । राणीकहे शय्यासे आस फलीयेहो ॥ रं० रा०॥१३॥ तव पिलंग को प्रकट कीना । करिपूजा कहे देवो चीना । तुष्ट शय्या देव इष्ट तस दीना हो ॥ रं०॥१४॥ विछा यत वाजोट पाट । सुवर्णथाल रत्नकें वाट । रत्न जडित झारि मल मलाटेर ॥ रं० रा०॥१५ सन्मुख दम्पति विराजे । वीचमें भोजनीक सब साज । तव भोजन विविध प्रकट याजरे ॥रं० रा०॥१६॥ लड्डुश्रीकेसरीया । मोतीचूर चूरमा पचवरिया । खूब मेवा मशाला भरिया रे ॥ रं० रा०॥१७॥ घेवर कलाकन्द ताजा । पेडा कलम पेठा खाजा । वडा पकोडि खरिसें व साजरे ॥ रं० रा०॥१८॥ हलवा लापसि कसार । फुलका पुडि लुची पूवासार । तैसे अ-थगा केइप्रकाररे ॥ रं० रा०॥१९॥ झोलकी फरकी तरकारि । घृत मशाले वघारी धूंगारी । वासुंदी राइतो श्रेयकरिरे ॥ रं० रा॥२०॥ मेवा खीचडी दाल भात । सुगन्धी घृतरेले वहात । पापड गोलीयों केइ भांतेर ॥रं०॥२१॥ सब शैय्या से प्रगटावे । कुसुमश्री पुरसती जावे । वहूत मनवार कर जीमावेरे रं०॥२२॥ थोडे २ भोगव त्रसीआवे । शीतोदक भोगव शुद्ध थावे ॥ जल अरोगी सुख मनावेरे ॥ रं०॥२३॥ तव थाल कटोर विरलाइ । मुखवास रकेबी आइ । पान फोफल चूरण खवाइरे ॥ रं०॥२४॥ सोभी चाखे यथा इच्छाइ । पाचन डकार [illegible] । तव शयनकी इच्छाथाइ हो ॥ रं०॥२५॥ [illegible] तोशक त

कीये ऊपर जालीवारो । तहां वेठे दम्पति चेन चारोरे ॥ शं॥२६॥ यह देवनेभी सब वातां । विस्तारे ग्रन्थ वडजाता । ताते संक्षेपे चेतातारे ॥ र०॥२७॥ द्वितीय खन्ड पहली ढाले । पुण्यफल प्रत्यक्ष निहालो । कहे अमोल सबो उजमालोर ॥ रंगीलाराया ॥२८॥❀॥दोहा॥ तोता को खानेदिये । मेवा पिस्ता वादाम ॥ फल पुष्प बहू भॉतके । सोभी पाया आराम ॥१॥ अश्वकोभी तव अर्पिये । उत्तम दाणा घास ॥ उदकपी तृप्तहुवा । पायाचित्त हुलास ॥२॥ दम्पति वैठे सेजपे । करते बात वीनोद ॥ जंगल में मगल हुवा। माने मन प्रमोद ॥३॥ तोता रेहतरु डालपर । करे रागणी ललकार ॥ समयोचित भापकरी । रींजावे निज शिरकार ॥४॥ साक्षात जाने स्वर्गमे । वैठ वीरसेण जाय ॥ तासहृदय की खुशी । को सके मुख वरणाय ॥५॥❀॥ ढाल २ री॥ प्रभू जगत् पति तुम छोजी ॥यह०॥ कौतुम कथा यह भारी । चित्त स्थिर कर सुणो नरनारी ॥टेर॥ सर्व सुस्त हुवे उस वारो । कान शब्द पडा भयकारो । वीर डर करऊभे तत्कारो । देखो चहुदिशा दृष्टि प्रसारी ॥चित्त॥१॥ कहे तोता मत घबरावो । पूछे नृपति क्या यह डावो । कीर कहे कुसुमपुर इस ठावो ।सो उजाड हे इस वारी । चित्त॥२॥ उसमे पशु आकर भराये । सियाल चिते सिंह वनराये । सबमिलकर शोरमचाये । नृप देखने करी इच्छारी ॥चित्त॥३॥ सुक कहे निजनगर पधारो । यह

देखन में नहीं सारो । रखे विघन होवे कोई न्यारो । मुझे शङ्का पडेहै इस वारी॥चित्त॥४॥
कहे मूरत इस वन मांय । कौन विघन करन को आय । अपन भी कमी कुछ नाय ।
सुन शुक रहा मौन धारी ॥चित्त॥५॥ मनोवेग अश्वरूढ थाइ । सव साथ में लीनी सज्झा
इ । नगर सन्मुख चले उमंगाइ । हो तव जैसी मति होवे जहारी ॥चित॥६॥ ज्यों ज्यो
पुर पास यह जावे । त्यों क्रूर शब्द अधिक सुनावे । तव जरा डर मन में लावे । अन्दर
जाने हिम्मत हारी ॥चित्त॥७॥ तव ग्राम द्वारके पासे । एक मन्दिर दिव्य प्रकाशे । शि-
खर गगनालम्बी भासे । रवी कीरण सारहा मठ कारी ॥चित्त॥८॥ अश्व खडा किया
उस वारे । तीनो प्रवेशे देवल मझारे । चित्र विचित्र भीती निहारे । सुवर्ण जाय रत्न जडी
सारि ॥चित्त॥९॥ स्त्री मूर्ती मणी रत्नारी । देख जानी देवी ग्राम रखवारी । पूजा सामग्री
वहां सारी । दम्पाति गये देख अचंभारी ॥चित्त॥१०॥ शुक से पूछे तव राय । ऐसी रक्षक
नगर शुन्य थाय ॥ यह आश्चर्य मुझको आय । तव राघु ज्ञान वले ऊचारी ॥चित्त॥११॥
इस कुसुमपुर का सुर राजा । महा मिथ्यात्वी करत अकाजा । गया सीकार खेलने का-
जा । एक मुनिवर वन में देखारी ॥चित्त॥१२॥ तपोधनी ध्यान मझारो । तस पूछे नृप उ
सवारो । कोइ देवी तुम ने सीकारो । मुनि मौन रहे तव धारी ॥चित्त॥१३॥ असरत्त हो

। मुनि धर्म शुक्ल ध्यान ध्यावे । अतिकोपा तव राय बोलावे । नही बोले चपेटा लगावे । मुनी तन माला से भेदे री । चलनी जे अहंकारी ॥चित्त॥१४॥ कहेतूही सीकार है मेरी । मुनी तन माला से भेदेरी । चलनी जे मे छिद्रकियेरी । छूटीरक्त धार पिचकारी ॥चित्त॥१५॥ मुनिनरक की वेदना संभारे । तैसी वेदना नही है यारे । तेसी भोगवी अनन्ती वारे । यह निर्जरा करे अपारी ॥चित्त॥१६॥ तेने पाप का सञ्चय कीना । सूरनृप तस फल यह दीना । मेटे दुःख तेरे खोटी गातिना । यह तो मेरा महा उपगारी ॥चित्त॥१७॥ यों उज्वल भावना भाते । घनधातिक कर्म खपाते । मुनिकेवल ज्ञान तव पाते । अन्तगडहो मोक्ष पधारी ॥चित्त॥१८॥ निर्वाण महोत्सव के तांई । देवोंकी छत्त गगनमे छाइ । देव दुंदमी इन सुनगाइ । यह देवीगइ तव तहां री ॥चित्त१९॥ अकाले मुनिमरण देखा । जाना भूप गुन्हेगार विशेखा । विनगुन्हे अनर्थ यह लेखा । गइ अतिको प माही भरारी ॥चि. २०॥ महा विकराल रुप बनाई । कोपी किलकारी लगाइ । तासेनगरी सब धरराइ । जाना पापसे देवरुठारी ॥चि. २१॥ सब जीव बचाने भागे । छोडके धन पुत्री नारी जागे । कितने दके कितने नागे । मरण भय सबसे भारी ॥चि २२॥ कितनेक मरेधस्काई । बहुत मुरदे पडे उनकाइ । सुरनृप यह देख घव राइ करी भगनेकी तव इच्छारी ॥चि. २३॥ मेसुरीतस शिखा को सहाइ । चकीकी तरह फिराइ । क्यों साधु सताये अन्याइ । दिया खड्गसे सिरउडारी ॥चित

।।२४।। मर कुगति में सोसिधाया। तबसे उजड पुराया। यों पाप के फल बताया । यह देवी हे न्याय कारी ।।चित।।२५।। मुझ निमित मे यों भासे । यह देवी फिर नगर वसासे । आपको राजा यहां थापासे । यह सत्य है रखना धारी ।।चित्त।।२६।। सुण वीरसेण विस्माया । पाप के फल से डर पाया। ढाल दूसरी अमोल सुणाया । करो धर्म सदा सुख कारी ।।चित्त।।२७।।❀।।दोहा।। यों बातोंकी विनोद में। दिन कर्ता अस्तथाय ।।पशु प्रकटे पक्षी छिपे । अन्धकार जग छाय ।।१।। देवालायसे अन्तरे। स्वच्छ सुखद स्थल जान ।। वीरसेण परिवार युत । रहे आकर उसस्थान ।।२।। शकुन अनुसारे शुक कहे । सुणो श्वामी एकवात ।। आज निशी अपने विषे। होवेगा कोइ उत्पात ।।३।। इसलिये होंश्यारी से । पूरे करों च्यहू प्रेहर ।। नृप कहे सरस आहार से । आती प्रमाद की लेहर ।।४।। शुक कहे पहिले अपही । करोदो जामे विश्राम ।। में जागी पहरो देवुं । फिर आपरक्ष जो श्वाम ।।५।। जागते ऊपर ताकता । आ नहीं पडे कदाय ।। एक रातकी क्या कथा। सहज देवों विलाय ।।६।। धोका तो मुझ मन अति । पण प्रभू करेंगे खेर ।। जो इस शंकट से बचे । तो फिर नही फिकेर ।।७।।❀।।ढाल ३ री।। विछीया की देशीमें ।। हां रे लाला ऐसे वचन शुक के सुनी । वीरजीके आये दायरे लाला ।। भलां माइ ऐसे कीजीये । दम्पति सूते सुख

मांयरेलाला ॥१॥ कर्मों की कथा सुण चित्तधरो। होनहार सो होहायर लाला ॥ बन्ध उदय
गत भोगवे । तस टाली सके नहीं कोयरे लाला ॥कर्मों॥२॥ वरिसेण निद्रागत हुवो । तो
ता रखवाली कराय रे० ॥ छल छिद्र होने लगे । पण पोपट नाही ठगायरे० ॥कर्मों॥३॥
अरधी सरवरी अति क्रमी । वीरसेण हुवे सावधान रे० ॥ चतुर मन चिन्ता वसे । सोही
दी हुइपाले जबान रे० ॥कर्मों॥४॥ सूडा कहे अहो नृपति । आप सोवो सुखमांय रे०॥
रक्षक मुझको रहन दो । रखे जासो आप ठगाय रे० ॥को॥५॥ वीर कहेरे भोलीया । मु-
झ पशु से गिने निकाम रे० ॥ ले निद्रा तूं तो सुखसे। मैं रक्षक भय मत पाम रे०।।कर्मों॥
६॥ यों सुण तोतो चुपरह्यो । जागे तोभी निद्रित होयरे ॥ वीर करवाल नंगी ग्रही । देवे
पहरो चौबाजू जोयरे० ॥कर्मों॥७॥ तव तहां से कुछ अन्तरे । सुनायो नाटिक झणकार रे.
छे राग तीस रागणी । जाने गावे किन्नर सुर साररे० ॥कर्मों॥८॥ तासे गगन गरणा गयो
। सुगवीरजी आश्चार्य पायरे० ॥ हंग दिग पट फेंके तदा । ते देवालयमे देखायरे० ॥कर्मों
॥९॥ दिव्य प्रकाश रवी किरण सा । देखा मन्दिर मांयरे० आश्चर्य चकित हो चिन्तवे। इ
समेही नाचे गायरे० ॥कर्मो॥१०॥ अमरअमरी मिल इहां । करेहे इछित विनोदरे० ॥ हाहा
यह अपूर्व रचना । देखे उपजे प्रमोदरेला. ॥कर्मों॥११॥ अनोपम नाटक देवका । मनुष्य देख

३ तोता
४ दासी
रेवा

न कैसे पायरे० ॥अचिन्त्य पुण्ये अवसर मिला । मैं देखूंदेवस्थान जायरे०।कर्मों॥१२। कुसुमश्री को जगावइ । कहे रहना प्रिया होंस्याररे० ॥ देहीकी चिन्ता निवार के मे पीछा आता इसीवाररे॥ कर्मो॥१३॥ रागे अकर्पा भूपति । चले सो देखन नृत्यरे० ॥ राणी चिन्ते चित्तमे । रखे प्रमादे होवे अकृत्य रे०॥कर्मों॥१४॥ शैय्यासें नीचे रही । ऊभी निद्रामें झोका खायरे० ॥वैठी वृक्षके आसरे ॥ गइ निद्रामे घेरायरे० ॥कर्मों॥१५॥ वीरजी पहोंचे देवालय । देखा अन्धारा घोररे ॥ प्रकाश नृत्य गीत कुछ नहीं । तब डरपाये दिल ओर रे०॥कर्मो॥१६॥ पुनःपेखे चारोंदिशी । प्रकाश नाहीं देखायरे० । शब्द कछु सुणावे नहीं । मन आश्चर्य अतिही पायरे० ॥कर्मो॥१७॥ रचना यह इन्द्रजाल सम । विरालाइ देखाइ मौयरे० ॥ इच्छा मेरी पूर्णी नही । कारण है यह कोयरे० ॥कर्मो॥१८॥ बात स्मरण शुक की हुइ । मनमें गये धस्कायरे० ॥ रखे कोइ विघन हुवे । इन्द्र जाल में मुझको फसायरे०॥कर्मो॥१९॥ रखे हरण होवे नारीको । शैयातुरी लेजायरे० ॥ यों घबराते वीरजी । चले शीघ्र उसीवार छायरे० ॥कर्मो॥२०॥ होन हार सोनीपजे । ते सुणना आगे अधिकाररे० ॥ अमोल कहीढाल तीसरी । द्वितीय खण्ड मझाररे० ॥कर्मो॥२१॥❀॥दोहा॥ अरुणोदय शुक जाग के । देखे दृष्टिप्रसार । अश्व डोंगा ओर गजवी । देखे नहीं उसवार ॥१॥ कुसुमश्री कुंवी

रही धस्काया यह देख ॥ घबराया पाडी चास तब । करके शोर विशाल ॥१॥ ...
मश्री तदा । देखेदृष्टि प्रसार ॥ नही पेखत घबरागइ । शैय्या तुरी भरतार ॥२॥ मुरछाइ ध
रणी ढली । तडके ज्यों जल विन मीन ॥ पवन जोग सावध हुइ । रुदन करे होदीन ॥३
तजी भयङ्कर वन विषे । कहा गये राजान ॥ सासरा पीयर कहां रहे । क्या करे शुकहो
जान ॥५॥❀॥ ढाल ४ थी॥ आइरे पनोती जरासिन्धनेरे. ॥यह॥ सुणीयों कथा कर्मा
तणी रे । कर्म करे सो होयरे ॥ जीव उपाव सुखके केरे ॥ पण होतव नटाले कोयरे ॥ सुणी
यो॥१॥ रुदन सुणी तोता राणीकारे । वीर नृपति घबरायरे ॥ दोडके आये तरु तलेरे ।
शय्या तुरंग न देखायरे ॥सुणीयो॥२॥ मुरछाये सोमी वसुधा पडेरे । क्या करूं अब हा-
येरे ॥ कैसे उलंघु समुद्रकोरे । स्वपन ज्यों सुख विरलायरे ॥सुणीयों॥३॥ राज ऋद्धि सब
कहां रहीरे । कहां रह्या मुझ परिवाररे ॥ तन नारी शुख कैसे पोपुगारे । हाहा गति कर
ताररे ॥सुणीयो॥४॥ यों तीनों प्राणी विल विलेरे । रन में कौन समझायरे ॥ रङ्ग में भङ्ग
क्षीण में होवेरे । कर्म अशुभ प्रगटायरे ॥सुणीयों॥५॥ दम्पति मुरछित देखकेरे । सुख हु-
वा सावधानरे ॥ खे मरे यह शोकसेरे । समजावूं राणी राजानरे ॥सुणीयों॥६॥ उडकर
आया वीर जी कनेरे ॥ मधुरी करे अरदासरे ॥ नराद्विप हो रुदन करोरे । नहीं छाजे गुण रास

रे ॥सुणीयों॥७॥ रोने से राज मिले नहींरे। शरीर सूके चक्षु नाशरे ॥ आपो लखी सा
वध हुवोरे । करो बुद्धि से विमासरे ॥सुणीयों॥८॥ वीती उसको वीसारियेरे । आगे
का सोचो उपायरे ॥ संकट से केसे उबरें । पहोंचे सुख के मांयरे ॥सुणीयों॥९॥ मेने
पहिले चेताये वहूरे । पन होन हार सो थायरे ॥ आप कहां गये थे चलीरे । मेरे को वि-
न चेतायरे ॥सुणीयों॥१०॥ धैर्य धर कर कहे वीरजीरे । में सुद नमानी तेरी बतारे ॥ प्रका
श पेख्यो देवलय विषेरे । नृत्यगीत शब्द सुणातरे ॥सुणीयों॥११॥ देव नाटक जानी क-
री रे । देखन उमंग अतिथायरे ॥ कुसुमश्री को जगाय केरे । में तो गया उस जायरे ॥सु
॥१२॥ इन्द्रजाल से विरला गयारे । वेम हुवा मन मायरे ॥ बात संभारी थारी कही रें । ध
स्कायो आयो धायरे ॥सु॥१३॥ रुदन तुमारा देखकेरे । शंकित पेखायह स्थानरे ॥ अश्व
शैय्यादेखी नहींरे । निरधार आइ मूर्छानरे ॥सु॥१४॥ कहां गये दोनों हरे कौननेरे । यह
अचिन्त्य हुवा आपसोपरे ॥ मेरे दुर्गुण में दुःखी हूवारे । तेरा किंचित नहीं दोषरे ॥सु॥
॥१५॥ सुक कहे विषय विटम्बनारे । देवे इसी प्रकाररें ॥ हूवे का फिकर अब परहरोरे । क
हो आगे सुख विचाररे ॥सु॥१६॥ वीर कहे दिगमुढ ज्योरे । सूझे मुझे कुछ नायरे ॥ तूं
ज्ञानी बुद्धि गुणनिलोरे । कहेमो करुं उपायरे० ॥सु॥१७॥ तोता कहे सावध मनेरे । की

जीये वावी में स्नानरे ॥ अष्टम पत आदरी करी१ । करो देवीका ध्यानरे ॥ सु॥१८॥ वम पुण्य पसाय से रे । देवी होवेगा प्रत्यक्षरे ॥ संकट निवारसी आपणारे । होतव कहेगा सम क्षेर ॥सु॥१८॥ सुखउपाव एक येही हे जी । मुझमातिये इस स्थानरे ॥ दिन तीन मे आप णेरे । पहोचेगे सुखस्थानरे०॥सु॥२०॥ सुख उपाय शुक दाखव्यारे । ढाल चतुर्थी मांयरे ॥ अमोल कहे आगे सुणोरे । करेनरेश यह उपायरे ॥सु०॥२०॥❀॥दोहा॥ सुगीराय निश्चि न्तहो । न्हाये वावडी माय ॥ देवलमे देवीमुखे । बैठे ध्यान लगाय ॥१॥ उंकार युत्त चि त्तमे । ध्यावे देवीनाम ॥ कार्यार्थी प्राणिको।प्रमाद का क्या काम ॥२॥ तोता जाइवन वि पे । मिष्ट अरोग्य फल देख ॥ तोडी लावे चोंचमे । देराणी को हमेश ॥३॥ फल आहार पाणी गृही । करे दोनो गुजरान ॥ नवल निबन्ध पोपट कथी । तेर करे दिन रान ॥४॥ वीर एकाग्र चित्तकी । लव देवीमें लगाय ॥ मनतर कर मन्त्र को जापे । तोही कार्य सि द्द थाय ॥५॥❀॥ढाल५वी॥ पांडव पांचो वन्दते ॥यह०॥ सुगड नर सांभलो । पुण्य वि ना सुख कैसे पाय ॥ चतुर नर सांभलो । धर्म करनेसे दुःख विरलायजी ॥टेर॥ इसविधि देवीको ध्यावते । व्यतिक्रमे तीन दीह हो ॥ दिव्य रुपदेवी प्रकटी । कहे नृप सेवच्छा अ विह ॥सु॥१॥ करजोडी वीर ऊभेहुये । मधुराळवे सीश झुकायजी ॥ देख पुण्यात्म प्राणी

को । चित्त मे देवी अतिहर्षाय ॥सु॥२॥ क्यो वछ मेरे लिये । सहन करे तूं कष्टरे । कार्य होवे सो कहै । जोहोवे तुझइष्ट ॥सु॥३॥ भूपवदे अहो जगम्बे । है तुमसे छानी कोइ वा तरे ॥ अन्तर जामिनी श्वामीनी । जानो सेवक के अवदात ॥सु॥४॥ मुझ दुर्दैव के जोग से । कोइ इन्द्र जालीया आयरे ॥ नाटक भरमे भरमाय के । हरा अश्व शय्याजोथाय ॥सु॥५॥ भलके हम आये यहां । सुपुण्य हुवे आप दर्शनरे ॥ अब यह कष्ट निवारीये । शीघ्र होवो अम्बाजी प्रसन्न ॥सु॥६॥ संकट यह स्थानज विषे । आधारिक आप मोयरे ॥ होनाहोसो प्रकाशीये । शङ्का न रखीये कोय ॥सु॥७॥ मिष्ट सुगड वयण सुन करी । हर्षित हो दीया ज्ञानरे ॥ कर्म बीकट तस जानके । देवीमत हुवा हैरान ॥सु॥८॥ यहां श्रोता हो विचारीये । पुण्य विन देव से क्या होयरे ॥ सञ्चित पावे प्राणीया । भोलासो सम्यक् खोय ॥सु॥९॥ छोडो कुदेव पूजन नमन । रखो प्रमेष्टि ध्यानरे ॥ तो उद्यम से पावोगे । सञ्चित गुप्त निधान ॥सु॥१०॥ विश्वासी देवीभूपको कहै । भाइ है अबीकर्मतुझ नष्टरे । द्वादशसमास लगे तुमे । पावोगे पूराकष्ट ॥सु॥११॥ फिर तुझ पुण्य प्रगट हुवे । करुंगा मे सक्तिसी सहायरे ॥ गइ ऋद्धिसंग वहूऋद्धि । प्राप्त होसी वैमनाय ॥सु॥१२॥ वीर पुरुष संकट पडे । धैर्यसे सहेदृढ मनरे ॥ पूर्व हुवे महापुरूषजो । तस चरित्र कीजे चिन्तन ॥सु॥१३॥

तीर्येश चक्रिहरी हरी । कर्म तणे प्रतापरे ॥ ऋद्धि सज्जन से विछडके । सहे महा सन्ताप ॥सु॥१४॥ परन्तु दु:खी वो रहे नहीं । पुनः पाये सुख विशेषरे ॥ ढलती चडती छांह है । यो शुभा शुभ कर्म अशेष ॥सु० ॥ १५॥ अति संकट मे तुम तणी । करूंगा विच २ सहाय ॥ हिवे सिन्धू तरवा तणों । दाखवूं एक उपाय ॥ सु० १६॥ रक्त ढजा ऊंची अति । वान्धो देवल पर जायरे ॥ उसे अवलोक सायर पन्थी ॥ तुम उद्धारण करेगे उपाय ॥ सु० ॥ १७॥ श्रेष्ट एक आइ करी । ले जावेगा तुम को साथ ॥ आगे होतव जो होयंगे । सो देखोगे तुम नर नाथ ॥ सु० ॥ १८ ॥ अन्तर ध्यान सुरी हुइ । वीर शुक राणी ढिग आयरे ॥ वात कही देवी कही । सो भी सुण कर विलखाय ॥ सु० ॥ १९॥ शुक सवादी फल लादिया । परणो कीयो राय तामेरे ॥ तीनो तहां इस विध रहे । देखो कर्म के काम ॥ सु० ॥ २० ॥ शुक मनो रन्जन कथा । कह कर काल खुटायरे ॥ पांचमी ढाल द्वितीये खण्डे । ऋषि अमोलख गाय ॥ सु० ॥२१॥ ❀॥ दोहा ॥ देवलमे से ढजा ग्रही । देवल उपर जाय ॥ बन्धी शीकारे उतंग अत । ज्यो दूर से सो देखाय ॥१॥ उसवक्त एक धनेश्वरी ॥ धन्ना सार्थ वाय ॥ साथ बहूत नर परिवरे । आवे समुद्र रहाय ॥२॥ कुसुम पूरके आखाद में । चला वाहन देखे सोय ॥ नवी ढजा देवाल

नमा । कहे शान्ति कीजो अम्मा । घणी खम्मा । शङ्कट से उधारीयेजी ॥ हमारे इच्छित कार्य कीजे । परिवार के दर्शन दीजे । अर्ज मानीजे। विज्ञप्ति अवधारीयेजी ॥१२॥ और भी सब पाये नामी । मांगी जो जो थीखामी । सुख आरामी। सव इच्छे प्रभु कह्योजी ॥ हिल मिलकर सवही चले । उदधी कण्ठ आये जेतले । उसहीपले । चड वाहन रसताल ह्याजी ॥१३॥ असल कोटडी निहाली । करदी कुमर मणी खाली । तीनों संभाली । उ-स में सुखे रहने लगे जी ॥ भूषण एक वेंचहीया। वस्त्रा भरण उत्तम लीया। युक्ते रीया । खान पान सुख जे मंगे जी ॥१४॥ देख वीरकी चातूरी । शेठ खुशी भये ऊरी । भये मन्तरी। सुबुद्धि ख्याल नित्य रमेंजी ॥ नीति रीति हित की कहे । जिससे सब मोद ज लहे । हुकमेरहे । सर्व साथी के मन गमेंजी ॥१५॥ अनिन्दक अमत्सरी । गुण ग्राही न ही छिद्री । धीर वीर सिरी । सन्तोषीरु सोभिताजी ॥ उदार चित्तिदयालु । सत्यवन्त अ नाथपालु । यह गुणमालु । पेखी सबमन लोभताजी ॥१६॥ गुण से पूजापावे सहू । विन गुण सूरुपा लहू । इसलिये कहूं । धारो यह गुण सुखचहे जी ॥ द्वितीयखण्ड पटीढाल । ऋ पि अमोल कहे उजमाल । अहो जनमाल । आगे चरित्र हे रसमहे जी ॥१७॥❀॥दोहा

तस तन तेज विद्युत प्रभा । देखा धन्नाशेठ ॥ आश्चर्य पा मुर्च्छित हुवा । पाप गया म
न पेठ ॥२॥ लोकों मिल सावध कीया । मिथ्या कहे अबीमोय ॥ शीत जोर मुर्च्छा ल-
ही । अवर कारण नहीं कोय॥३॥दामनी कामनी मनवशी। भूले शुद्ध बुद्ध सार।चिन्ते श्व
र्ग पातल मे । ऐसी नही कोइ नार ॥४॥ नर जन्म सम्पदलही । जो नमिले ऐसीनार॥
निष्फल धन तन तासहै । इसालिये मुझ धिक्कार ॥५॥❀॥दाल७वी ॥ गुरांजी ज्ञानदीयो
मारी ॥य०॥ विपय की वांच्छा दुःख कारी । सुन तस फल जो निर्विप रहेतो सुख पावे
मारी ॥आं॥ विपय वासना पीशाच के वस्य । शेठहुवे तेवारी ॥ खान पान सन्मान वि
सारे । चित्तवसी प्यारी ॥विप॥१॥उपावढूंढे मिलने प्रेमला । लगेन कुछ कारी ॥ मन त-
रंग सागर भृंगजो । उछले लेहर वारी ॥विप॥२॥ वहूत सलामें अन्तिम सला । जची म
न मझारी ॥ पति जीवित पत्नी नही पावे । न्हखूं वीर मारी ॥विप॥३॥ छल छीद्रदेखे नृ
पत के । एकदा निशीकारी ॥ लघु शङ्का निवारण कारण । आये वीर वारी ॥विप॥४॥
वाहन कण्ठे निशङ्क वैठे । शेठजी तक पारी ॥ धीरेसे आकर धक्का लगाया । दियेवारीमें
डारी ॥विप॥५॥ थोडी देरबाद पूकार कीनी । दोडो दीपक लारी ॥ कोनपडा दरीयाव के
अन्दर । वाजा इसवारी ॥विप॥६॥ अपने २ साथके सब जन । लिने सभारी ॥ दीपक

धार केइनर नार आये । मचीगड वड भारि ॥विप॥७॥ कुसुमश्री जाग्रतहो देखे । पतिन
ही सेजारि ॥ वाहिर आ नर बृन्द मे देखे । नही दिखे कहांरि ॥विप॥८॥ सुना लोक मुख
अभीमायर में । कोइ नर नारी ॥ जानी निज पति पडी मुरछाइ । शुद्ध न लगारि ॥विप
॥९॥ शीतळ पवन जोग क्षीणन्तर । सावधता धारि ॥ विरह वन्हिसे प्रजली प्रवल । क-
रि तव पोकारि ॥विप॥१०॥ अहो प्राणेश्वर अवला अलवेशर । यह क्या विचारि ॥ निरा
धार मेली शरणागत । गयेकहां पधारि ॥विप ॥ ११ ॥ जान अजान में श्वामी आपको
। दुहव्यान लगारि ॥ अम्बुनिधमें एकली छोडते । कहां गइ दयारि ॥विप॥१२॥ कहां पी
यर कहां सासरा रहिया । अवबीच लामारि ॥ हाय २ अव क्या करुंमें । होगइ निराधारि
॥विप॥१३॥ यों पुकार सुनके सव लोकों । गयेअति घवरारि ॥ त्रहा २ मचगइ झाहजमें
। शुन्य गइ छारि ॥विप॥१४॥ अहोप्रभू ' जुलम हुवा यह भारि । रायजी हूव्यारि ॥ ऐ-
गुणवन्त पुण्यवन्त प्राणि । मिलने दुकर कारि ॥विप॥१५॥ हाहा कार मच्या सव सा
में । धन्ना हरव्यारि ॥ कारमो सोग ऊपरसे करते । आये कुसुमां जाहांरि ॥विप॥१६॥
ते कूटते सन्ताप मेंरही । पूरी हुइ निशारि ॥ प्राते सव मिल शेठ समजाइ । राखे रोता
प॥१७॥ रुदन करंतो धन्नोवाले । अहो मित्र सहचारि ॥ अवबीच प्रीति तोडके हू

वे । यह क्या विचार ॥विप॥१८॥ विल २ त कहे कुसमश्री से । गये नहीं आतारी ॥
नाहक फिकरतजी चलो मुझ घर । रखूंगा सुखमंरि ॥विप॥१९॥ मुझ साहबी सवहे तुमा
री । पूरुगा इच्छारी ॥ लोक जाणे विश्वासे अवला । कौन जाने व्यभिचारी ॥विप॥२०
परन्तु कुसुमां समझी मतलब । ऊी तन झालारी ॥ इसही दुष्ट डूबा ये पति मुझ । रखे
करे वलत्कारि ॥विप॥२१॥ रहने जोग नही यह जागा । मरना श्रेयकारि ॥ झम्पा पात
करुं समुद्रमें । ऊीयों धारि ॥वि०॥२२॥ तब पोपट ज्ञाने परचावे । रहा धैर्य धारि ॥ कौ
न माराने समर्थ वीरको । होंगे पुण्य सहारि ॥वि०॥२३॥ निरह व्याकुलन सुणे वचन त
स । लोक फिरे आडारी ॥ सवे चुकाजा वाहण कंठे । कूदी पाणी मारि ॥वि०॥२४॥ वी
रसेण तस कर धर राखा । न मरिये प्यारि । भयवसे सती आंख मिचानी । शेठने गृही धा
री ॥ वि०॥२५॥ कहे चिल्लाइ छोड दुष्ट मुझ । किसे कहे प्यारी ॥ जैसी गति करी मुझ
पतिकी । तैसी होगी थारी ॥वि०॥२६॥ वीरसेण मन मतलब समझे । पण घुस्सा मरि॥
कहे जरा ऑख खोल कर देखो । कौन दुष्ट क्यारि ॥वि०॥२७॥ ओलखीपति वचन नय
न खोले । हर्षी निहारि ॥ सब हर्षये ढाल सातमी । अमोल ऊचारि ॥वि०॥२८॥❀॥दो
हा॥ कुसमश्री अति हर्षथी । पुनः गइ मुरछाय ॥ तत्क्षिण पुनः सावध हुइ । गइ मन मे

थे । रहे सो आगेपाय ॥ ऋषिअमोल यह ढाल आठ कहे । कीजीये सुख उपाय ॥कर॥ १८॥❀ ॥दोहा॥ आयुबाले होंशारहो । शुकउड गगने जाय ॥ श्वामी सुखको इच्छता। देखे गगने रहाय ॥१॥ अन्तराय उदय दम्पति । जुदे २ पटीये सहाय ॥ अलग २ दोनों नीकले । कुसुमश्री वीरराय ॥२॥ ज्यों जुदे २ कर्मों वस्ये । जुदी २ गति जीव पाय ॥ त्यों वायु जोग दोनोही। जुदी २ दिशचले जाय ॥३॥ मिलन उपाव किये अति । परन्तु नहुवा सिद्ध ॥ होनहार हुवा रहे । कर्मोंकी यहविध ॥४॥ जहां लग दृष्टिगत रहे । तहां लगरहा विश्वास ।। विशेष अन्तर अदृश्यहो । हुवे शिथिल निरास ॥५॥❀॥ढाल॥९वी श्रेणिक राय हूंरे अनाथी निग्रन्थ॥यह०॥खेचर राय । दम्पातिको समझाय ॥टेर॥ अन्तालि खसे कीर देखा । जुदा दोनों जाय ॥ वियोग देख श्वामी श्वामिनीका । हृदय तस थररा य ॥खेचर॥१॥ शीघ्र उतरी आया वीरढिग । मधुरे नर्मा बोलाय ॥ सुभाग्य श्वामी दर्श देखी । मन विश्रान्ति पाय ॥खेचर॥२॥ जिन्दे रहेतो धारा करेंगे । टलीमरन बलाय ॥ पन्तु राणीजी जुदा जावे । क्या करुं मिलन उपाय ॥खे॥३॥ आज्ञा होवेतो जाकर उनको । देऊं धैर्य वन्धाय ॥ ले समाचार उडकर चाला । कुसुमश्री ढिग आय ॥खे॥४॥ नमनकर कहे फिकर त्यागो । रोनेसे क्या थाय ॥ शुकदर्शे कुसुमा बाइ । हर्षी अङ्कित वैठा

य ॥खे॥५॥ पोपट कहे श्वामी आपवियोगे । अतिरहा दु:ख पाय ॥ कर्म योग अम्बूानि-
धी माहे । सूचेन कोइ उपाय ॥खे॥६॥ ऑश्रु न्हाखती कुसुमा कहती । क्या करुं में भा
य ॥ पक्षिणी होवुंतो उडी मिलुमे । कालजारहा है चिराय ॥खे॥७॥ कहे राघु छोडीये सु
ज्ञ । मिलू श्वामी को जाय ॥ कुशल आपकी कहीं आवू । कूसुमा छोडा उस तांय ॥खे
॥८॥ नमन कर के कहजो श्वामी । रहो आप सुखध्याय ॥ जीवती रहती मिलूंगा फिर-
भी । नहीं तो रखीये कृपाय ॥खे॥९॥ धैर्य देइतोता चाला । वीर पास सो आय ॥ कुश
ल कही राणी कहीसो । ज्ञाने धैर्य दीराय ॥खे॥१०॥ क्षीणिक में इत क्षीणिक में उत । र
हा गोता लगाय ॥ अन्तर अधिक हुवा दोनों का । वीरजी को दया आय ॥खे॥११॥
दीनश्वर कहे अहोमणी चूड । अब तुमफिरिये नाय ॥ हमारे तो पापदिशा प्रगटी । सो
न छूटे भक्तयाय ॥खे॥१२॥ तुमभी भुक्तो सङ्ग हमारे । मुझ से नदेखी जाय ॥ बेठो आ
इ अङ्कित मे । लो विश्रान्ती माय ॥ खे॥१३॥ सूडो बैठा नृपति खोले । अति उदासी
जणाय ॥ विश्वासी पूछे तस भूपत । देवो ज्ञान से तुम बताय ॥खे॥१४॥ हम जीवेगेके
इस मे मरेंगे । मिलेगे पीछके नाय ॥ सूवा कहे सुरी वचन संभारो । मेरेसे पूछो काय
॥खे॥१५॥ सुख दुख ढलती चडती छांया । अधीरा होना नाय ॥ बडे २ में शंकट पडे

हैं। पीछे गये सम्पत पाय ॥खो॥१६॥ राम लक्षमण हरिश्चन्द नलादि। कृष्ण पांडव महाराय ॥ केइ वर्षोंलग विपती भोगवी। उतनी तो अपने नाय ॥खो॥१७॥ वो सब धैर्य धरी सुख पाये। तैसेलो धैर्य को सहाय ॥ दुःख के दिन भी वीतेंगे अबी। देवी वचन सत्य जणाय ॥खो॥१८॥ गत जन्म में करणी करते। कसर रही देखाय ॥ अचल सुख नहीं पाये स्वामी। अवतो वन्धिये नाय ॥१९॥ जो शंकट में साहस न खण्डे। तस दुःख ते नलखय॥ संकट और जन्म तो पूराहोवै। नाम अमर रह जाय ॥खो॥२०॥इत्यादि शुकबोध सुणी नृपाधैर्य दिलमे लाय॥नववी ढाल अमोल ए भाखी॥ज्ञान सदासुखदाय॥ खो ॥२१॥❀॥दोहा॥अहो वल्लभ नृपति कहे। सच्च है तेरी वात ॥ हित शिक्षादी अवसरे। सच्चा मित्र सुखदात ॥१॥ अब एक वचन तूं माहरो ॥ मान्य करिले भ्रात ॥ तो तुम हम दोनोंसुखी। होतें अबी देखात ॥२॥ यह दिखताहे सन्मुखे। वन वृक्ष भरा सुखकार। तुम जा रहा इसके विषे। जहां तक हम पर भार ॥३॥ पुण्य प्रकट मिलो आसके। भोगवेंगे सब सुख॥सुख उपाव और इस विना। देखाता नहीं शुक ॥४॥ सुन वचन यों भूपके। तोता नयनाश्रुत होय ॥ गद २ वयण तव ऊचरे। बूरा है जगमें विछोह ॥५॥❀॥ढाला १०वी॥ अपाढ भूती अणगार ॥यह०॥ देख सूवेके यह हाल। कहने लगे नृपाल।

सुण पोपट प्यारा । ज्ञानी होकर यह क्या करोरे ॥१॥ तूं मुझ जीवन प्राण । पण येही
युक्त इस ठाण । सुण पोपट प्यारा । मुझ तूंतो जाने खरोरे ॥ २ ॥ रुदन्त शुक तब के
य । जाणू श्वामी को सत्य एया ॥ सुणो सूरा राजा । पण दुःख में छोडे जावे नहीजी
॥ ३ ॥ जो सेवक दुःख माय । श्वामीको तज जाय ॥ सुणो सूरा राजा ॥ नीमक हरा
मी सो सहीजी ॥ ४ ॥ वीर कहे इस ठाम । जाते शका न पाम ॥ सुणो पो० ॥ न जा
वे तो आज्ञा भङ्ग कहीजी ॥ ५ ॥ शुक निरुत्तर होय । सूजे उपाव न कोय ॥ सुणो सू
रा०॥ पग प्रणमी गगने चलाजी ॥ ६ ॥ खंग में खंग ऊभारेह । वर्षावे नयने मेह ॥ सु
णो सूरा ॥ भक्ति भाव छत्ता दाखवे जी ॥ ७ ॥ भूप नयनाश्रुत होय । जाने समक्षा
करे सोय ॥ सुणो पोपट ॥ चला शीघ्र वो वहां थकीजी ॥ ८ ॥ कुसुम श्री पास आय
। ऊभा गगन मे रहाय ॥ सुणो श्रोताजन हो ॥ अक्रन्द सुना अति आकराजी ॥ ९ ॥
शीघ्र उतर ढिग आय । प्रण में राणी के पाप । सुणो श्याणी बाइ । राजाजी मुझ राखे
नहीं जी ॥ १० ॥ कुसुम श्री तो न सुणे कान । लागा आर्त ध्यान । सुणो श्याणी रा
णी । आश्रु पूछे तस पॉख से जी ॥ ११ ॥ देख तोता कों पास । राणीजी पाइ विश्वा-
स ॥ सुणो पो. ॥ भले आया इस अवसरे जी ॥ १२ ॥ लिया खोला में कर फेर । कहे

हैं । पीछे गये सम्पत पाय ॥खो॥१६॥ राम लक्ष्मण हरिश्चन्द नलादि । कृष्ण पांडव म-
हाराय ॥ केइ वर्षोलग विपती भोगवी । उतनी तो अपने नाय ॥खो॥१७॥ वो सब धै-
र्य धरि सुख पाये । तैसेलो धैर्य को सहाय ॥ दुःख के दिन भी वीतेंगे अबी। देवी वच
न सत्य जणाय ॥खो॥१८॥ गत जन्म मे करणी करते । कसर रही देखाय ॥ अचल सु
ख नहीं पाये स्वामी । अबतो बन्धिये नाय ॥१९॥ जो शंकट में साहस न खण्डे । तस
दुःख ते नलखय ॥ संकट और जन्म तो पूराहोवै। नाम अमर रह जाय ॥खो॥२०॥इत्यादि
शुकबोध सुणी नृप।धैर्य दिलमें लाय॥नववी ढाल अमोल ए भाखी।ज्ञान सदासुखदाय॥ खो
॥२१॥❀॥दोहा॥अहो वल्लभ नृपति कहे । सच्च है तेरी बात ॥ हित शिक्षादी अवसरे ।
सच्चा मित्र सुखदात ॥१॥ अब एक वचन तूं माहेरो ॥ मान्य करीले भ्रात ॥ तो तुम ह
म दोनोंसुखी । होतें अबी देखात ॥२॥ यह दिखताहै सन्मुखे । वन वृक्ष भरा सुखकार ।।तु
म जा रहो इसके विषे । जहां तक हम पर भार ॥३॥ पुण्य प्रकट मिलो आयके । भोगवे
गे सब सुख॥सुख उपाव और इस विना । देखाता नहीं शुक ॥४॥ सुन वचन यों भूपके
। तोता नयनाश्रुत होय ॥ गद २ वयण तव ऊचरे । बूरा है जगमें विछोह ॥५॥❀॥ढा
ला १०वी॥ अषाढ भूती अणगार ॥यह०॥ देख सूवेके यह हाल । कहने लगे नृपाल ।

सुण पोपट प्यारा । ज्ञानी होकर यह क्या करोरे ॥१॥ तूं मुझ जीवन प्राण । पण येही युक्त इस ठाण । सुण पोपट प्यारा । मुझ तूंतो जाने खरोरे ॥ २ ॥ रुदन्त शुक तव केय । जाणू श्वामी को सत्य एया ॥ सुणो सूरा राजा । पण दुःख मे छोडे जावे नहींजी ॥ ३ ॥ जो सेवक दुःख माय । श्वामीको तज जाय ॥ सुणो सूरा राजा ॥ नीमक हरामी सो सहीजी ॥ ४ ॥ वीर कहे इस ठाम । जाते शंका न पाम ॥ सुणो पो० ॥ न जावे तो आज्ञा भङ्ग कहीजी ॥ ५ ॥ शुक निरुत्तर होय । सूजे उपाव न कोय ॥ सुणो सूरा० ॥ पग प्रणमी गगने चलाजी ॥ ६ ॥ खग में खग ऊभारेह । वर्षावे नयने मेह ॥ सुणो सूरा ॥ भक्ति भाव छत्ता दाखवे जी ॥ ७ ॥ भूप नयनाश्रुत होय । जाने समक्षा करे सोय ॥ सुणो पोपट ॥ चला शीघ्र वो वहां थकीजी ॥ ८ ॥ कुसुम श्री पास आय । ऊभा गगन मे रहाय ॥ सुणो श्रोताजन हो ॥ अक्रन्द सुना अति आकराजी ॥ ९ ॥ शीघ्र उतर ढिग आय । प्रण मे राणी के पाप । सुणो श्याणी बाइ । राजानी मुझ राखे नहीं जी ॥ १० ॥ कुसुम श्री तो न सुणे कान । लागा आर्त ध्यान । सुणो श्याणी राणी । आश्रु पूछे तस पाँख से जी ॥ ११ ॥ देख तोता कों पास । राणीजी पाइ विश्वास ॥ सुणो पो. ॥ भले आया इस अवसरे जी ॥ १२ ॥ लिया खोला में कर फेर । कहे

१ आकाश
२ तोता

विश्वाशी टेर ॥ सुणो पोपट ॥ भाइ तूंछे ज्ञानी गुणी जी ॥ १३ ॥ मुझ पर पड्या दुःख
पूर । कब होवेगा यह दूर ॥ सुण पोपट ॥ के डूब मरु उंदधी विषेजी ॥ १४ ॥ सूडा क
हे मिष्ट वाय । यह वचन मत वदो माय । सुणो शाणी राणी ॥ धैर्य धरीजे मन विषे-
जी ॥ १५ ॥ देवी वचन करो याद । तज दो सब विषवाद ॥ सुण ॥ शा.॥ संकट पडे
सतीयों परेजी ॥ १६ ॥ सोही खमे दृढ रहाय । ते धन्य २ जग में कहाय ॥ सुण शा॥
याद करो जो सतीया हुइ जी ॥ १७ ॥ सीता द्रौपदी जाण तारा । अंजण बखाण ॥
सुण शा. ॥ इत्यादि जाणो सहुजी ॥ १८ ॥ पाइ दुःख अपार । वियोग सहे वर्ष बार॥
सुण शा० ॥ धैर्यसे सुख पाइ बहुजी ॥ १९ ॥ तुम हो चतुर सुजाण ॥ चडती पडती के
जाण ॥ सुण शा० ॥ आर्त तजो साहस धरो जी ॥ २० ॥ थोडेही दिनों के मांय । मि
ले सज्जन सुख आय ॥ सुण शा० ॥ सुख न रहा तो दुःख क्या रहे जी ॥ २१ ॥ जैसे
गया अपना सुख । तैसेही जावेगा दुःख ॥ सुण शा० ॥ निश्चय यह देवी कहे जी ॥
२२ ॥ धर्म कर्म के मांय । दी होगी अन्तराय ॥ सुण शा० ॥ उस से यह विछोहा हुवा
जी ॥ २३ ॥ शुभ ध्याने स्वल्प काल मांय । देवो अन्तराय खपाय ॥ सुण शा० ॥ यह
हित वाक्य मन धारिये जी ॥ २४ ॥ अमोल बोध उजमाल । कहा दशवी यह ढाल ॥

सुणो श्रोताजन हो ॥ धारण कर सुख पाइये जी ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दोहा शुक बोध श्रवण
करी।हर्षी कुसुमा चित्त ॥ हांभाइ साची कही । कर्म गति ऐसी मित ॥ १ ॥ गत काले स
तीयो बहू भइ । द्रढ रही संकट मांय ॥ यह लक्ष विन्दू आज से । कर रक्खूं में भाय ॥२॥
तैसेही सुख यश पावूगी । कर प्राण प्यारो शील ॥ सच्चा सूख उपाव यह । स्वीकारु वि-
न ढील ॥ ३ ॥ हित मित देवी तुम तणा । फळ से शीघ्र बचन ॥ जिस दिन श्वामी
भेटेगे । सो दिन होगा धन ॥ ४ ॥ यों अनेक कथा कथन । चलते सिन्धू पन्थ ॥ हि-
त वांछे एक एक का । सोही प्रेम की ग्रन्थ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ वी ॥ वारीयां २ रे
॥ यह० ॥ मानीये नानीये मानीयरे । एक बचन शुक जी मेरा मानीये ॥ टेर ॥ आगे
जाते देखे राणी । वन एक सूखस्थानीयेरे ॥ एक ॥ १ ॥ कहे शूक से सुन मुझा हित
वाणी । एक बात जची मेरे ध्यानीयेरे ॥ एक ॥२॥ सो माने तो तूं सुख पावे । मुझ म
न को भी सुख जानीयेरे ॥ एक २ ॥ कीर कहे सो झट फरमावों । जो तुम हम हित
ज्यानीयेरे ॥ एक ॥ ४ ॥ कुसुम कहे दिखे सामें बगीचा । वृक्ष फल भरे सुख स्थानीयेरे
॥ एक ॥ ५ ॥ तुझे खान पान स्थान इच्छित मिलेगा । जावोइ तुम इस स्थानीयेरे ॥
एक ॥ ६ ॥ जहां लग पुण्य हमारा प्रगटे । तहां लग रहो यह मकानीयेरे ॥ एक ॥७॥

पीछे हमो सुख सम्पति पावे । तब तुम आजो हम कानीयेरे ॥ एक ॥ ८ ॥ साथ हमारे तूं दुःख भोगवे । येंही अयुक्त पहचानीयेरे ॥ एक ॥ ९ ॥ ऐसे बचन सुन पोपट की आँखो । तत्क्षीण भरागइ पानीयेरे ॥ एक ॥ १० ॥ गद २ कण्ठे कहे अहो वाइ । क्यों मुझ से भये है रानीयेरे ॥ एक ॥ ११ ॥ प्रथम नरेश्वर मुझको निकाला । ताते आयो तुम कानीयेरे ॥ एक ॥ १२ ॥ वाल पने से तूम हम स्नेही । सो प्रीति कैसे नशानीयेरे ॥ एक ॥ १३ ॥ संकट समय नहीं छोडके जावूं । पाप लगे असमानीयेरे ॥ एक ॥ १४ ॥ देवो धक्के तोभी नहीं जावूं । वालपरे हठानीयेरे ॥ एक ॥ १५ ॥ राणी उठाइ तस कण्ठ लगायो । विश्वासी कहे मधुवानीयेरे ॥ एक ॥ १६ ॥ आज्ञा से जाते पाप न लागे । आगे के हित परमाणीयेरे ॥ एक ॥ १७ ॥ जीवते रहे तो फिर सब मिलेंगे । सुक माल तन तुझ जानीयेरे ॥ एक ॥ १८ ॥ हमारे वान्धे हमही भोगवें । तूं क्या हिस्सा बटानीयेरे ॥ एक ॥ १९ ॥ वश ज्यादा अब हट नहीं करना । उचित अवसरे वात तानीयेरे ॥ एक ॥ २० ॥ क्षीणीक विरह यह तो अब वीत जावे । फिर वहुत रहेंगे एक स्थानीयेरे ॥ एक ॥ २१ ॥ यों सुन शुक निरुत्तर होइ । नमी उडा असमानीयेरे ॥ एक ॥ २२ ॥ आँखो नीर वर्षता जावे । जा रहा जाग सुख दानीयेरे ॥ एक ॥ २३ ॥ खावे पुष्प फळ रहे स्वेच्छा । अजपाजप दोनों ध्यानी-

येरे ॥कए॥२४॥ खण्ड दूसरे ढाल एकाददश । ऋषिअमोल बखानींयेरेएक॥२५॥❀॥ह-रिगीत ॥ छन्द दूसरें उल्लासे कर्म सम्मासे तीनो की हकीगत कही॥ श्रीवीरसेण कुसुमश्री शु कपक्षी तीनो जुदाग्ही ॥ धन्नो अरु सुरराज कर अकाज सो कुगतलही ॥ तीनो पुण्य प्र ताप गमा सन्ताप पासे सुखसही ॥१॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी
मुनिश्री अमोल ऋषिजी रचित वीरसेण कुसुमश्री चरित्र का
कर्म प्रबन्ध नामे द्वितीय खण्ड समाप्तम्

॥दोहा॥ स्वयं स्वरुप परमात्मा । अनन्त अक्षय अव्या बाध ॥ ध्यान धरत परमेश्वरका। पावत सुख समाध ॥१॥ त्रिकरण त्रियोग से । जोशुद्ध पाले शील ॥ सोही सन्त सती वरणवे।सूत्र व्याख्यान अखील॥२॥अनसंजोगे जगत में।बाजे त्यागी अनेक॥संयोग नि श्चल रहै। सो कोट्यन मे एक ॥३॥ तासही एक प्रभाव से । कवी वाणी सोभाय ॥ वे

पीछे हमो सुख सम्पति पावे । तब तुम आजो हम कानीयेरे ॥ एक ॥ ८ ॥ साथ हमारे तूं दुःख भोगवे । येंही अयुक्त पहचानीयेरे ॥ एक ॥ ९ ॥ ऐसे वचन सुन पोपट की आँखो । तत्क्षीण भरागइ पानीयेरे ॥ एक ॥ १० ॥ गद २ कण्ठे कहे अहो बाई । क्यों मुझ से भये है रानीयेरे ॥ एक ॥ ११ ॥ प्रथम नरेश्वर मुझको निकाला । ताते आयो तुम कानीयेरे ॥ एक ॥ १२ ॥ बाल पने से तूम हम स्नेही । सो प्रीति कैसे नशानीयेरे ॥ एक ॥ १३ ॥ संकट समय नहीं छोडके जावूं । पाप लगे असमानीयेरे ॥ एक ॥ १४ ॥ देवो धक्के तोभी नहीं जावूं । बालपरे हठ्ठानीयेरे ॥ एक ॥ १५ ॥ राणी उठाइ तस कण्ट लगायो । विश्वासी कहे मधुवानीयेरे ॥ एक ॥ १६ ॥ आज्ञा से जाते पाप न लागे । आगे के हित परमाणीयेरे ॥ एक ॥ १७ ॥ जीवते रहे तो फिर सब मिलेंगे । सुक माल तन तुझ जानीयेरे ॥ एक ॥ १८ ॥ हमारे बान्धे हमही भोगवें । तूं क्या हिस्सा वटानीयेरे ॥ एक ॥ १९ ॥ वश ज्यादा अब हट नहीं करना । उचित अवसरे बात तानीयेरे ॥ एक ॥ २० ॥ क्षीणीक विरह यह तो अब बीत जावे । फिर बहुत रहेंगे एक स्थानीयेरे ॥ एक ॥ २१ ॥ यों सुन शुक निरुत्तर होइ । नमी उडा असमानीयेरे ॥ एक ॥ २२ ॥ आँखो नीर वर्षता जावे । जा रहा जाग सुख दानीयेरे ॥ एक ॥ २३ ॥ खावे पुष्प फळ रहे स्वेच्छा । अजपाजप दोनों ध्यानी-

येरे ॥कए॥२४॥ खण्ड दूसरे ढाल एकाददश । ऋपिअमोल वखानींयेरेएक॥२५॥❀॥ह-
रिगीत ॥ छन्द दूसरें उल्लासे कर्म सम्मासे तीनो की हकीगत कही ॥ श्रीवीरसेण कुसुमश्री शु
कपक्षी तीनो जुदाग्ही ॥ धन्नो अरु सुरराज कर अकाज सो कुगतलही ॥ तीनो पुण्य प्र
ताप गमा सन्ताप पासे सुखसही ॥१॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋपिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी
मुनिश्री अमोल ऋपिजी रचित वीरसेण कुसुमश्री चरित्र का
कर्म प्रवन्ध नामे द्वितीय खण्ड समाप्तम्

॥दोहा॥ स्वयं स्वरुप परमात्मा । अनन्त अक्षय अव्या बाध ॥ ध्यान धरत परमेश्वरका। पावत सुख समाध ॥१॥ त्रिकरण त्रियोग से । जोशुद्ध पाले शील ॥ सोही सन्त सती वरणवे।सूत्र व्याख्यान अखील॥२॥अनसंजोगे जगत मे।बाजे त्यागी अनेक॥संयोग निश्चल रहे । सो कोट्यन मे एक ॥३॥ तासही एक प्रभाव से । कवी वाणी सोभाय ॥ वे

द पुराण कुराणमे । ता के गुण बखाणाय ॥४॥ शील सुरंगी महा सती। कुसुमश्री वीरना
र ॥ कोविद शुक के सहाय से । विशुद्ध शीलर खासार ॥५॥ जगपतीके सदन रहे ।न
रपत पती जहार ॥ ठगेनरोंसा नठगी । शुकबुद्धि उपचार॥६॥सत्य शील बुद्धि कला ।
सरस रस भर खण्ड ॥ सुणीयों श्रोता दत्त चित्त । रसीये रस अखण्ड ॥७॥ शुक गये त
दन्तरे । कुसुमा धैर्यद्रढ धार ॥ क्षत्री अश्वारूढ ज्यों । हुइ पटीये असवार ॥८॥ निश्चय हो
तव पर धरी । पवन जोग चली जाय ॥ आगे होतव तेकथु । जोराणीजी पाय ॥९॥❀
॥ढाल॥१८॥ चेतनजी वारणे मत जावोजी ॥यह०॥ सुणो कर्मों तणी गति भाइजी ।पू
रे भुक्तेही सुख पाई ॥सुणो॥टेर॥ शुक उपदेश मन मे ध्यावेरे । उससे दुःख मन में न
वेदावेरे ॥ ज्ञान ध्याने दुःख अल्प लखावे ॥सुणो॥१॥ जो होणा होवे सो थासीरे । पण
सुख तोपीछा आसीरे । यों धैर्य लावे विमासी ॥सुणो॥२॥ पाणीका लोटमहा आवेरे ।जि
ससे पटीया गगन चडजावेरे । तव मन नें धेसत थावे ॥सुणो॥३॥ लोट गये पाटीया नी
चे आवेरे । जाणे पाताल में धस जावेरे । अब डूबी यों घबरावे ॥सुणो॥४॥ क्षारा पाणी
अंग को लागेरे । जिससे फटी चमडी पडे दागेरे । ऊपर परणी लगे ज्यों आग॥सुणो॥५
जल चरजीव मच्छ कच्छ मोटारे । सो पटिये कोदेवे दोटारे । डरे पेटमें उपजे गोटा ॥सुणो

॥६॥ जाने अब पटीया छूटजावेरे।अथवा मगर मच्छ गटकावेरे। कैसे देवी वचन खाली जा
वे ॥सुणो॥७॥यो दुःख केइ सिन्धु उपजातारे। क्षुधा तृषा शीत तपतारे ताप। घात से चू
क चूक आगे जाता ॥सुणो॥८॥ यों भमर मे पटिया सिधायारे। चक्री जों गमन फिरा
यारे। राणी का भान भूलाया ॥सुणो॥९॥ जैसे तन तज जीव सिधावेरे। तैसे राणीकर
से पटिया जावेरे। कर्म ऊपरा ऊपरी सतावे ॥सुणो॥१०॥ छूटा पटिया डूबीजल माहिंरे।
शुद्ध बुद्ध सबही विसराइरे। एक मगर गया गटकाई ॥सुणो॥११॥ देखो श्रोता भव्य तव्य
रचनारे। कैसे धार्या होवे कैसे बचनारे। यों जान जगमे न पचना ॥सुणो॥१२॥ जैसे न
र्क की कुम्भी मांइरे। उपजे कोइ नेरीया आइरे। तैसे कुसुमा मक्रै उदर रहाई ॥सुणो॥१३
जों यम नर्क कुम्भी पचावेरे। पूराकृत पाप भुक्तावेरे। तैसे राणी तहां दुःख पावे ॥सुणो
॥१४॥ सुकमाल तन अति उसकारे। स्वपन मे न देखा दुःख किसकारे। देखो हाल अ
व सब विसका ॥सुणो॥१५॥ जठराग्नि उष्णता भरिरे। वायु अन्दर न जावे लगारिरे।
वेशुद्धि मे रही घबरारी ॥सुणो॥ १६ ॥ आयुबल जिनका पूरारे। उसेमारे कौन अदूरारे।
भोगवे कर्म रङ्क स्थूरा ॥सुणो॥१७॥ कर्म करते तो लगते मीठे। पण भोगवते वडे धी-
ठेरे। नृपत तनुजा के हाल दीठे ॥सुणो॥१८॥ सुसर पेट बजन हुवा भरिरे। जिससे ति

[1] मगर मच्छ

रने की शक्ति हरिरे । ते तो पचन न होवे लगारी ॥सुणो॥१९॥ घवराकर कण्ठ सो आ
यारे । ऊदर पीडा से रहा घवरायारे । कीचडमें तन फसाया ॥सुणो॥२०॥ तृतिये खण्डप्र
थम ढालेरे । दाखी अमोल कर्मकी चालेरी । सुणीश्रोता दया धर्म पालो ॥सुणो॥२१॥
❀॥दोहा॥ उस अवसर एक धीवरा । मच्छीयो धरने काम ॥ आया सिन्धू कण्ठसो ।
देखा स्वल्प जल ठाम ॥१॥ मकरसो हष्टिण्डा । फसा कीचड मांय ॥ हर्षाया अति मन
में । जोरंक निधान पाय ॥२॥ पूंछ पकड तस खेंचकर । कहाडा पङ्कके वहार ॥ जालमें
धरे सिरले चला ॥ पावूगा द्रव्य अपार ॥३॥ तहां से थोडेही दूरपर । था एक श्रीपुर सेहर
॥ इच्छित मूल्य वहां पावूंगा । ले आयाविन देर ॥४॥ वेंचन ऊभा वजार में । मांगे व
हूते दाम ॥ गरिवतो लेसके नहीं । लेवे जस दाम हराम ॥५॥❀॥ढाल२री॥ मूंडीरे भू
ख अभागणी ॥यह॥ श्रीपुर नगर माहें वसे । पुष्पा गणिका धनवन्त लालरे ॥ जोवन
रङ्ग मदमे छकी । रुपकला गुण सोहन्त लालरे ॥श्री॥१॥ मुग्धा मुग्धने मुग्ध कर । ठगी
या हॉस्य विलास लालरे ॥ द्रव्य वहूत संग्रह किया । वो कैसे सुकृत खरचास लालरे ।श्री
॥२॥ मांस भखे मदिराछ के । जूवाखेले पाप पूरलालरे ॥ मनुष्यमारे विश्वासदे । ऐसा वै
श्या कर्म का लालरे ॥श्री॥३॥ कृपालि का चेरी तेहनी । निपजाने को आहार लालरे

वी कु ३२
खण्ड ३
२ कादव
३२
३ दासी

व्यंजन[1] लेने वजार मे । गइ नाणा[2] लेके लार लालरे ॥ श्री ॥ ४ ॥ वडा मकर[3] देख पू-
छती । उस ने कहा जो मोल लालरे ॥ सो खुशी से तस अर्प के । लाइ गणिका ओल
लालरे ॥ श्री ॥ ५ ॥ पुष्फा पेखा गोखसे । वहुत वजन दार मच्छ लालरे ॥ ठग शिरो
मणी वेशीया । जाना लाइ कुछ लच्छ लालरे ॥श्री॥६॥ शीघ्र आइ दासी ढिगे । कहे
लावो घरके मांय लालरे ॥ रख पाटके ऊपरे । तीक्षण छुरी मांगाय लालरे ॥श्री॥७ ॥
तव जलचर हालने लगा । गणिका को आया वेम लालरे ॥ मृत्युक मीन केसे हला । है
इसमे कुछ हेम लालरे ॥श्री॥८॥ हात फेर तस उद्रपर । तो लगा उष्णस्पर्श लालरे ॥चतु
राइ से चीरीया । अन्दर न होवे कर्श लालरे ॥श्री॥९॥ निकलपडी तव मांयसे । जैसे द
मानी[4] भलकार लाल ॥ कामनीरुप अतुल्यासी । विस्मय पाइ अपार लालरे ॥श्री॥१०॥पू
र्णाङ्गी मनोहरु । लक्षण व्यंजन श्रेयकार लालरे ॥ नख शिख तन अवलोक के ॥ लक्ष्मी
देवी अनुहार लालरे ॥श्री॥११॥ हर्षिष्फा अति धणी । मूर्च्छित कुसुमा पेख लालरे ॥ नि
रा वाधे आसा वन्धि । देवावेगी द्रव्य विशेख लालरे ॥श्री॥१२॥गृही तस रुइके पलंमें ।
सुख शेय्या सयन कराय लालरे॥ अनेक द्रव्य देवेद्य को । ओषध उपचार चलाय लाल
रे ॥श्री॥१३॥ थोडे काले सावध हुई । चैतन्य शुद्धि आइ अंग लालरे ॥ योग्य मधुरव-

[1] तरकारी
[2] द्रव्य
[3] मगर
[4] विजली

चने करी । पुष्फा पूछे धरे रंग लालरे ॥श्री॥१४॥ बाइ तेरेदर्शन करी।हमपाये बहुत आ
नन्द लालरे ॥ आकृतिसे ओलखाय है। तुम उत्तमकुल चन्द लालरे ॥श्री॥१५॥ पूर्वो
पार्जित पुण्य से । तुम आये हम घर लालरे ॥ इच्छित सुख यहां भोगवो।नरखो कोईफि
कर लालर ॥श्री॥१६॥ योसुन शब्द पुष्फा तणा।वेम आया मन मांय लालरे ॥ में आइ
कहां यह कौन है। देखेदृष्टि फेलाय लालरे ॥श्री॥१७॥ भृगारी सहू जायगा । शैयावि
छायत।चित्र लालरे ॥ अतर पुष्फ तंबोलादी । भोगीका स्थान विचित्र लालरे ॥श्री॥१८
आश्चर्य पाइ अतिचित्तमें । यह स्थान ऊंच के नीच लालरे ॥श्रीबहूत पणहिरि नहीं।के
ई तरङ्ग ऊठे दिल बीच लालरे ॥श्री॥१९॥ निश्चय कुछ होवे नहीं । पूछान्ति शरमाय ला
लरे ॥ यह सचकहे के मिथ्या वदे । क्यों यह मुझ ललचाय लालरे ॥श्री॥२०॥ पूरी स-
माधी हुव पीछे । पूछूंगा सवही हाल लालरे ॥ ऋषिअमोल सती सुखकी । कही यह प्र-
थम ढाल लालरे ॥श्री॥२१॥❀॥दोहा॥ सुख सातासव विधी हुइ । एकान्त अवसर देख
॥ ऊंच मिष्ट इष्ट वचन से । पूछे पुष्फासे असेख ॥१॥ बाइजी क्या तुम जातहै । कुलाचा
र गोचार ॥ कृपा कर फरमाइये । ज्यों मुझ होवे आधार ॥२॥ पुष्फा वदे सुझ पुत्रिका ।
सब से ऊंच हम जात ॥ अपार सौभाग्य सुख विलसीये । विद्धा पणा न कभी आत॥३॥नि

१.लक्ष्मी २.लज्जा

त्य नवल शृंगार सज ।नित्य नवे भरतार॥ नित्य नवल भोजनवसन । काम नकाज ८॥
र ॥४॥ महान पुण्य तें साश्चिये । जिससे पाइ यह कुल ॥ चिन्ता किञ्चित कीजीये ।सदा
रहो फल ज्यो खुल ॥५॥❀॥ढाल ३री॥ थारो गयोरे जोबन पाछो नहीं आवे ॥ यह॥ य-
ह वचन सतीके श्रवण पडीया ।जाणे कानके तो कीडा झडीया। आति२ मन में पस्तावे
। सती सत्य शील कभी नहीं गमावे॥१॥वदन कुमला कर ऊतरीया ॥और नयनों में आँ
श्रु भरीया ॥ निश्वास न्हाखी कर्म ठेकावे ॥सती॥१॥ अहो गर्भ मे सडके मे क्यों नही
मरी । आडी क्योनी आइ ज्यों कटाती छुरी । जन्मता काल मुझ क्योनी खावे ॥सती॥
३॥ पालणो टूटतो तो भली थाती । भला होता शीतला वोदरी खाती । क्यों सुझ नरको
परणावे ॥सती॥४॥ ज्यों अश्वशैय्या का हुवा हरण । त्यो मेरा क्यो नहीं हूवा मरण ।व
हां पशुभी क्यो नहीं मुझ भक्षावे॥सती॥५॥जहाज डूबी तहां क्यो नहीं मरि। पटिया छूट
वाहिर निसरि । मगर उदरे क्योनी गलावे ॥सती॥६॥ छुरी से काट ते क्यो नहीं छिदी
। औषधी ये देही क्यो नहीं भिदी । कैसे कर्म कठिण इस स्थान लावे ॥सती॥७॥ स्वप्न
मे देखा नही ऐसा ठाम । कभीन सुना यह रण्डा का नाम । यह अत्यन्त निन्द्य कर्म क
हलावे ॥सती॥८॥ धिक २ मुझ करणी भणी । क्या करी चोरी में कर्मो तणी । ऐसे नी

च सदन मुझ पावे ॥सती॥९॥ अर २ अबमें कैसा करूं । कूवे पडूंके जेहर खाके मरूं।
मेरा तन मुझे नही सुहावे ॥सती॥१०॥ इसका नाम सुनतेही पापलगे । मुख देखे सञ्चित
पुण्य भगे । तो घरमे रहने से क्या कहवावे ॥सती॥११॥ यों अनेक पश्चाताप करती ।
और सब दुःखों को विसरती । अती सन्ताप से तन संतावे ॥सती॥१२॥ थर २ अङ्ग ज
व थरराया । आँखों मे चौधार पानी आया । शैय्या वस्त्र सब धुजावे ॥सती॥१३॥ गाणि
का देख आश्चर्य पाइ । मधुरी कहे क्या करे बाइ । मन मे होवेसो क्योनी दर्शावे ।सती
॥१४॥ सती चिन्ते जो कछु मन आइ । तोयह कभी मानने नाहीं । वलत्कार व्रत मेरा
मगांने ॥सती॥१५॥ इससे श्रेयमरण मुझ तांइ । व्रत रक्षण मरते दोष नाहीं । झरोखे जा
इ तन झम्पावे ॥सती॥१६॥ पुष्फ द्रढ पकड के रखी । खेंच के लेजावे घर मे पखी । भीं-
त से शिर तब अथडावे ॥सती॥१७॥ खाकर मुरछा पडी धरणी । सब अचंभे देख करखी
। अर यह क्यों यो करे दावे ॥सती॥१८॥ शुद्धमें आइ अरुण नेत्र किये । देखके सब ज
न चौंक गये । यह क्या वलाय घर भरावे॥सती॥१९॥पुष्फ कहे सब लोकों भणी ।अबी
यह है दुःख यरि घ्रणी । कोइ छोडो मत धीरप दीरावे ॥सती॥२०॥ सतीसे कहे तेरी पुरे
[illegible] । क्या हम उपकार ऐसे फेडावे ॥सती॥२१॥
[illegible] को मत जाने

तूं मरके क्या कलङ्क चडाव
मच्छोदर से तुझे कढाडी । आराम किया औषध खवाडी । तूं मरके क्या कलङ्क चडाव
॥ सती ॥ २२ ॥ कोइ बलत्कार करे तेरे साथे । तो कोप कर तू उसके माथे । यो बहूत
प्रकारे प्रचावे ॥ सती ॥ २३ ॥ लोभी कामी और अन्याइ । मतलब लिये क्षमा खाइ ।
यह देख सती जरा सुख पावे ॥ सती ॥ २४ ॥ यो सुण सुस्ताइ सती वैठी । ढाल तीस
री तीसरे खण्ड मीठी । अमोल सोही सत्य मे स्थिर रहावे ॥ सती ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दोहा
॥धैर्य धरी सती चिन्तवे।कठिण बणा यह काम॥न मरना न भगना होवे।रहना पडेगा इस
धाम ॥१॥ खाये विन चालेही नही । मुझे करना शुद्ध अहार ॥ यहां हित शिक्षा देने मे
। कुछ नही निकले सार ॥ १॥ मौन भूषण हे मूर्ख का । दे ज्ञानी को सन्मान ॥ जिस-
ने जिह्वावश करी ॥ न होवे तस नुकशान ॥३॥ शुद्ध इच्छित अहार भोग कर । नित्य
करे प्रमेष्टी ध्यान ॥ लाज रखो अवला तणी । शील सहायक भाग्यवान ॥५॥❀॥ढाल
४थी॥ न्यालदे की देशी मे ॥ देखो द्रढता सतीयों तणीजी कांई। रहकर गणिका द्वार ॥
सत्य शीलकी रक्षा करीजी । करी सुबुद्धि उपचार ॥ देखो॥१॥ एकदा वैश्या चिन्तवेजी
कांइ । देख सतीको होश्यार ॥ पूछूं उत्पती जातडीजी । कैसे कियो मच्छ आहार ॥ दे-
खो॥२॥ देखे सतीको आयकेजी कांइ । आर्त रहीसो ध्याय॥ हंसती सन्मुख बैठकेजी ।

मधुरालाप बोलाय ॥देखो॥३॥ सती मौन करी रही कांइ । तव पुष्फा यों केय । ऐसा गु न्हा हम क्या कियाजी। जोवयण उत्तर नहीं देय ॥देखो॥४॥ तेरी चाकरी करी मुफतमे जी । हम दीना जीवत दान ॥ बोलणे सेही हलका हुवाजी । तूंरक्खे इतना गुमान ॥देखो॥५॥ और कछु पूछें नहीं हम । उत्पति तेरी दाख ॥ तात स्वसुर पक्ष गाम कीजी । जात नाम ऋद्धि माख ॥देखो॥६॥ ऐसी वातों करतें थकेजी कांइ । नलगे तेरे को पाप ॥ धीठाइ किये कैसे चालसीजी । नहीं कोइ स्वजन मा बाप ॥देखो॥७॥ सती अति चिन्ता तूर हुइजी कांइ । सोचे वचन उपाव ॥ बोले बिन चाले नहीं जी । पडी इस वश में आय ॥देखो॥८॥ नरमी सती कहे साभलोजी बाइ । मत वदो खोटी जबान ।ओर पूछो कहना सो कहूंजी । करुं काम म्हारे समान ॥सती॥९॥ यों सुन वचन सती तणजी कांइ । पुष्फ अति हर्षाय ॥ अवतो नरम हुइ खरीजी । मुझ घर भरेगा कमाय ॥देखो॥१०॥ नायका कहे तेरीवाणी से जी मुझ उत्पन्न होवे अति प्यार ॥ तूंकहे सो सब हम करेजी । कहे तुझ वीतक प्रकार ॥देखो॥११॥ कुसुमा दीर्घ विचारीयो जी कांइ । साच कहे होवे दुःख ॥ कल्पित सत्य कुछ कही करीजी । करुं जो होवे मुझ सुख ॥देखो॥१२॥ माता में वसती वसन्त पूरेजी कांइ । देवस्वरूप भरतार ॥ वहाण चड चले विदेश

मंजी । करन काइ व्यापार ॥देखो॥१३॥ [illegible]
यामेरे हाथ ॥ सोभी छूटा अशुभ उदयजी । तव मगर गटकात ॥देखो॥१४॥ आगे की
कुछ शुद्ध नहीं जी । अब एक करु अरदास ॥ निकालो मुझ घर बाहिरेजी । करूं मुझ
पति की तलास ॥देखो॥१५॥ कारमो दु.ख गणिका करीजी । काइ आँखे लाइनीर ॥ उ
र चम्पी तस यों कहेजी । हाहा दुःख वडवीर ॥देखो॥१६॥ मन मे जाने भला हुवाजी
काइ । मरा होगा इस कन्त ॥ अब यह निवारस हुईजी । मुझ इच्छासो करन्त ॥देखो
॥ १७ ॥ प्रगट कहे घर छोड केरी बाई । कहा जावे पति के काज ॥ यहा दुखः है तुझ
कौनसाजी।कर मन मानी मजाज॥देखो॥१८॥वसन्तपुर दूरा रहारी बाइ। कहा यह श्रीपुर
शेहर ॥ डूबे पति कैसे मिलेरी । कौन जाने तस खेर ॥देखो॥१९॥ ऐसेवयण सती सु-
नीजी कांइ । लागा जैसे तन तीर ॥ परन्तु मन मारी रहीजी । पर वश्य पनेधर धीर।दे
खो॥२०॥ पर मैष्टी ध्यान मौने धराजी भाइ । ढाल चतुर्थी मांय ॥ अमोल सुबुद्धि आगे
सूणोजी । किसविध शील बचाय ॥देखो॥२१॥❀॥दोहा॥ फिर पुष्पा कर धर कहे । सु
ण शाणी मेरीबात ॥ मदन रेखा तेरी वेन यह । भरीहे अङ्ग जात ॥१॥ सर्व वैस्या सि
र शेहरो । रुप रम्भा साक्षात ॥ सब जग जन मोहित किये । सुर नर खगादि चहात ॥

२॥ दोस्ती कर ताके सङ्ग । और सब मूलपरिवार ॥ याद करो मत कोइ दुःख । जो त
ज गये भर तार ॥३॥ खावो मेवा माल को । झीणे जरी वस्त्र पेंर ॥ भूषण सज रूमझुम
फिरो । लोरसीये चित्त फेर ॥ ४ ॥ ले लावा जोवन का । जो गया पीछां नहीं आय ॥
निकम्मी चिन्ता करी । यह अवसर म गमाय ॥५॥❀॥ढाल॥ क्षती कलङ्क के रागसें ॥
सुन ऐसे वैश्या के वचन । धिक् धिक धिक तुझेरी ॥ आग २ लगी सतीके तन ॥ धिक्
धिक० ॥१॥ रोशे कहे वश जादा मत बोल ॥धिक॥ तेरे बोलने से समझी तेरा तोल ॥
धिक०॥२॥ सवों से नीच तेरी जात ॥धिक॥ नहीं शरमाती करे खोटी बात ॥धिक॥३॥
निन्द्य २ निद्य अति तेरा नाम ॥धिक॥ तूंतो सब जगत् की गुलाम ॥धिक॥४॥ नहीं
छोडे भङ्गी भील चामार ॥धिक॥ तेरी सगंति रमेहे गंवार ॥धिक॥५॥ निर्दयी तेरीहीया
हें कठोर ॥धिक॥ मारे विन शास्त्र साहू चोर ॥६॥ मिथ्या बोलती जरान अचकाय ॥धि
क॥ ॥ रची दाव पैंच भोले को भरमाय ॥धिक॥७॥ चोरे हाथ में लगे जो माल ॥धिक
॥ तूं लगी जिसके लगा काल ॥धिक॥८॥ सेवे वाप बेटे नरतें अनेक ॥ धिक॥ तो भी
तृप्ति न धरे क्षीण एक ॥ धिक॥९॥ तंतो करे फक्त पंसेका प्यार ॥धिक॥ खोस लेती मा-
न जान धन सार ॥धिक॥१०॥ सरे मतलब दे प्यारे को [illegible] ॥धिक॥ महा कलधला

तेरी चाल ॥ धिक ॥ ११ ॥ रूप जोबन मद म रह छक ॥ ।धिक ॥ आफ् फूले जों क
रे । श्वामी भक ॥।धिक॥१२॥ कूड कपट की थेली अति गुढ ।धिक। ठगे है तेने शाणे रु
मुढ ॥ धिक ॥ १३॥ जगत भोगे तो न तृप्ति पाय ॥ धिक ॥ ज्यादा देवे सो कन्त ते-
रा थाय ॥ धिक ॥ १४ ॥ नीच कुरूप कुष्टि खोटा नर ॥ धिक ॥ ताको नाथ कर देवे
जो जर ॥ धिक ॥ १५ ॥ ब्रह्मचारी सती सन्त जग जोह ॥ धिक ॥ धरे द्वेष करे
तासे द्रोह ॥ धिक ॥ १६ ॥ जो फसे तेरे फन्द में आय ॥ धिक ॥ लगी उस घट घरमें
लाय ॥ ।धिक ॥ १७ ॥ जो तेरे दुर्गुण को बताय ॥ धिक ॥ तास शिर कलङ्क तूं ठाय
॥ धिक ॥ १८ ॥ इत उत जुगली तूं खाय ॥ धिक ॥ तुझे पोपे उस को तूं लडाय
॥ धिक ॥ १९ ॥ पर निन्दा मे विगोवे अवतार ॥ धिक ॥ गये निन्दे करे आते से
प्यार ॥ धिक ॥ २० ॥ क्षीण खुश क्षीण उदास रहे मन ॥ धिक ॥ लूंटा चहावे सब ज़
गत् का धन ॥ धिक ॥ २१ ॥ मन चीठी मीठी ऊपर सेरय ॥ धिक ॥ तेरी कला का
कौन पावे छेय ॥ धिक ॥ २२ ॥ यह मिथ्यात से भरा तेरा तन ॥ धिक ॥ तेरे जैसे
पापी जग में न अन्य ॥ धिक २३ ॥ ऐसे अष्ट दश पाप में तूं पूर ॥ धिक ॥
कहां तक कथूं तेरा नूर ॥ धिक ॥ २४ ॥ एक नर को ऑखों से समजाय ॥ धिक ॥

एक शेन कर घर में वोलाय ॥ धिक ॥ २५ ॥ एक को देखावे गुप्त अङ्ग ॥ धिक ॥
एक साथ करे मेज मे मद्रंग ॥ धिक ॥ २६ ॥ दीप शिखा जैसी तेरी काय । धिक ॥
होमे कामी तन धन पतंग आय ॥ धिक ॥ २७ ॥ सड कर मरे केइ तेरे जार ॥ धिक ।
दोनो लोक से करे तूं क्षवार ॥ धिक ॥ २८ ॥ ऐसे तेरे दुर्गुणों का न पार ॥ धिक ॥
कहांतक देना तुझ धिक्कार ॥ धिक ॥ २९ ॥ कहा तेरे को में पहले समझाय ॥ धिक ॥
निकालना नही खोटी कभी वाय ॥ धिक ॥ ३० ॥ कर काला मुख यहां से अब
॥ धिक ॥ फिर वताना न वदन यह कब ॥ धिक ॥ ३१ ॥ यों सती कहे कूसती को
सवाल ॥ धिक ॥ अमोल कही वैराग्य गमनी को ढाल ॥ धिक ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ दोहा॥
सती वचन पुष्पा सुनी । अंग २ प्रगटी झाल ॥ भडकी वन्हि घृत ज्यों । करी वदन
विकराल ॥ १ ॥ रहे २ सती सौभाग्यनी । जाने तेरे हाल ॥ नहीं दे है उत्तम कुल तणी
। है नीच कोइ चण्डाल ॥ २ ॥ विना वागकी घोडली । वोले आल पम्पाल ॥ जो तूं
हे सती खरी । तो दे दमडा डाल ॥ ३ ॥ मोल लइ साजी करी । कर औषध उपचार ।
खान पान वस्त्रादिके । किये तू मेरे क्षवा ॥ ४ ॥ नहीं तो चुप वैठी रही । वन्ध तन पा
लन पाल ॥ कहा करे जो हम तणा । तो तुझे भले है हाल ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ठी॥

धीज करे सीता सतीरे लाल ॥ यह. ॥ धीरज से काज सम्पजे रे लाल । उतावल होय विनाश हो सुजाण सती धीरज वस्तु सुख दाय है रे लाल । रख धीरज विश्वाश हो सुजण सती ॥ धीरज ॥ १ ॥ वचन सुणीयो पुष्पा तणा रे लाल । सती गइ मुरझाय हो सुजाणं सती ॥ उत्तर कुछ दे सकी नहीं रे लाल । चिन्ता पेठी मन माय हो सू ॥ धीरज ॥ २ ॥ बात सच्ची पुष्पा तणी रे लाल ॥ मैंने खाया इसका धन हो सु० ॥ अन्नवस्त्र इस के भोगवू रे लाल । जीवित रखा इस ने तन हो सु० धीरज ॥ ३ ॥ सेवा मुझ साधी अति रे लाल ॥ खमे दो वक्त कु बोल हो सु० ॥ तो भी यह नम्र हो रहे रे लाल । यह गुण इस के अमोल हो सु० ॥ धीरज ॥ ४ ॥ शील कदापि खण्डू नहीं रे लाल । जो कभी जावे प्राण हो सु ॥ शील विना इस जगत मे रे लाल । जीवित पशु प्रमाण हो सु ॥ धीरज ॥ ५ ॥ ऋण इसका फेडने भणी रे लाल । फूटी कोडीन मुझ पास हो सु० ॥ कैसे यह छोड दिया विना रे लाल । जो मे न पूरं आस हो सु० ॥ धीरज ॥ ६ ॥ मरने की चिन्ता मुझे नहीं रे लाल । पण कैसे रखूं पतिव्रत हो सु ॥ खाड कूव बीच आ फसी रे लाल । मुजसे नहो वे अकृत हो सु ॥ धी० ७ ॥ मात तात पर भव वसे रे लाल । पति छोड गये निराधार हो सु० ॥ धिक २ मेरे खोटे कर्म को रे लाल । किसका न जरा आधर हो सु० ॥ धीरज ॥ ८ ॥ उपाव कुछ सूजे नहीं रे लाल । दुःख से गइ घवराय हो सु० ॥ हृदय दुःख मावे नहीं रे लाल । उपर आयो ऊभ

राय हों सु० ॥ धीरज ॥ ९ ॥ किलकारी दे रोइ पडिरे लाल । करे अक्रन्द अपार होसु०
महिदाकाशे को नहींरे लाल । उसेयों लगा उसवार हो सु० ॥ धीरज ॥ १० ॥ दुःखणी
बहुत इस विश्वमेरे लाल । परन्तु मुझसीन और हो सु० ॥ हीन से हीन पुण्यणी हूइरे ला
ल । हाहा कर्म कठोररे सु० ॥ धीरज ॥ ११ ॥ ऐसा विलाप उसका देखकेरे लाल । कर
धर कहे पुष्फा तासरे सु० ॥ रोयां से राज मिले नहींरे लाल । शाणी हो बनी बेंडासरे
सु० ॥धी॥१२॥ क्या है तेरे मन में रेलाल । कहदे साची बात हो सु० ॥ कर्जा चुकाये
विन महारा रेलाल । छुटक कभी नहीं थातरे सु०॥धी॥१३॥ सती चिन्तवे पति सुखकोरे
लाल । जहां तक खबर न पाय हो सु० ॥ वहां लग यहांही रहणा पडेरे लाल । रखूं शी
ल करी को उपाय हो सु० ॥धी॥१४॥ देवीने कहाथा थोडे मांस मेरे लाल । संकट हो
वेगा दूरहो सु० ॥ उसमें कितनेक तो निकलगयेरे लाल । रहे सो खपावूंहो शूरहो सु०॥
धी॥१५॥ यो चिन्त वत बुद्धि केलवीरे लाल । कलिपवात बनाय हो सु० ॥ शील रक्षण स्व
जन भेटनेरे लाल । कहे तब सुणो मेरी माय हो सु० ॥धी॥१६॥ में तो दुःख से वली अ
तीरे लाल । न रहे बोलने की शुद्ध हो सु०॥ अखूट उपगार तुमारडोरे लाल । ते फेडन
न उपजे बुद्ध हो सु० ॥धी॥१७॥ जीवित दान तुमही दियोरे लाल । निरोगी करी मुझ

कायहो सु० ॥ द्रव्य खरच बहू तुम कियेरे लाल । कहां लग गुण कथु गा।य,हो सु०॥
॥धी॥१८॥ मे तो पूरी अभाग्यणीरे लाल। कोडी सत्तान मुझ पासहो सु. ॥ भोजन वस्त्र
भोगू तुम तणारे लाल। कर्ज कैसे फिटे फिकर खास हो सु. ॥धी॥१९॥ जो कूकर्म तुम दा
खवोरे लाल । सो मुझ से न कराय हो सु. ॥ क्योंकि कुलरीती हम तणीरे लाल। अ-
वी करी हम नाय हो सुणाज माता ॥धी॥२॥ इतनो कही चुपकी रहीरे लाल । तीस-
रे खण्ड पट ढाल हो सुजाण सती ॥ अमोल उपाव हाथे लगारे लाल । सुन वैश्या खु-
शी थाय हो सुजाण सती ॥ धीरज ॥२१॥दोहा॥ नायका तव हंसकर वदे । भली क-
ही तुम बात ॥ जो हे रीती तेरे कुलतणी । सो पाहिले करो जांत॥१॥ उपाय मेरा जहां
लगे । चलेगा उस मांय ॥ तहा लग सब पूरा करुं । फिर मानना मेरी वाय ॥२॥ कुसु
मीश्री कहे सुणीजीये । हम घर कुलकी रीत ॥ पती वियोगी जो हुवे । नकर परसे प्रि-
त ॥३॥ विहरणी पट मासतक । रहकर एकान्त स्थान ॥ चुगा डाले पक्षीयों भणी । ना-
ना विधका धान ॥४॥ जो याचक भदेशासे । दुःखी निराधार आय ॥ अन वस्त्र तस अ
र्पवे । यह मुझ से कैसे थाये ॥५॥❀ढाल७वी॥ बंधव बोल मानो हो ॥यह॥ सुणके वच
न सती तणा । वैश्या हर्षाइ हो॥तेरे कुल कीरीति सबी । पूरी हम करें बाइ हो ॥ भवि

का शील सुख दाइ हो ॥१॥ प्रभु कृपा हम घर विषे । कमी कछु नाहीं हो ॥ न्हाखो चु
गो पक्षी भणी । पोपो पन्थिके ताइ हो ॥भ॥२॥ फिरतो कहेण करो माहेरी । सच्ची कहो
मुझ ताइ हो ॥ सती कहे फिर मेर भणी । जागा अन्य न देखाइ हो ॥भ॥३॥ यों सुण
वचन कुटुम्बनी । अति आनन्द पाइ हो ॥ कहे मुझ वल्लभ तेरे विना । नही अन्य से
सगाइ हो ॥भ॥४॥ सप्त मजल हवेली सती भणी । दीनी रहने के ताइ हो ॥ चानणीव
डी तस ऊपरे । नीच शाळ सो हाइहो ॥भ॥५॥ नव रङ्ग नवो भलकी रह्यो । चित्रादि शो
भाइ हो ॥ सयना सन भूषण वस्त्र । दीना जो चहाइ हो ॥भ॥६॥ दास दासी रखीयेब
हु । जो लुच्चा सोदाइ हो ॥ सती पहोंचाइ ता विषे । सती देख हर्षाइ ॥भ॥७॥ इस ज
गह मे रहकरी । करुंगा चिन्त्याइ हो ॥ मिलावुं पतिरु तोता भणी । रखी व्रत द्रढताइ हो
॥भ॥८॥ यथा इच्छित धर्म तप करी । रही तन को सुकाइ हो ॥ दोंपहरे दासी दास कों
। धर्म कथा सुणाइ हो ॥भ॥९॥ सत्य शील तप दान की । महिमा दरशाइ हो ॥ दास
दासी धर्मीहुवे । रहे हुकम के माही हो ॥ भ॥१०॥ तास सहाय अन्य पुरूप के । नहीं
आवे निगाइ हो ॥ दुःख मे आधार हुवा जरा । शीले सब सम थाइ हो ॥ भ॥ ११ ॥
दान शाल स्थापन करी । अन्न वस्त्र भराइ हो ।। मागे सोदे विदेशी को । कीर्ति फेलाइ

हो ॥ भ ॥ १२ ॥ दूर देशान्तरो रहे । समण माहण आइ हो ॥ [illegible]
। जों पति गति पाइ हो ॥ भ ॥ १३ ॥ कोइ सुभाग्य मेरे नाथ की । शुद्ध देवे लगाइ हो
॥ योग्य समचार पुछा करी ॥ विदा करे तस ताइ हो ॥ भ ॥ १४ ॥ ऊंच आकाशी के विषे ॥ अनज
मेवा आदि जो खाइ हो ॥ तैसा पक्षी भक्ष बहु ॥ देवे पथराइ हो ॥ भ ॥ १५ ॥ अङ्ग अच्छादि एकन्त र
ही । पेखे दृष्टि जमाइ हो ॥ मणी चूड शुक आवे इहां । तो होवे सखाइ हो ॥ भ ॥ १६ ॥
निज २ भक्ष अवलोक के । बहु विहंग आइ हो ॥ चीडी कमेडी कागला । क्रौंचने
कावराइ हो ॥ भ ॥ १७ ॥ चकवा चास चण्डूल चील । उल्लु लोह काइ हो ॥ देवी मलारी
गणेसीया । इत्यादि बहुताइ हो ॥ भ ॥ १८ ॥ आवे खाये शन्कित वस्तु । बोले आपस मां
इ हो ॥ मनुष्य को दान देवे घणा । तामे कैसी नवाइ हो ॥ भ ॥ १९ ॥ पशुरू पक्षी को
पोपका । विरला जग मांइ हो ॥ धन्य सति भाग्य शालनी । पोषे हम ताइ हो ॥ भ ॥ २० ॥
विन अभिमान दे दान जो । फल बहुलो पाइ हो ॥ सती सुउपावे दाल सातगी । आगो
लक गाइ हो ॥ भ ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ शुक विहर दम्पति तणे । अतीदी गया [illegible] ॥
स्थान सुखद पाया अति । तो भी तहां न सुहाय ॥ १ ॥ सारण आहो निशते [illegible] । [illegible] पुर
के काम ॥ खाये मिले भावाजि को ॥ जीवूं तो मिले भाम ॥ २ ॥ तन पुर में [illegible]

१ पक्षी

रे। शुद्ध कहीं नहीं पाय॥ सुणे वातों नर पक्षी की। कोइ खबर दे आय ॥३॥ दूर रहो वा टूकडा। सू सज्जन एक प्रेम॥ नागर वेल के पत्र ज्यों। हरीत शुक रहे जेम ॥४॥ सज्जन सोही जानिये। जो संकट करे सहाय॥ वो सज्जन क्या काम के। सुख में आय दुःखे जाय ॥५॥❀॥ढाल८वी॥ राहेल्याहो आंबो मोरि रियो ॥यह.॥ सत्य से सुसगंति मिले। वीछडी-या हो मिले शील प्रसाद॥ द्रढतासे निश्चय फले। रन्वेसे हो होवे भक्ष स्वाद॥ सत्य॥१॥ याचक भूचर खेचरू। दान तणी हो सुणकर प्रसंस्य। दिन २ वृद्धि हुइ घणी। व्यापी कीर्ति हो विश्वमें बहु अंश॥ सत्य॥ २॥ सकून बहुत निज वोली मे। आपस मे हो करे ऐसी वात॥ नव जुवति लज्जावाति। पति विरहणी हो दिखती यह मात॥ सत्य॥ ३॥ उदारता धन्य इसकी खरी। यों वोलत हो गगन मग जाय॥ चूडामणी शुक ते समय। खबर कारण हो तस लारेथाय॥ सत्य॥ ४॥ सुन पर संशा साति तणी। चित चिन्तेहो यह कौन मति वन्त॥ जो पोपे खग पशु भणी। खे होवे हो कुसमश्री मुझ खन्त॥ सत्य॥५॥ मुझ मिलने के कारणे। पक्षी चुगावे हो कहाने समाचार। प्रथम शीघ्र देखूं जायके। फलित होवेहो मुझ सत्य विचार॥ सत्य॥ ६॥ अन्य पक्षीयोके पाछले। दे उतेजन हो तहा शीघ्र सो आय॥ खान पान विविध भाँत का। अवलोकी हो अति आश्चर्य पाय॥सत्य॥ ७॥

ध्याय ॥ सत्य ॥ १६ ॥ करि नीर नेणा भरी । कहे मात जी हों मुझ कहां से खबर ॥ आप छोडा वन में मुझे । तब से पेखूं हों नही पायो सबर ॥ सत्य॥ १७ यों सुनसा मुर्च्छित भइ । शुक सावध हो करी मधुर उचार ॥ रुदन्ति कहे कैसो करुं । श्वामी विना हो दुःख यह निवार ॥ सत्य ॥ १८ ॥ शुक भाइ आज तांइ मे । महा मुशीबत में रखा शील रतन ॥ गणी का सदन रेइ करी । रखी इज्जत हो मुझ व्रत ज्जतन ॥ सत्य ॥ १९ ॥ मुझ कारण इण वेसीया । खर्च कीधो हो तन द्रव्य अपार ॥ कर्ज कैसे फेडी सकूं ॥ कैसे होवे हो महारो छूट कार ॥ सत्य ॥ २० ॥ पक्षी चुगाइ तुझ भेटीयो । याचक पोषे हो नहीं भेटे श्वाम ॥ कर्ज प्रति दिन वड रह्यो । करी कैसे हो हूं अपूंगा दाम ॥ सत्य ॥ २१ ॥ पट महीना अभी बीतेंगे । तब पुष्फा हो आमंत्रे अनाचार ॥ नहीं माने वल जोरी से । यह करासी हो मुझ इज्जत खुवार ॥ सत्य ॥ २२ ॥ अब उत्तर देवण तणी । प्यारा शुक जी हो मुझ शक्ति नाय ॥ मृत्यु होतो दिखे माहेरो । सिर कर्जा हो विन मिले भरतार ॥ सत्य ॥ २३ ॥ हा देव हे शुक अहो प्रभु! इम बिल बिल हो कुसुमा अकुलाय ॥ शुक पण भेद समझो सहु । पशु जाति हो करे कैसो उपाय ॥ सत्य ॥ २४ ॥

शुद्धि कोश सूडा कने। हारा पूर स हा सब सता का सार॥ ढाल वस्तू खण्ड तृतीये। ऋषि अमोलक हो करे आगे विचार॥ सत्य॥ २५॥ ❀ ॥ दोहा॥ कीर सती पीर लायके। धीर धर कहे सुणो बात॥ वीर अंगना होय के। योग्य नहीं विलापात॥१॥ ज्यों इत ने दिन अति क्रमे। त्यों उलंघो कुछ दिन॥ मिलेगे नृप सुखी होयगे। सुरी शब्द चित्त चीन॥ २॥ मुझ शक्तिसी सेवा करी। करूंगा दुःख निवार॥ दो अपन सो से अधिक। कर बतावूंगा इस वार॥ ३॥ यो सुन सती धैर्यज धरा। सुवर्ण पिंजर मंगाय। तामे शुक जी स्थाप के। मनव ेर मेवा जीमाय॥ ४॥ लाइ निजासन मुखे। थाप पिञ्जर सुखे रेय॥ आधार दुःख में हुवा अति। जाणे बीते जेय॥ ५॥❀॥ढाल९ वी॥ इण सावरी या री पाल ऊभी दोय रावली॥ यह०॥ सुक संजोगे सती ताम। पाइ साता घणी॥ हो सुजाण पाइ साता घणी॥ अवसर अवलोकी कीर। अपनी दास्यो भणी हो सु०॥ अप०॥ कुसमश्री का चरित्र। यथार्थ सुणा वीया हो सु०॥ यथार्थ॥ खेदाश्चर्य सहु होय। धन्य सती ने जणावीया। हो सु०॥ धन॥ १॥ जाणी माह भाग्यवन्त। नृपकी अङ्गजा हो सु०॥ नृप०॥ ऐसे चतुर पक्षी जस दास। तो अन्य की क्या

किससे क्यो, लजो हो सु. ॥१२॥ कहना पुष्फा को समजाय। कहा तेरा करूं होसु. ॥ कहा ॥ परन्तु तेरे देखत । लज्जा नहीं पर हरूं, हो सु. ॥ लज्जा॥ आप रहो सुखे घर ।इच्छे तस भेजीजो । लेवूंगा इच्छित द्रव्य । बताकर सेज जो हो सु. ॥बत्ता॥ १३ ॥ मे रक्षक तुम शीललील करो यहां रही हो सु.॥लील ऊपरन असके कोय । युक्ति ऐसी करूं सही, होसु. ॥ युक्ति ऐसी सीखाय । शान्त सती को करी, हो सु. ॥ शान्त ॥ शुक वयणे विश्वास । सति हिम्मत धरी, हो सु. ॥ साति. ॥ १४ ॥ दूसरे दिन पुष्फा हर्ष । आकर कहे तन सजो, हो सु. ॥ आ. ॥ उत्सुक है वहुत लोक । आवे उसको भजो, हो सु. ॥आ. ॥ मन मानालो । धन छबीली छेल छेतरी, हो सु. ॥छ.॥ हम कुल की देखो मोज । और कहां ऐसी सिरि, हो सु. ॥ औ. ॥१५॥ सती कहे आप हुकम से । में कहां हूं दूरी, हो सु. ॥ इच्छे तस देवो भेज । हूं नाथ केह जूरी, हो सु. ॥ हूं ॥ परन्तु तुमारी शरम । मेरे से टुटे नहीं, हो सु. ॥ मेरे ॥ इस लिये आप इसस्थान । पीछे न आना फिरि, हो,॥ पी.॥ १६ ॥ धन से भरूं कोठार । इच्छा पूरी करूं, हो सु.॥ इच्छा ॥ यों सुन पुष्फा जाय । तूं कहे तैसे करूं ॥तूंयह हुइ नवमी ढाल । अमोल अखण्ड तीसरे, हो सु. ॥ अ. ॥ सुणो शुक के पर्यत । शील रक्षा करे, हो सु. ॥ शील. ॥१७॥❀॥ दोहा॥ ता समय एकव्य-

कह पुष्फा से मिलाइये । देता माग सो

वहारी यो । धन योवन मद मस्त ॥ कह पुष्फा से मिलाइये । देता माग सो करसे
पुष्फा सदन बतावइ । सुख से पधारिये माय ॥ सो आयो सती भवन में । दासीने दिया
अटकाय ॥२॥ पूछ के आवुं बाइ को । तहां लग रहो इसस्थान ॥दासी सती कोजा कहा
। पुरुष आया धनवान ॥ ३ ॥ सती कहै शुक को पूछीये । वो कहे सो करो तुम ॥ शुक
से पूछे चेटी तबा वो करे एसा हुकम ।. ४ ॥ पूछो जाकर जार को । देता सावसो
दीनर ॥ जो देवतो सुख से । रहो रात की पेहर चार ॥ ५ ॥ किंककरी कामी से कहा ।
वो भी अति हर्षाय । दे सोनेये सवा पाचसो । शाम को आवो चलाय ॥ ६ ॥ खुशी हो
सो घर गया । दासी सोनेया लेय ॥ दीना लाकर शुक भणी । अब सुणो शुक करे तेय
॥ ७ ॥❀॥ढाल १० वी ॥ जीवा वारूं छूं रे महारा वालहा ॥ यह० ॥ सुणीयो बुद्धि
चूंडामणी-शुक की । कैसे ठगे कामी के तांइ जी ॥ अभीनव युक्ति रच करी । साधे का
र्य चित्त लाइ ॥ सु ॥ १ ॥ पचीस मोर कने रखी । पाचसो दासी को देइजी ॥ कहे जा
देवो पुष्फा भणी । तुर्त आपीछी कर येही ॥ सु॥ २ ॥ दासीने तैसाही किया । पुष्फा अ-
ति हर्षाइ जी ॥ इतना द्रव्य नित्य आयगा । फिर मुझ कमी कुछ नाहीं ॥सु ॥ ३ ॥ शुक
लाइ सब दासियों । युक्ति ताम सीखावेजी ॥ नीचेकी चारों मजल में । रचना ऐसी र-

चावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ सहश्र पाक लक्ष पाक तेलको । पीठि मरदन सुख कारोजी ॥ देवो एक दीनार दो चातुर नाविको यों । तामें प्रहर एक गुजारो ॥ सुणो ॥ ५ ॥ दूजी मजल रसवती निपजावीये । मेंवे मशाले खूब संस्कारोजी ॥ जीमावो बीतावो एक जाम को । कर मनवार नशा चखाडो ॥ सुणो॥६॥ नवल नाटिक मजल तीसरी । रचो आश्चर्य भाव जणावोजी ॥ रीजवो नृत्य कला करी । सुखे पहरे एक गमावो ॥ सुणो ॥ ७ ॥ सङ्गित सामग्री चोथी मजल में । गान तान रागणीये लोभावोजी ॥ दिन कर प्रगट होवते । कहो कामी को घर को सिधावो ॥ सुणो ॥ ८ ॥ यों युक्ति सिखाइ दास दासी को । सर्व रचना दीनी जमवाइजी ॥ निज २ कामे सहु दक्ष किये । तामें दिनार वीसें खरचाइ ॥ सुणो ॥ ९ ॥ पांच रक्खी घर खरचको । दान शाला पक्षी को चुगावेजी ॥ चौकस लागे जो वीरकी । द्रव्य होवे वहां सर्व थावे ॥ सुणो ॥ १० ॥ शुक सुबुद्धि रचना रची । ताकी सतीतो खबर नहीं पाइजी ॥ सा एकान्त रही धर्म तप करे । धर्म ध्यान रुपति चित्त ध्याइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ अब कामी सो बाकी दिन रहा । बहूत मुशीबत से बीतायाजी ॥ श्याम होतेही सिणगट सजी । बनी बनडा सती सदन आया ॥ सुणो ॥ १२ ॥ पेसन्ते नाइ जी उठ कर । दे सत्कार ऊंचे बेठायेजी ॥ प्रथम शुकनेही मस्तक मूंडीया ।

ता आगे इच्छित कैसे पाय ॥ सुणो ॥ १३ ॥ तेल ऊगटणे मर्दते। शीत उष्णो दक से न्हवावेजी ॥ वस्त्र भूषण ठाठ जमावते । सहज पेहर एक वीतावे ॥ सुणो ॥ १४ ॥ ऊंचे चडतेही भट चट ऊठ के । करसत्कार पाटे वैठायाजी ॥ रजत पाट थाल हेमकी । तामे रतन कटोरा जमाया ॥ सुणो ॥ १५ ॥ रशाल पक्वान विविध भांती के । मेवे मशाले भरेइजी ॥ अलग २ सो चखावते । एक जाम वातों में वीतेइ ॥ सुणो ॥ १६ ॥ औषधी केफी अहार से । मद में मद मस्त बनाइ जी ॥ तीसरी मजल पहों चावीयो । जाने मिलेगा मन चाइ ॥ सुणो ॥ १७ ॥ वारङ्नाये घेरा तदा । वहुत हावे भाव दर्शाइजी ॥ नाटिकारंभ विविध कीया । तामे गये कामीजी मोहाइ ॥ सुणो ॥ १८ ॥ लटक मटक कर चटक से । एक प्रहर दीनी गमाइ जी ॥ अवही मिले प्राण बल्लभा । यों चौथी मजले चडपाइ ॥ सुणो ॥ १९ ॥ षोडश श्रृंगारे सिणगरी । तरुण सुन्दरी तस सत्कारी जी॥ वैठाया सुकुमाल सेज में । राग रागणी मधुर ललकारी ॥ सुणो ॥ २० ॥ तीनोश्वर सस-ताल से । सात ग्राम रागपट जाणोजी ॥ छत्तीस रागणी वाजिन्त्रसे। जाणे गगन गयोगर जाणो ॥ सुणो ॥ २१॥ नशा वाजिन्त्ररु राग की । संम्बन्ध प्रेम अपारो जी । गाती २ सा जव चुप रहे । तव छेल कहे धर प्यारो ॥ सुणो ॥ २२ ॥ एक ध्रुपद और सुणाइये।

यों तृप्ति सो नहीं पावे जी ॥ एतले अरुण दिशा हूइ । गानतान सो बन्ध करावे ॥ सुणो ॥ २३ ॥ कहे कामी से घर को पधारीये । सो चमकी देखे प्रकाशोजी ॥ कहे आज निशी छोटी हुइ । वीती देखत क्षीणक तमशो ॥ सुणो ॥ २४ ॥ काम न हुवो मन चिन्ती यो । करे पस्तावो जायो न जावे जी ॥ किन्नरी कहे हम क्या करें । तुमे राग अधिक सुहावे ॥ सुणो ॥ २५ ॥ हमतो गाती बन्ध हुइ । तूं मूर्ख चेत्या नाहीं जी ॥ चारो पेहर गमाये खल में । अव फिर आना न कदाइ ॥ सुणो ॥ २६ ॥ यों अपमानी तास निका लीया । धन गमा अति पस्तावेजी ॥ कहे अमोल ढाल दोपंचंमी । यों शील सती को रक्षावे ॥ सुणो ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चिन्ते ठगाया वाणीया । जो करु सच्ची वात ॥ तो हंसे सर्व मेरे को । मूर्खों में प्रगटात ॥ १ ॥ और ठगावे मेरे जिसे । तोही मुझ रहे माम ॥ मिथ्या लवी ललचाय के । अन्य भेजूं इस धाम ॥ २ ॥ सन्मुख मिला आ दोस्त तव । पूछे कहो निशी वात ॥ ऑखों अरुण है तुम तणी । तासे जगे सब रात ॥ ३ ॥ इस अनुमान से जानते । भोगे सुख तुम पूर ॥ वात तो वीती की- [illegible] ॥ [illegible] क्या दामले । सो करे संग्रह हम ॥ जरूर

जायंगे एक वक्त । जन्म सफल उस दम ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ ११ वी ॥ मिजवानी देशीमें ॥ भव्यजन सुणी ये हित आणी। हित आणी विपय दुःख दाणहो राज ॥हित आणी शील सुख खाणीहो राज ॥ भव्य ॥ आं ॥ ठगा ठगाने दूसरे भणी । ते विवहारी मुख मुल कानी होराज ॥ कहे हम मोजा निशीमे जोमानी । सो तो वचने न जाय वखाणीहो राज ॥ भव्य ॥ १ ॥ सा अपच्छरा महा मोहनी समानी । नही ता सम नारी जाग जाणीहो राज ॥ नाजुक लाजुक चन्द्रावदनी । देखी लाज पावे इन्द्राणी होराज ॥भव्य ॥ २ ॥ तीक्षण नयनी अमृत वयणी । रुपाली रु अति नखराली होराज ॥ हाव भाव कटाक्ष विकासे । वस्त्र भूषण झाक झमाली होराज ॥ भव्य ॥ ३ ॥ नागनवेणी मृगानयनी । अरुणोष्टी लघुदन्ति होराज ॥ कञ्चूकी तङ्गी पातली अङ्गी । विद्युत जैसी भल कन्ति होराज ॥ भ ॥ ४ ॥ नमणी खमणी रु मन गमणी । रमणी के सुख अनन्त होराज ॥ कहां लग वरणूं मुख एक है । जाणे जोहि भोगन्त होराज ॥ भ ॥ ५ ॥ पच्चीस पाचसो दीनी दीनारो । मुझ खट के सो नही लगारो होराज ॥ परन्तु विरह दुःख अतिही साले । नहीं इस जन्म में होय विसारो होराज ॥ भ ॥ ६ ॥ आज थामनी चा-

र जामनी । वीती घटिका समानी होराज॥ जो नर तास सङ्गत नहीं कीनी । तास ज-
न्म जानो अप्रमानी होराज ॥ भ ॥ ७ ॥ जीवेंगे तो कमावेंगे वहुते । धनतो
हाथ का मेलो होराज ॥ सफल जन्म हम आजही करीया । पेखी रजनी खेलो होराज
॥ भ ॥ ८ ॥ कारण एक गुप्त प्रकास्यू । सा एक नरको एक वारो होराज ॥ भोगी देखे
नहीं दूसरी वारो । अव मिलणा दुलभ प्रकारो होराज ॥ भ ॥ ९ ॥ इत्यादि खूब वातों
वनाइ । सुण श्रोता देखन उमाइ होराज ॥ आपस में वहूत वारे वंध्ये । हूं आज जास्यं
तूं तो कल जाइ होराज ॥ भ ॥ १० ॥ दूसरे दिन तैसे दूसरा आया । सवा पाचसो मो
हर दीराया होराज ॥ चारोंही पेहर तस तैसे विलमाया । देइ धका वाहिर कढाया होरा
ज ॥ भ ॥ ११ ॥ सों भी अति पस्ताया शरमाया । भेद पहिले का पाया होराज ॥ र-
खने माम मुखको मलकाया । मिला मित्रोंको आयाहो राज॥भ॥१२॥ पहिले सभीअधिक
वखाणी । सुन तीसरेकी इच्छा उमंगाणी होराज॥महा परिश्रम कर भूख प्यास सहे॥मेलीकरी मोहर
सोनानी हो राज॥भ॥१३॥ सो भी आया पस्ताके सिधाया । झूटीही माम जमायाहो राज ॥ सुन
घना आया एक सिवाया । आनेन दे घर माया होराज॥भ॥१४॥ नित्य पांच सो मोहर कमाया
उमंगदे जाय पस्ताया होराज ॥ मन्त्री वात कोइ नही प्रकाशे । रहे मनही मन मुरझायाहो

राज ॥ भ ॥ १५ ॥ सती का करजा थोडेही दिनो मांइ । शुकजी कीना अदाइ होराज ॥ देखके पुष्फा अति हर्षाइ । फिरे मेडक जैसी पोमाइ होराज ॥ भ॥ १६॥ विश्वास आयो हुयो मन चायो । रहेगा जन्म भर या इस ठयोहो राज ॥ प्रसङ्गानुपेत मिलास्युं भूपत । यों मनोराज बने मन मायो होराज ॥ भ ॥ १७ ॥ सती तो रह मजल सातमी । धर्म तप ध्यान ज्ञान माही होराज ॥ जों जो रचना रची नीचे तोते । ताकी खवर न कांइ होराज ॥ भ ॥ १८ ॥ चिन्ता तुरी मिलने को नाथ को । जव २ मन मुरझावे होराज ॥ तव २ शुक सुनावे हित वातों । यों सुखे काल गमावे होराज ॥ भ ॥ १९ ॥ पखीये मन्यो हृदयके मांही । सती कुसुमश्रीकी पुण्याइ होराज । जो सदा द्रढ रही सत्य शील व्रतमे । तो चिन्तित फलेरु फलसाइ होराज ॥ भ ॥ २० ॥ यह तृतिय खण्ड सती शील मण्डन । चरी कुसुमश्री की दशाइ होराज ॥ एकादश ढाल दाखी अमोल ऋषि । आगे सुणो वीरसेण की पुण्याइ होराज ॥ भ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ खण्ड सारांश—हरीगीत छन्द ॥ तीसरे खण्डे शील सम्बन्धे कुसुमश्री की कही चरी । तज्, मच्छोदर पुष्फा गाणिका घर अखण्ड रही शील सत्य धरी ॥ शुक पसाय कर्जा फिटाय । कामीकी कुबुद्धि हरी। यों शील पालो सुसङ्ग झालो । कहे अमोल वरो सुखसिरी ॥ १ ॥

र जांमनी । वीती घटिका समानी होराज॥ जो नर तास सङ्गत नहीं कीनी । तास ज-
न्म जानो अप्रमानी होराज ॥ भ ॥ ७ ॥ जीवेंगे तो कमावेंगे वहुते । धनतो
हाथ का मेलो होराज ॥ सफल जन्म हम आजही करीया । पेखी रजनी खेलो होराज
॥ भ ॥ ८ ॥ कारण एक गुप्त प्रकास्यू । सा एक नरको एक वारो होराज ॥ भोगी देखे
नहीं दूसरी वारो । अव मिलणी दुलभ प्रकारो होराज ॥ भ ॥ ९ ॥ इत्यादि खूब वातों
ग श्रोता देखन उमाइ होराज ॥ आपस में वहूत वारे वंध्ये । हूं आज जास्यं
जाइ होराज ॥ भ ॥ १० ॥ दूसरे दिन तैसे दूसरा आया । सवा पाचसो मो
होराज ॥ चारोंही पेहर तस तैसे विलमाया । देइ धका वाहिर कहढाया होरा
भ ॥ ११ ॥ सों भी अति पस्ताया शरमाया । भेद पहिले का पाया होराज ॥ र-
खने माम मुखको मलकाया । मिला मित्रोंको आयाहो राज॥भ॥१२॥ पहिले सभीअधिक
पूर्ण। । सुन तीसरेकी इच्छा उमंगाणी होराज।महा परिश्रम कर भूख प्यास सहे।मेलीकरी मोहर
राज॥भ॥१३॥ सो भी आया पस्ताके सिधाया। झूटीही माम जमायाहो राज ॥ सुन
सिवाया। आनेन दे घर माया होराज॥भ॥१४॥ नित्य पांच सो मोहर कमाया
या होराज ॥ सच्ची वात कोइ नहीं प्रकाशे । रहे मनही मन मुरझायाहो

राज ॥ भ ॥ १५ ॥ सती का करजा थाडही दिनो मांइ । शुकजी कीना अदाइ होराज
॥ देखके पुष्फा अति हर्षाइ । फिरे मेडक जैसी पोमाइ होराज ॥ भ॥ १६॥ विश्वास आ-
यो हुयो मन चायो । रहेगा जन्म भर या इस ठायोहो राज ॥ प्रसङ्गानुपेत मिलास्युं भूप
त । यों मनोराज बने मन मायो होराज ॥ भ ॥ १७ ॥ सती तो रह मजल सातमी ।
धर्म तप ध्यान ज्ञान माही होराज ॥ जो जो रचना रची नीचे तोते । ताकी खबर न
कांइ होराज ॥ भ ॥ १८ ॥ चिन्ता तुरी मिलने को नाथ को । जब २ मन मुरझावे हो
राज ॥ तब २ शुक सुनावे हित वातों । यों सुखे काल गमावे होराज ॥ भ ॥ १९ ॥
पेखीये भव्यों हृदयके मांही । सती कुसुमश्रीकी पुण्याइ होराज । जो सदा दृढ रही सत्य शी
ल व्रतमें । तो चिन्तित फलेरु फलसाइ होराज ॥ भ ॥ २० ॥ यह तृतिय खण्ड सती
शील मण्डन । चरी कुसुमश्री की दशाइ होराज ॥ एकादश ढाल दाखी अमोल ऋषि ।
आगे सुणो वीरसेण की पुण्याइ होराज ॥ भ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ खण्ड सारांश—हरीगीत छ
न्द ॥ तीसरे खण्ड शील सम्बन्धे कुसुमश्री की कही चरी । तज मच्छोदर पुष्फा गणिका
घर अखण्ड रही शील सत्य धरी ॥ शुक पसाय कर्जा फिटाय । कामीकी कुबुद्धि हरी। यों
शील पालो सस[illegible] झालो । कहे अमोल वरो सुखसिरी ॥ १ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी माहाराज की सम्प्रदाय के
वाल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज रचित
"श्री वीरसेण कुसुमश्री चरित्र" का वुद्धि भवन्ध
नामक तृतीय खण्ड समाप्तम् ॥३॥

—❀—❀—❀—

॥ ॥ श्रीजिनेश्वर सिद्धप्रभू । साधु जिनेश्वरी ...

रु चौ शरण धर्म ॥ १॥ दानादि चौ धर्म में । महा प्रभाविक शील ॥ सन्त सतीयोआ राध के । पावे हे दोनो भवलील ॥ २ ॥ कुसुमश्री मोटी सती । कलङ्कित कुलरेय ॥ निकलङ्कित हुइ शील से । हरा सभी का सन्देह ॥ ३ ॥ तैसेही वीरसेण सत्यवन्त । भये अम्बूनिधी पार ॥ सुखी हुवे दम्पाति मिली । वरणुं यही अधिकार ॥ ४ ॥ तदन्तर श्री वीरनृप । पली शुक के वियोग ॥ पवन वेग चले काष्टारूढ । धरते मन मे शोग ॥५॥ कहां जाता? कहां निकलता? । क्या होंगे आगे हाल?॥कहां प्रेमला? कहां सूभटा?। कैसे निर्गमें काल? ॥ ६ ॥ क्षार जले तन फटगया । वायु शीत थरराय ॥ क्षुधासे तन सङ्कोचीया । तृषा से कण्ठ सोषाय ॥ ७ ॥ जल कलोल से पटीया । क्षीण नभ[2] क्षीण पाताल ॥ उलट होत क्षीणक में । जाने आपहोंचा काल ॥ ८ ॥ दृढ गृहा कर पगतले । ताते न छूटा सोय ॥ ऋद्धि परिवार सम्पाति मिले । सुणियों श्रोतो सोय ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ला ॥ गोतम रासाकी देशीमें ॥ अयुष्य पुण्य प्रबल से। नृप दरीया की भरती के मांय ॥ छोलों से उछाले लेते । पडे किनारे पे आयजी ॥ अथडाने से मुरछायजी । छूटा पटिया पाणीमें वहायजी । वीरकीचड में फस रहायजी । शुद्ध बुद्धि रही कुछ नाय-

[2] आकाश

जी ॥ १ ॥ भवी पुण्य प्रवले सुख पाइये ॥ आ ॥ सिन्धूतटे तहा भृगूंपुरीजी ॥
नगर था सुखकार ॥ वसुपत नामे विवहारीया । तहा रहता था नामदारजी ॥ वो शौच
कारण उसवारजी । आया दरीयाव के किनारजी । देखे दिव्य स्वरूप कुमारजी । पडा शु
द्दी नहीं लगारजी ॥ भवी ॥ २ ॥ हृदय प्रेम जगा पुण्य से । और कूरूणा धर्म पसाय
॥ आये ताढिग शेठजी । झवके से लिया उठायजी ॥ धोकर शुद्ध करी तस काय-
उष्ण वस्त्र मे लपटायजी । किसी वाहण में सोलायजी । ले आये निज घर मायजी
। ॥ ३ ॥ सुकुमाल सुखदाइ सेजपर । सुलाये सुख माय । । राजवेद बोलाय के ।
इच्छित द्रव्य दीलायजी ॥ औषध उपचार करायजी । पथ्य तथ्य रखा सवायजी ॥
तासे मुरछा तस विरलायजी । जरा सावधानी जव आयजी ॥ वभी ॥ ४ ॥दृष्टि वि-
काश पेखनलगे । में कहा यहा आया चाल ॥ किसका सदनरू सेज यह । आंत मनो-
हर महालजी ॥ कोन करेहे मेरी रखवालजी । देखे शेठजी सामें तत्कालजी । शेठ मिष्ट व-
यण करे स्वालजी । क्यों वन्धु साता हे हालजी ॥ भवी ॥ ५ ॥ उपकारी वृद्ध पेछाणीयेजी
[illegible]ा बुद्धिवन्त ॥ कहे तात आप पसाय से । हुइ होवेगा सुख शन्तजी ॥ सुण वा

४८

मानन्तजी ।। भंवी ॥ ६ ।। पूरीसुख शनती हुवंजी । शेठजी घरके स्हे ॥ पूछे एकान्त में
वीरसे । तुम उत्पाति वीतक केहजी । कैसे हूवे सरीतोकन्त मेहजी। जात भॉत तुमारी क्या
छेहजी । में सुणने को उमंगेहजी । दिखते पुण्यात्म तुम देहजी ॥ भवी ॥ ७ ॥ वीर वच-
न सुन शेठ के । स्व गत दुःख आये याद । राज पाते शुक सम्मरे । तासे उपना चित्त
विपवादजी ॥ ऑखों से वर्पा वर्पादजी । हुइ आर्तवस्य अस्मादजी । मोहसे ज्ञान गया
अच्छादजी । वियोग की वडी है व्याधजी ॥ भवी ॥ ८ ॥ रुदन्ता कुमर देखके । शेठ चि
न्ते यह भागवान ॥ दुःख मुक्ते दिखते अति । तासे अकुलाये प्रानजी । अपन पूछे किस
कारन तानजी । तन लक्षण गुण प्रधानजी । वोलना पेरना खान पानजी । चाल किरिया
विनय विज्ञानजी ॥ भवी ॥ ९ ॥ है किसि गुणवन्त शेठकाजी । कुल दीपक सूपूत ॥ पु
ण्यवन्तो का विनकहे । देखाते हे गुण नूतजी । जों रत्नजोती अद्भूतजी । विन वोलेही मो
ल अखूटजी । तेसे इसमे गुण मजबूतजी। यह रक्खेगा हम घर सूतजी ॥ भवी ॥१० ॥
सम्पाति हे मेरे घर घनी । पण कोइ नहीं रखवाल ॥ पूर्व पुण्य प्रतापसे । यह मेरे घर आ
या चालजी ॥ नहीं दूसरा ऐसा जग वालजी । करेगा मेरे धनकी संभालजी । रखेगा मे
रा नाम वहालजी ॥ यो हिम्मत धरे धनपालजी ॥ भवी ॥ ११ ॥ वुचकार के कहे कुमार

जी ॥ १ ॥ भवी पुण्य प्रबले सुख पाइये ॥ आ ॥ सिन्धूतटे तहा भृगूपुरीजी ॥
नगर था सुखकार ॥ वसुपत नामे विवहारीया । तहा रहता था नामदारजी ॥ वो शौच
कारण उसवारजी । आया दरीयाव के किनारजी । देखे दिव्य स्वरूप कुमारजी । पडा शु
द्धी नहीं लगारजी ॥ भवी ॥ २ ॥ हृदय प्रेम जगा पुण्य से । और करूणा धर्म पसाय
॥ आये ताढिग शेठजी । झवके से लिया उठायजी ॥ धोकर शुद्ध करी तस काय-
जी । उष्ण वस्त्र मे लपटायजी । किसी वाहण में सोलायजी । ले आये निज घर मायजी
॥ भवी ॥ ३ ॥ सुकुमाल सुखदाइ सेजपर । सुलाये सुख मांय । । राजवेद बोलाय के ।
तस इच्छित द्रव्य दिलायजी ॥ औषध उपचार करायजी । पथ्य तथ्य रखा सवायजी ॥
तासे मुरछा तस विरलायजी । जरा सावधानी जब आयजी ॥ भवी ॥ ४ ॥दृष्टि वि-
काश पेखनलगे । में कहा यहा आया चाल ॥ किसका सदनरू सेज यह । आंत मनो-
हर महालजी ॥ कोन करेहे मेरी रखवालजी । देखे शेठजी सामें तत्कालजी । शेठ मिष्ट व-
यण करे स्वालजी । क्यों बन्धु साता हे हालजी ॥ भवी ॥ ५ ॥ उपकारी वृद्ध पेछाणीयेजी
॥ कुमर महा बुद्धिवन्त ॥ कह तात आप पसाय से । हुइ होवेगा सुख शन्तजी ॥ सुण वा
चन शेठ हर्षन्तजी । जाना कोइ नर महन्तजी । बोलने [illegible] [illegible]न्तजी । वीरजी भी सुख

शी हुवे साहूकार । प्रतार रुजगार हुवा आत । ५९ हर्ष शेठ तेवारजी ॥ ...
र लगारजी । करे धर्म दान हो उदारजी । खर्चे सुकृत्य द्रव्य शक्ति पारजी । दीया शुभमे
आवे सो लारजी ॥ भवी ॥ १७ ॥ मुक्त्यारी घरकी दीवीजी । शेठ कुमर को तमाम । स
व कहे पुत्र अच्छा मिला । थोडे दिन मे दीपाया नामजी ॥ है विनय आदि गुण धाम-
जी । काल कौशल्य विज्ञ अभीरामजी । यो पसरी कीर्ति गामजी । बहुत जन पाये विश्रा
मजी ॥ १८ ॥ यों सुख से काल गुजारतेजी । सो शेठजी धर्म वन्त । आयु तिथी पूरी हु
वे । आया तब भवका अन्तजी ॥ वेदनी के निमित से मरन्तजी । सज्जन परिजन आ-
मिलन्तजी । जाय स्मशाण देह जालन्तजी । आये फिर रुदन करन्तजी ॥ भवी ॥१९ ॥
वीरसेनादि सगे सबीजी । गुन उपकार करे याद । जगरीती सब साचवीजी । धर्म कर्म
विपादजी ॥ दिन थोडे में हुवा शमादजी । शेठ पदे कुमर को प्रसादजी । करे कृतव्य व-
त्तसा सादजी ॥ सादे अवसर गुग अगादजी ॥ भवी ॥ २० ॥ वीर नृपति वाणिक हुवे
जी । 'कुमरजी' नामे ओलखाय । एकही भव मे कर्म यह । नाना रूप जीवका बनायजी
। देखोप्रत्यक्ष इसही न्यायजी । डरो कर्म कमावा लज्जायजी । चौथेखण्ड ढाल पहली थाय-
जी । कहे अमोल आत्म समझायजी ॥ भवी ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ एकदा सूते कुमर

से पुत्र तूंमेरे जीवन प्राण ॥ तनुज करके मे रक्खूगा । नहीं पूछूंतेरा वयानजी ॥ तूं तो
दिखताहै गुन वानजी । मेरे आधार कोठी समानजी । यह घर सम्पत तेरी जानजी । दे तूं
ही मुझे खान पानजी ॥ भवो ॥ १२ ॥ द्वेता तेरे मेरे बीचमें । जरा न जानो आज से
भ्रात । मेरे घर ऋद्धिहै अति । परन्तु नहीं एक अङ्ग जातजी ॥ जानु तूं मेरा नाम दीपा
तजी । अव में करुं धर्म दिन रातजी । यह घर धन मुझे नही चहातजी । यों सुन वीर
जी हर्षातजी ॥ भवी ॥ १३ ॥ कृपा पिताजी आपकी मे रहा आप आश्रय आय ॥ आ
ज्ञा शक्ति सी आचरुं । नहीं धन की मेरे कुछ चहायजी ॥ आप प्रशादे कमी नहीं कांय
जी । यो रह सो शेठ इच्छायजी । बुद्धिसे काम चलायजी । ऊपर खुशी न मनकी जना-
यजी ॥ भवी ॥१४॥ कुसुमा मन में रमरही अरु तोता नहीं भूलाय ॥ याद आवे जब म
न विपे । तब एकान्ते आँश्रू गिरायजी । फिर ज्ञान से मन समझायजी । फिर निज काम
में लग जायजी । शेठजी को अन्तर न जनायजी । करे व्यापर द्रव्य कमायजी ॥भवी ॥
१५ ॥ महा विवेकी वीरजी । बैठे दुकाने हो होंशार । अन्यको काम करते देखके । सीखे
सो वाणिक व्यापारजी । लेन देन परिक्षा सारजी । नाफा टोटा व्याज उधारजी । करे चूके
नहीं लगारजी । कमाया द्रव्य अपारजी ॥ भवी ॥ १६ ॥ चतुराइ उनकी देखकेजी । खु-

दस हर्ष शेठ तवारजा ॥ नहीं घरकी फिक
शी हुवे साहूकार । प्रसार रुजगार हुवा आत । दीया शुभमे
र लगारजी । करे धर्म दान हो उदारजी । खर्चे सुकृत्य द्रव्य शक्ति पारजी । शेठ कुमर को तमाम । स
आवे सो लारजी ॥ भवी ॥ १७ ॥ मुत्त्यारी घरकी दीवीजी । है विनय आदि गुण धाम-
व कहे पुत्र अच्छा मिला । थोडे दिन मे दीपाया नामजी ॥ बहुत जन पाये विश्रा
जी । काल कौशल्य विज्ञ अभीरामजी । यो पसरी कीर्ति गामजी । आयु तिथी पूरी हु
मजी ॥ १८ ॥ यो सुख से काल गूजारतेजी । सो शेठजी धर्म वन्त । सज्जन परिजन आ-
वे । आया तब भवका अन्तजी ॥ वेदनी के निमित से मरन्तजी । भवी ॥१९॥
मिलन्तजी । जाय स्मशाण देह जालन्तजी । आये फिर रुदन करन्तजी ॥ धर्म कर्म
वीरसेणादि सगे सवीजी । गुन उपकार करे याद । जगरीति सब साचवीजी । करे कृतव्य व-
विपादजी ॥ दिन थोडे मे हुवा समादजी । शेठ पदे कुमर को प्रसादजी । वीर नृपति वाणिक हुवे
क्तसा सादजी ॥ सादे अवसर गुण अगादजी ॥ भवी ॥ २० ॥ नाना रुप जीवका बनायजी
जी । 'कुमरजी' नामे ओलखाय । एकही भव में कर्म यह । चौथेखण्ड ढाल पहली थाय-
। देखोप्रत्यक्ष इसही न्यायजी । डरो कर्म कमावा लज्जायजी । दोहा ॥ एकदा सूते कुमर
जी । कहे अमोल आत्म समझायजी ॥ भवी ॥ २१ ॥ ❀ ॥

जी । मध्यनिशी जागृत होय । कुटुम्ब जागरणा जगते । आर्त ध्यावे सोय ॥ १ ॥ चि-
कूमे लुब्धा परघरे । मानूं नाना माज ॥ राणी शुक कहां जारहे । न करी अभी तक खो
ज ॥ २ ॥ सुखी दुःखी भेले जुदे । है कैसे किसस्थान ॥ अब प्रमाद सोपरिहरी । हेरूं भू
तल म्यान ॥ ३ ॥ प्राते वैठे दुकान पर । प्रेक्षी तास उदास ॥ कमकर सज्जन चिन्तवे ।
विन नारि जगफास ॥ ४ ॥ इसलिये ऐसे सुज्ञ का । सुलक्षणी कन्या सङ्ग ॥ लग्न शीघ्रहि
कीजिये । जो रहे सदा धर रङ्ग ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ श्रीजिन आयाहो ॥ यह ॥
सज्जन मिलके हो, आये कुमर के पास, कहे अरदास एक मानिये ॥ लक्ष्मीशाह कीहो वि
टुषी वाला गुणवन्त । रूप इन्द्रिणी समानिये ।१। पाणी गृही जेहो । लाइजे घर मांय । लो
लावा धन योवन तना ॥ कुमरजी दाखे हो, अभी नहीं मुझ चहाय । पहिले कमावूं मे ध
न घना ॥ २ ॥ जाके विदेशे हो, पेखूं नव नवा स्थान । द्रव्य उपार्जी करूं नाम में ॥ यों
कह सजीयेहो । साकट तुरङ्ग अनेक । बहुत जन सङ्ग हित हाममे ॥ ३॥ खपता किराणा
हो, भरा बहुतही माल । शुभ महूर्त देखके चालिये ॥ मगधरू अंगजहो, वंग कुणाला गु-
जरात, पंजाबादिक निहालीये ॥ ४ ॥ ग्रामागर नगरेहो, पेख प्रसिद्ध गुप्त जाग, जानके कि
हांही प्यारि मिले । आर्य अनार्य हो, देखत देश विदेश, पत्ता तास जरान खिले ॥५॥ अति

घवराइहो । करने लगे विचार। कुसुमा विनसूना सुख सबी ॥ अब कहा ...
ले माकब, क्या कीजीये किससे अवी ॥ ६ ॥ मरेतो नाही हो, देवी वचन प्रमाण ।
नहीं तो मरणा निश्चय सही ॥ ७ ॥ कहां तक भोगूंहो विरह विति यह पूर । गत सुख
कब कर अवेगे ॥ अन्न न भावेहो नयने निद्रान आय । कब पती सुक पावेंगे ॥ ८ ॥
यह गत देखी हो, पूछे साथके लोक । क्या दुःख मन फरमावीये ॥ अट्ठम सट्ठम हो ।
कह कर ताको समझाय लोक माने सब साचीये ॥ ९ ॥ फिरते २ हो किसी पुण्य पसा
य । श्रीपुर सानिध आगये ॥ धसते पुरमे हो । शुकन हुवे श्रेयकार । जाने के गत द्र-
व्य पागये, ॥ १० ॥ सोले सिणगारे हो सोभागण पुत्र युत सामे आइ तब वीरहर्षियो ॥
भोजन पाणीहो, हय गय पायक सिणगार । पेखन्ते अम्रृत हीये वर्षियो ॥ ११ ॥ माल-
न आइहो, कर धर कुसुमकी माल। सुगन्ध पचरङ्ग पुष्पों खिले ॥ इस अनुमाने हो, जाना इ-
स पुरमांय । अञ्जना शुक निश्चय मिले ॥ १२ ॥ रोगी औषधी हो, मिले वन भूले सा-
थ । खेचर खग स्थान चौपदे ॥ क्षुधित भोजनहो, तृषित नीर ज्यों पाय । तैसे आधार
हुवा तस हृदे ॥१३॥ मध्य वजार मेहो । जोग जुगत जाग जोया भाडे लेकर तहां ऊत
रे ॥ मॉडी दुकान जहो । शोभित मोहित ग्राहक । व्यांपार नफाभी हुवे बहूरे ॥१४॥ ए

जी । मध्यनिशी जागृत होय । कुटुम्ब जागरणा जगते । आर्त ध्यावे सोय ॥ १ ॥ धि-
कमें लुब्धा परघरे । मानूं नाना मांज ॥ राणी शुक कहां जारहे । न करी अभी तक खो
ज ॥ २ ॥ सुखी दुःखी भेले जुदे । हे कैसे किसस्थान ॥ अब प्रमाद सोपरिहरी । हेरूं भू
तल म्यान ॥ ३ ॥ प्राते बैठे दुकान पर । प्रेक्षी तास उदास ॥ कमकर सज्जन चिन्तवे ।
विन नारी जगफास ॥ ४ ॥ इसलिये ऐसे सुज्ञ का । सुलक्षणी कन्या सङ्ग ॥ लग्न शीघ्रही
कीजीये । जों रहे सदा घर रङ्ग ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ श्रीजिन आयाहो ॥ यह ॥
सज्जन मिलके हो, आये कुमर के पास, कहे अरदास एक मानिये ॥ लक्ष्मीशाह कीहो वि
दुषी बाला गुणवन्त । रूप इन्द्रिणी समानिये।१। पाणी गृही जेहो । लाइजे घर मांय । लो
लावा धन योवन तना ॥ कुमरजी दाखे हो, अभी नहीं मुझ चहाय । पहिले कमावूं में ध
न घना ॥ २ ॥ जाके विदेश हो, पेखूं नव नवा स्थान । द्रव्य उपार्जी करूं नाम मे ॥ यों
कह सजीयेहो । साकट तुरङ्ग अनेक । बहुत जन सङ्ग हित हाममे ॥ ३॥ खपता किराणा
हो, भरा बहुतही माल । शुभ महूर्त देखके चालिये ॥ मगधरू अंगजहो, वंग कुणाला गु-
जरात, पंजाबादिक निहालीये ॥ ४ ॥ ग्रामागर नगरेहो, पेख प्रसिद्ध गुप्त जाग, जानके कि
हांही प्यारी मिले । आर्य अनार्य हो, देखत देश विदेश, पत्ता तास जरान्न खिले ॥५॥ अन्ति

घबाराइहो । करने लगे विचार। कुसुमा विनसूना सुख सवी॥ अब कहां जावूंहो । कहां मि
ले साकब, क्या कीजीये किससे अबी ॥ ६ ॥ मरेतो नाही हो, देवी वचन प्रमाण ।
नहीं तो मरणा निश्चय सही ॥ ७ ॥ कहां तक भोगूंहो विरह विसि यह पूर । गत सुख
कब कर अवेगे ॥ अन्न न भावेहो नयने निद्रान आय । कब पर्ता सुक पावेंगे ॥ ८ ॥
यह गत देखी हो, पूछे साथके लोक । क्या दुःख मन फरमावीये ॥ अट्ठम सट्ठम हो ।
कह कर ताको समझाय लोक माने सब साचीये ॥ ९ ॥ फिरते २ हो किसी पुण्य पसा
य । श्रीपुर सानिध आगये ॥ धसते पुरमें हो । शुकन हुवे श्रेयकार । जाने के गत द्र-
व्य पागये, ॥ १० ॥ सोले सिणगारे हो सोभागण पुत्र युत सामे आइ तब वीरहर्षियो ॥
भोजन पाणीहो, हय गय पायक सिणगार । पेखन्ते अमृत हीये वर्षियो ॥ ११ ॥ माल-
न आइहो, कर धर कुसुमकी माल। सुगन्ध पचरङ्ग पुष्यों खिले ॥ इस अनुमाने हो, जाना इ-
स पुरमांय । अञ्जना शुक निश्चय मिले ॥ १२ ॥ रोगी औषधी हो, मिले वन भूले सा-
थ । खेचर खग स्थान चोपदे ॥ क्षुधित भोजनहो, तृषित नीर ज्यों पाय । तैसे आधार
हुवा तस हृदे ॥१३॥ मध्य वजार मेहो । जोग जुगत जाग जोया भाडे लेकर तहां ऊत
रे ॥ मॉडी दुकान जहो । शोभित मोहित ग्राहक । व्यापार नफाभी हुवे बहूरे ॥१४॥ ए

कदा कुमरजी हो । देखन पुर चरी तांय । उपाय लिया गवेपणा ॥ उर्द्ध अधो प्रेक्षत हो, । सूक्ष्म दृष्टि प्रसार । परन्तु नहीं सुनी घोषणा ॥ १५ ॥ हुवे निराशी हो चिन्ते खुटी मुझ आय । अग्नि स्नान करना सही ॥ व्यर्थ मेनत हो । शकुन फोकट होय । कर्म अडावे जग मुझ यही ॥ १६ ॥ यों चिन्तवते हो । देखा बृद्ध नर एक । नमन करी बैठे ता कने ॥ सुज्ञवीर देखीहो । तेभी देता सन्मान । सन्मुख बैठ इस तरेह भने ॥ १७ ॥ कहां से आयहो । किस कामें क्या जात । वीर वसुपत नाम भाखीया ॥ पुनः वीर पूछे हो । आप नगरी की वात । आश्चर्य जनक सो दाखीये ॥ १८ ॥ बृद्ध प्रकाशे हो, यहां नयसार राजान, न्याय नीति मे निपुन घणा ॥ यहां व्यवहारी हो, बहुत वसे धनवान, धर्मात्म सुखी सज्जना ॥ १९ ॥ आश्चर्य कारी हो, और सुनावुं एक वात । पुष्फा गणिका एक यहां रहे ॥ रुपे अन्नोपम हो धन कला मेंसा पूर । तास घर में एक सती सहे॥२० ॥ है नव योवन हो । रुप इन्द्राणी लजाय । यों महीमा मेने सुनी घणी ।। उसको देखन हो । गये पुरुप अनेक । नदेख सूरती कोइ उसतणी ॥२१॥ सवा पांचसो हो । लेती नित्य दीनार । फिर घर में तस आनदे ॥ चारों पेहर मे हो, पर पंचोमें लोभाय । घर मे जे सतीपासन जानदे ॥२२ ॥ तसु गुण सुनने हो, । बहुता द्रव्य कमाय । होंस्य घरके हो

जाते तस घरे ॥ सब को रोवाइहो, खोसी लेती सब मल । निराश हो के पीछे फीरे ॥ २३ ॥ तोभी कामान्ध हो । जाते रहते हैं नाय । अचंभा यह मुझ हो रहा ॥ जैसा सुणीया हो । तैसा कहा आप तांय । नवा वृतान्त यह है यहां ॥ २४ ॥ यों सुण वीरजी हो । चले नमन कर तास । विचारते घर आ रहे ॥ चौथे खण्डकी हो । यह हुइ दूसरी ढाल । आगे रसीक कथा अमोलख कहे ॥ २५ ॥ दोहा ॥ एकान्त वैठे कुमरजी । करते मनसे विचार ॥ यह कुसुमा के अन्य है । कैसे करुं निरधार ॥ १ ॥ जो गुण वृद्ध मुख से सुने । सो पावे तस अंग ॥ परन्तु नट खट नार का । नकरे ते कदा सङ्ग ॥२॥ अहो आश्चर्य यह वडा । रही जार जारणी मांय ॥ सती वजे कैसे यह । देखनी तो सही जाय ॥ ३॥ देखें से मालम हुवे । सचके मिथ्या बात ॥ के ठगारी के है सती । कैसा मांडा उत्पात ॥ ४ ॥ तव गुसन्द्रिय नेत्र भुज । दाक्षिण के फरकाय ॥ मन मे समझे मुजप्रिया । निश्चय करुं अब जाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ री ॥ पोप दशम दिन ॥ यह० ॥ सुणीयो सुज्ञ जन विरह दुःख कारी । सजन मिले होवे सुख अपारी ॥यह०॥ निज अर्धङ्गा का निर्णय करन को । चले वीरजी वैस्या द्वारी ॥ हृदय उमट हर्ष स्वभावे । नयनों से वर्षन लगा वारी ॥ देखो ॥ १ ॥ पूछत कुसुमा घर वाहिर । तोता टंगा

१ ।।चलन वचन तस लगे सेन्दे से । तवतो शुक देखे दृष्ट प्रसारी ।। दे-
खो ने श्वामी हर्ष अति पामी । जाने के अमृत मेह वृठारी ॥ हृदय उमा-
या ऑर आया । उडकर आया सती वैठी जहांरी ॥ देखो ॥ ३ ॥ आज वधा-
इदेता अति सुखदाइ । स्थिर चित्त कर तुम सुनो अम्मारी ॥ श्वामी श्री वीरसेण राजिन्द्र।
आकर ऊभे हैं घरके द्वारी ॥ देखो ॥ ४ ॥ सूणत वधाइ सती हर्षाइ । धन्य २ आजका
दिन ऊगारी ।। हुइ होंशारु आधार हृदय में । जाणे मृत्युक तन हुवा जीवतारी ॥ देखो
॥ ५ ॥ तव दासी आके पूछे शुक को । कामी पुरुष विदेशी को आयारी ॥ अन्दर
आनेको सो चहावे । आप कहो सो कंहू तस जारी ॥ देखो ॥ ६ ॥ शुक कहे शीघ्र य
हां हि पधारावो। वोही हैं हमारे प्राण आधारी ॥ दासी शीघ्र आइ वीरपासे । नमी कहे च
लीये सती पासारी ॥ देखो ॥ ७ ॥ सुणी वयण नृप आश्चर्य धरते । चडने लगे हवेली
ऊपरी ॥ देखें कैसी सती है क्या कुसुमश्री । मन हृदय मिलने उमगारी ॥ देखो ॥
दासी पास सती पतीकी । आदर सत्कार कराइ सारी ॥ सुकुमाल सेजपे आकर
देखन सती है आवे कदारी ॥ देखो ॥ ९ ॥ सज सिणगार कुसुमश्री ततक्षीण
री आइ पति पासारी । सन्मूख अन्य आसन पर वैठी । शरमी दृष्टि [illegible]

री ॥ देखो ॥ १० ॥ विरह दुःख उरमे नहीं माया । नयनो से नीर बहे चौधारी ॥ वा-
क्या न निकले मुरजावे मन मे । हर्ष शोक की हुइ मिश्रतारी ॥ देखो ॥ ११ ॥ इतने
दिन महाविसि सहकर । आज नीठ देखे पति दीदारी ॥ तेह हर्ष है राणी के हृदय । प
रन्तु भेटीन जोग जागारी ॥ देखो ॥ १२ ॥ धिक २ मेरे निठारे कर्मों को । लाके वसा
इ वेस्या आगारी ॥ मेरे लायक यह नहीं स्थानक । रखे कलङ्क यह देवे लगारी ॥ दे
खो ॥ १३ ॥ कैसे प्राणेश परतीत लावे । समल के विमल यह मुझ नारी ॥ गुण ढंकन
यह आवास पाइ । कैसे शब्द मुख करुं उचारी ॥ देखो ॥ १४ ॥ अनेक विसि सही इ-
स तनसे । वोदुःख मुझ होता न लगारी ॥ परन्तु वसीआ कुटनी सदने । यह दुःख व-
हती हृदय कटारी ॥ देखो ॥ १५ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ टङ्क छेदो नामें दुःख । नादहंनच
घर्षणे ॥ एत्दैव महादुःखं । गुंजाया स्य तोलनं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ कहे सुवर्ण मुझ
ताडन तापन का । दुःख तो होता नहीं है लगारी ॥ परन्तु अति यह दुःख होता । मेरे
बरोबर तुलती गुंजारी ॥ देखो ॥ १६ ॥ हलकी सङ्ग से गुण नाश पावे । लागे लंछन ज
न फिट्कारी ॥ अहो जिनेश अब क्या करुं मैं । यों मन मे सती रही मुरझारी ॥ देखो
॥ १७ ॥ देख कुमश्री को तब वीरजी । अधोदृष्टि चिन्ते वारम्वारी ॥ यह कुसुमश्री है

के कोइ अन्य । निश्चय न होवै कोइ प्रकारी ॥ देखो ॥१८॥ मुझ प्यारी महा सुन्दर अ
ही । यह तो कूप कृष्ण रङ्ग वारी ॥ वो तो कुशल सर्व कला गुण सागर । यह मूरधा
सी कौनहे नारी ॥ देखो ॥ १९ ॥ वो तो निश्चय नरहे कदापि । आति अयोग्य यह वै
स्य आगारी ॥ जैसे कमल अग्निमें ऊगे । चन्द्र से नहीं वेषं अङ्गारी ॥ देखो ॥ २०॥
गणिका भी तो यह नजनावे । वैठी कुलवन्ती जो शरमारी ॥ दुवली दुःखणी दिखती
है मुद्रा । होवेगा विरहणी कोइ विचारी ॥ देखे ॥२१ ॥ नमिली मुझ धारी प्यारी । अब
मृत्यु मुझ आइ ढिगारी ॥ क्यों वैठा चल वीरस्वस्थान । यों वड २ ते ऊठ चलारी ॥ दे
खो ॥ २२ ॥ देखत वीरको जाते राणी । अतीही चिन्ता प्रगटी उरमांरी ॥ कहे अमोल
यह ढाल तीसरी ॥ सतीका शील होवेगा सहाय करि ॥ देखो ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥
शुक छत्त दण्डिपे रहा । देखे यह चरित्र ॥ दम्पाति मिल बोले नहीं । मिलवहु दिने-
विचित्र ॥ १ ॥ हर्ष समय दुलभ मिला । तामे करे यह शोक ॥ आश्चर्य आवत अति
मने । क्या चिन्ता अवलोक ॥ २ ॥ मधुर स्वरे उमगे धर । बोले नमी सुणो श्याम ॥
आश्चर्य मुझ उपजे अति । देखी आपके काम ॥ ३ ॥ यह अति आणन्दकी घडी । मि
लीमहा पुण्य जोग ॥ आप मन में अणन्द नही । क्या उपजा मन रोग ॥ ४ ॥ वीती

नात विशारदो । स्थिर करो चित्त उमंग ॥ विरह भञ्जो इच्छित करो यह नही कछु वि
रञ्ज ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ५ थी ॥ नित्य भतवन्दूहो बेकर जोडने ॥ यह० ॥ सुणीयो श्वा-
मीहो शङ्का छोडके । श्रीहरी केशरी कुमार । प्यारा प्राणका आधार । महारी काया का
सिणगार ॥ सुणीयो ॥ आं ॥ वाणी सुणकेहो वीर कुमारजी । ऊंचादेखे उसवार ॥ छत्त पर
ठे हो देखा सुवटा । पेछन्याजी तत्काल ॥ सुणीयो ॥ १ ॥ यह चूडामणी हो शुक
निश्चय सही । रहा इस स्थान के आय ॥ इस से पूछहो कुसुमश्री कहां । जानेतो देगा ब-
ताय ॥ सुणी ॥ २ ॥ सूवटा उडकेहो सन्मुख आवीया । किया लुली २ प्रणाम ॥ बैठा अ
ङ्कित हो सन्मुख छोगना । रहा हृदय हर्ष पाय ॥ सुणी ॥ ३ ॥ तस बुचकारीहो पूछे राज
श्वरू । कहो शुकजी समाचार ॥ तुझ श्वामीनीहो अब्बी है कहां । कहो जानतो सब प्र-
कार ॥ सुणी ॥ ४ ॥ यो सुणवाणी हो तसी मुरझागइ । हय २ कर्म कठोर ॥ कूस्थान
देखीहो पेहचानी मुझ नही । भ्रमवशे चित्त चोर ॥ सुणी ॥ ५ ॥ शुक तब भाखेहो प्रभु
भूली गये । थोडे दिनों केही मांय ॥ के कूछ केफसे हो भ्रमवश मे हुवे । नारि ओल-
खो नाय ॥ सुणी ॥ ६ ॥ यह तुम सन्मुख हा वैठी श्वामीनी । निरखो शङ्का दिलकी छो
ड ॥ सुख अर्पिजेहो देइ सन्माननें । करो बात बनो प्रेड ॥ सुणी ॥ ७ ॥ आप विरहसे

की गइ । करी अंबिल आदि तप ॥ दुष्कर स्थानेहो व्रत शुद्ध पालीयो । आप जप ॥ सुणी ॥ ८ ॥ यों सुण वाणीहो शुककी वीरजी । झांके पडे मन धिक २ जगमे हो लिया चरित्र को । पार कहो कौन पाय ॥ सुणी ॥ ९ ॥ राजकी पुत्रीहो यह कुसुमश्री । वेश्या पना स्वपन मांय ॥ न कभी जानती हो सो करने लगी । कुलपर स्याही फेराय ॥ सुणी ॥ १० ॥ मेरे जैसेकी हो यह पत्नी हुइ । फसी कुकर्म मे आय ॥ सिणगार सजके हो वणी मस्तज्ञनी । नित्य यों पर नर रींजाय ॥सुणी ॥ ११ ॥ मुझने रीजाने हो आइ सती वनी । कलङ्क कर के मुख श्याम ॥ धिक २ इसको लाज आइ नहीं । यहां भोगे नित्य अराम ॥ सुणी ॥ १२ ॥ इसकी सङ्ग से हो शुक बिगड गया । जाना पुत्र समान ॥ जार कर्म की हो दलाली यह करे । आखरि जात पशु जान ॥ सुणी ॥ १३ ॥ इन दोनों के हो मुख देखना नहीं । यहां ठेरना भी योग्य नाय ॥ धिक २ मुझको हो आया ऐसे घरे । यह मेरे कुल का लजाय ॥ सुणी ॥ १४ ॥ मेरे साथी जन हो बात यह जानेगें । तोफि टकारेंगे मोय ॥ किम अब उनको हो मुख देखावुं मे । रखे छूटे सङ्ग सोय ॥ सुणी ॥ १५ ॥ हाहा मेनेहो इसके कारणे । सहा एता परिश्रम ॥ झुरता निशदिनहो प्यारिशक भनी । उनके देखो यह कर्म

॥ सुणी ॥ १६ ॥ यों पस्ताते हो क्रोधे असुरत्त भये । फेक दिया शुक का दूर ॥ अङ्ग
मरोड केहो शीघ्र ऊभे हुवे । जाने को प्यो तव भूर ॥सुणी १७॥ यह गत देखके हो स
ती विलखी हुइ । आडी फिरी कर जोड ॥ जाने न देवुंगा हो प्राणके पाल का । दाख
वोजी मेरी खोड ॥ सुणी ॥ १८॥ क्यों रीसाने हो शाणे साहीवा । जीती आपके आधा
र ॥ विन कुछ पूछे हो विरहणी तज करी । जाते विन मोत मार ॥ सुणी ॥ १९ ॥ जो
कभी सूवर्ण हो पडे विष्टा विषे । तोते पीतल नहोय ॥ यों कुस्थान में हो मुझ को देखके
। वेम म लावोजी मोय ॥ सुणी ॥ २० ॥ वीरजी भाखे हो मलीन सुवर्ण भणी । देह
अग्नि माहें तपाय ॥ यों बोलन्ते हो तुर्त उतरी चले । चौथी अमोलक गाय ॥ सुणी ॥
२१ ॥ ॥ दोहा ॥ नजीक रायके मेहल में । कोला हल असराल ॥ हुवा सुना सो वीर
जी । जाते फिरे तत्काल ॥ १ ॥ सुनते कान लगायके । दोडो छोडावो मोय ॥ फासे
फसा अति विषम है । दया करो मुझ कोय ॥ २ ॥ सुन विसमाये वीरजी । दयालु दिल
हुवा दुःख ॥ जावुं देखु सुखीया करुं । जो मेरा चले वहां रुख ॥ ३ ॥ पती गये सती
मुरछा लही । हो सावध करे विलाप । हाहा दैव अब क्या करुं । घर आगये पतिआप
॥ ४ ॥ सुवर्ण तापे शुद्ध हुवे । सो कही धीज कराय ॥ तेह्री करण तैयार में । परन्तु

करो   ाय ॥ ५ ॥ (¹) ॥ ढाल ५ वी ॥ नागजी सूतो खूंटी ताणरे ॥ यह० ॥ नाथजी अबला के आधाररे वाह्ला । दयालू निर्दयी क्यों हुवे हो नाथजी ॥ नाथजी इतनादिन दुःख सेही रे वाहला । आप आधार मेनें खूवेहो नाथजी ॥ १ ॥ ना० ॥ विन पूछे कोइ बातरे वा० । तृटकीने क्यों परहरीरे ना० ॥ ना० आप मिलने किये केइ उपावरे वा० ॥ सो सब अब हुवे अरीरे ना० ॥ २ ॥ ना० आपपे धर विश्वासरे वा० । गुस ऋद्धी तात की दाखवीहां ना० ॥ ना० दिलायो तात को राजरे श्वामी । अन्तर जरा न राखवी हो ना० ॥ ३ ॥ ना० कुसुमपुरी रन माय रे श्वामी । विसि सही सङ्ग आपके हो ना० ॥ ना० वाहणे आप वियोगरे श्वामी । झम्पा पात करी ताप के हो ना० ॥ ४ ॥ ना० आपके दर्शके काम रे श्वामी । मच्छोदर जीवती रही हो ना० ॥ ना० पर वश्य गणिक गेहरे श्वामी । आइ में कर्म वही हो ना० ॥ ५ ॥ ना० आप विना अन्य ताय रे में । मन कर के इच्छा नहीं रे ना० ॥ ना० वैस्या से बची जिस रीत रे वहाला । सो बात केसे जावे कही रे ना० ॥ ६ ॥ ना० खेग[1] दान के प्रायोग्य रे में । शुक राजने मिलावीया रे ना.॥ना. इन बुद्धि प्रचार रे मेरा शीलरे अरु इज्जत प्राण बचावीया रे ना.॥७॥ना अति आशासे ध्यावतारे ।आप आकर यहां दर्शन दियारे ना० ॥ ना० भोजन परुसीले

[1] पक्षी

खेचरे । त्या आस निरासा कर गया रे ना. ॥ ८ ॥ ना. आपका नहीं कुछ दोष रे वहा
ला । मैं मेरे कर्म कठीण अती रे ना. ॥ ना. मिल २ होय वियोगरे श्वामी । मुझको दे
ख फिर जावे मति रे ॥ ना. ॥ ९ ॥ ना. मेनेदी होगी अन्तर रायरे प्रभु । पर भव में कि
सी जीव कोरे ना ॥ ना. उस सेही वारम्वार रे मे । भोगवती ऐसी रीव कोरे ना. ॥१०
॥ ना. भरमा के स्त्री भरतार रे । आपस में लडाइ यारे ना. ॥ ना. उनका किया वियो
गरे वो कर्म उदय मुझ अनियारे ना ॥ ११ ॥ ना. नर मादी का विजोगरे मैं । पशु वि
छोडा के कियारे ना. ॥ ना पक्षीयो पीजरे मायरे मैं । रोक रखे संतावीयारे ना. ॥१२॥
ना. भाङ्गे सती सन्त व्रतरे मैं । वलत्कार छेला वणी रे ना. ॥ ना. दलाली व्यभिचार की
मे । करी होगी भडवा तणी रे ना. ॥ १३ ॥ ना. हो विद्या पतिने वियोगरे मैं । अन्य न
र सङ्ग जारी रमी रे ना ॥ ना. हो पर दारा का लुब्धरे मैं । अत्रस सेव्या अत्रहीरे ना.
॥ १४ ॥ ना. अनङ्ग क्रिडा में लुब्धायरे मैं । कुचेष्टा करी के हांसी रे ना. ॥ ना. ले ले
भङ्गे व्रतरे मैं । लज्ज नहीं धारी किसीहो ना. ॥ १५ ॥ ना. इत्यादि पातक अति रे मैं ।
भवान्तर में किये सही रे नाथ. ॥ ना. जिससे वसी वैश्या गेहरे मैं । वो कर्म तो छोडे
नहीं रे नाथ. ॥ १६ ॥ ना. अब माफी मांगू देवरे । जरा रांकडी पर दयाकी जीये रे ना

॥ ना. सब पाप कीजिये नाशरे । मुझ दुर्गुणी की दया लीजियेरे ना. ॥ १७ ॥ ना.यों
देख रुदन्ती सती भणीरे तब । शुक अति व्याकुळ भयोरे ना. ॥ ना. आपड्यो सती च
रण मायरे । गद्‌गादित हो यों कयोरे ना. ॥ १८ ॥ मातजी आती मेलो दूररे मेरी
अर्जी एक चित्त में धरोरे मातजी ॥ मात. नृपति इसही पुर मांयरे में मिलकर वैम करुं
गा परोरे मा. ॥ १ ॥ मा. सत्य वीतक दर्शायरे में । ले साथ यांही आवूंगारे मा. ॥ मा
सत्यका वाली सहिवारे बाइ आखिर सत्यतिरे वतावूंगारे मा. ॥ २० ॥ मा. ॥ अपन ने
खोटे किये नहिंजी बाइ । मन तन से हैं निर्मळेरे मा. ॥ मा. वक्तरे होवेगा धीज रे त
व शील सत्य सब अटकळेरे मा. ॥ २१॥ मा. करो देव गुरुका ध्यानरे बाइ । अभिग्रह म
न दृढधरियेरे मा.॥मा. जिससे शीघ्र संकट टलेरे अब हिम्मत नहिं जरा हारियेरे मा.॥२२॥
भाइजी ऐसे वचन सती सुणीजी कांइ । ध्यान किया एकान्तमेंहो भा. ॥ भा. अमोलक
हे ढाल पंचरे अब आगइ दुःख के अन्त में हों भाइ भा. ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ हाक
सुन कर वीरजी । शीघ्र गति कर चाल ॥ राज महेल मे आय के । देखे दृग चौफाल
॥ १॥ मुख्य जे राज शभाविषे । नयसार राजान ॥ जकड बन्ध बन्धा पडा । लोटे मीने वि
न पाने ॥ २ ॥ चक्षुवक्र दोनों हुवे । मुखपर आये फेण ॥ वे शुद्ध पाडे चीस सो । और

क
५५
पानी
राँगों

५५
१. ऑखोमे
२ मच्छी

न निकले वेण ॥ ३ ॥ वाहा २ करे आति । जाने क्षीण में मर जाय ॥ जस मरण क
स्थान में । पशु जात अरडाय ॥ ४ ॥ स्वजन सामन्त परिवार सव । परज पुरजन लो
क ॥ दोड २ आते तहां । जमा अतीही थोक ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ वी ॥ गाफल म
त रहे ॥ यह० ॥ दगा मत कर२, मेरी जान दगा मत कर रे । सगा कभी दगा नहीं
होवे । नहाक क्यों दुःख वीज को वोवे, दगा ॥ आं ॥ यह रचना देख राजा री । सब
आश्चर्य पाये भारी । चिन्ते कोइ देव कोपारी ॥ अन्य कुछ राजाने कीया कि-जिससे
ऐसा कष्टलीया ॥ दगा ॥ १ ॥ नगर में डंडोरा पीटाय । राजा अति दुःख से घवराया
। जो वेदना देत गमाया ॥ सो इच्छे सोपावै । सुन घने करामाती आवे ॥ दगा ॥२॥
वैद्य वायु शीत दर्शावे । केइ औषधी पावै लगावै । तोभी रोग कोन गमावे ॥ जोतपि
यो गृह दोष दाखा । दिया उनने दान जो मुख भाखा ॥ दगा ॥ ३ ॥ मंत्र जंत्र तंत्र
वादी । जडी डोरा पुटलिया वान्धी । झाडे उवारेणे किये आदि । भोपा द्युण देव दोष के
ता । पूजा आदि देमांगे जेता ॥ दगा ॥४॥ इत्यादि उपाव घना कीधा । पण एकन
कार्य सीधा । सबों ने उत्तर यह दीधा । जिनोका किया जोइ पावै । कर्मों का रोग को
गमावे ॥ दगा ॥ ५ ॥ ऐसे वचन राजाने सुणीया । तब पातक स्मर सिर धुणीया । इ

रसदो लगाय ॥ ३ ॥ घां रुजण जडीका तदा । रस मसला तस अङ्ग ॥ रुधीर रुका घा
वज मिटा । सुष्टपुष्टे हुव नत रङ्ग॥४॥नयसार पूछे तदा । कौन बन्धे कारण काय ॥ वीत
क सत्यक कथा कहो । तव खेचर दर्शाय ॥ ५ ॥ ❀ ढाल ७ वी ॥ अहो पिऊ पंखी-
डा ॥ यह० ॥ अहो सुणो नृपतीजी । गिरी वैताढे धूरु दिशाके मांय जो । महीला पु-
री नो हूंतो पती लली ताङ्ग मेरे लो ।अहो सुणो नृपतीजी । लीला क्रान्ति मुझ नारजो
। गुणवन्तीरु शोभित अङ्गो पाङ्ग मेरे लो ॥ १ ॥ अहो० ताकी महीमा सुन कानजो ।
विद्युत नामे खेचर माह्या तास सेरे लो ॥ अहो ॥ एक दिन क्रिडा काज जो । मे वाग
गया में सेना सङ्ग हुलास सेरेलो ॥ २ ॥ अहो० ॥ वो कामी मुझ अन्तर देख जो ।
मेरा रुप बनाके गया मुझनारि पेरेलो ॥ अहो० ॥ भोलीं कों भरमाय जो । लेगया वन
में कुबुद्धि कर प्यारी पेरेलो ॥ ३ ॥ अहो. ॥ में आया फिर मेहल माय जो । निज न
यने नही देखी लीला कारी नेरेलो ॥ अहो० ॥ चौकस करी सब स्थान जो । तब एक
चेटी बोली सुणो अवधारी नेरेलो ॥ ४ ॥ अहो० ॥ अभीही आयेथे आपजो । लेराणी
जी बैठ विमाने सिधावी यारे लो ॥ अहो० ॥ फिर आकर एकले आपजो । देखो राणी
यह आश्चर्य मुझ मन पावीयारे लों ॥५॥अहो०॥ यों सुण दासी बचन जो । घबराया में

भागो तास देखन भणीरे लो ॥ अहो० ॥ फिरतो वन गिरी माय जो । इसही वनमें आ
देखी मेहल शोभा घणीरे लो ॥ ६ ॥ अहो० ॥ दोनो सूते सुन्दर सेज जो । भोगवे इ
च्छित भोग नडर जरा परेरे लो ॥ अहो० ॥ मुझ तन व्यापो क्रोध जो । हंकार्या तस ते
भी मुझ देखा निजरेरे लो ॥ ७ ॥ अहो० ॥ कोप्यो मुझ पर जोर जो । मुझे मारने मे
रे सन्मुख आवीयारे लो ॥ अहो० ॥ लीला क्राति उसवार जो । शरमाणी घवराणी दुः
ख नही भाइयोरे लो ॥ ८ ॥ अहो० ॥ करा रुदन असराल जो । मैं मोह्यो तस सन्मु-
ख देखा प्रेमसेरे लो ॥ अहो० ॥ तो मेरी निघा चुकाय जो । टूट पडा मेरे पर वन्ध व
न्धे अतीरे लो ॥ ९ ॥ अहो० ॥ घसीटतो यहां लाय जो । वान्धि इसही वृक्षको वो भा
गी गयारे लो ॥ अहो० ॥ गया होगा उसही स्थान जो । क्या करेगा अवला का न-
जावे कयारे लो ॥ १० ॥ अहो० ॥ तुम किया अति उपकार जो । अव आधार वन्धा
है मुझ मन में घणारे लो ॥ अहो० ॥ अव अपन दोनो मिलजो । पराजय करेंगे उस
शत्रु तणारे लो ॥ ११ ॥ अहो० ॥ यों कर एका दोय जो । वनागार में आदेख छिपके
रहेरे लो ॥ अहो० ॥ लीलाक्राति उसवार जो । धिक्कारण कर मुद्राते दुष्टसे कहेरे लो ॥१
२ ॥ अहो० ॥ अरे तुझ क्रोडों धिक्कार जो । मुझ भोली को ठग कर पात्ति वृत भागीयोरे

ना किया भिक्षुक जो । मेंरे करणी फल स्त्री होना यह महारी रे लो ॥ अहो. ॥ वीचमें भव हुवे हैं अनेक जो । विद्युत प्रभहुवा नारीहरी तिण थायरी रे लो ॥ २८ ॥ अहो. ॥ दम्पाति वाणिक भ्रम जो । ललीताङ्गने लीलाकृति दोनों थयारे लो ॥ अहो.॥ निदानके पसाय जो । हरण करी भोगो कर्म फल छुटाथयार लो ॥ २० ॥ अहो. ॥ आयुजिस प्रकारहो । वन्धा तेसा भोग के लीलाकृति मरी रे लो ॥ अहो. ॥ छोडो चिन्ता वैर जो । निर्मळ मने मिल वैर विरोध दो पीरहरीर लो ।३०।अहो.। यो सुण मुनि सद्बोध जो । विद्युप्रभ वैरागी हुइ दीक्षी गृही रे लो ॥ अहो. ॥ गयामुनिवर के साथ जो । ढाल सातमी ऋषि अमोलक ऊचरी रे लो ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ नयसार ललीताङ्क मिल । लीलाकृति शरीर ॥ अग्नि संस्कार कर निवृते । मेटी मन की पीर ॥१॥ खेचर कहे भूचर भणी । तुम उपकार अपार॥तेतो फेडी सकूं नहीं । पण कुछ शक्तिसार ॥ २ ॥ नभ गमनी विक्रोवणी । दोनों विद्या गृहो राज ॥ अति अग्रह इण सो गृही । गयो खेचर निज जगाज ॥ ३ ॥ देख प्रभाव दो मन्त्र का । ललचाया इस मन ॥ अन्यभी ऐंसे मिलान को । करन लगा भ्रमन ॥ ४ ॥ अश्व शैया रूशुककी । सुनी पर संस्य कान ॥ तत्क्षीण गया रत्नपुरी । तुम पीछे लगा राजान ॥ ५ ॥ कुसुमपुरी के वनमे । रचा इन इन्द्रजाल ॥ विन गुन्हे तुमें सन्तापीया । हरी शैय्या अश्व मा

ल ॥ ६॥ इस मौके इस दुष्ट को । लेवो मारकर वैर ॥ मे तो अब छोडूं नही। हुइ बहु-
तही देर ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ वी ॥ श्वामी सुणीयें' ॥ यह० ।। सुगुणा सुणीयें! गुणी
हो परगुण लुणीये ॥आं॥ यो कहे देवी मुद्गल सहाइ । नृपको मारने धाइ ॥ इस दुष्टका
पृथ्वीसे । सहन होताहै नाही ॥ सुगु ॥ १ ॥ अतिदीन वचने नयसार बोले । वीर
शरणे तुमारे ॥ सुणतेही वीर फिरे देवी आडे । माताजी इसे मत मारे ॥ सुगुणा ॥
२ ॥ आपहो समर्थ यह अति असमरथ । आप नाथ यह अनाथो ॥ कीडीके ऊपरक
त्रडाना । युक्त कदापि न देखाते ॥ सुगु ॥ ३ ॥ आप वडा बड पनने विचारो । र
। कीजे ॥ इतनीही अर्जी मेरी मान्य कर । अभय दान इसे दीजे ॥सु॥४
वीर वाणी श्रवण कर । देवी आश्चर्य अति पाइ ॥ गुण कर्तापे गुणकरे सब
। उसमें क्या है नवाइ ॥ सु ॥ ५ ॥ महा दुःख दाता दुर्गुणी शत्रु । तास दया
छोडावे ॥ धन्य २ धन्य हरी केशरी नन्दन । तुम जोडे कौन आवे ॥ सु ॥ ६ ॥ इ
न छोडती क्रोडो उपावे । पन तेरा वचन न लोपाइ ॥ नहीं मारुं मुद्गल पडा रहो ब-
न्धन । मरेगा योंही तडफडाइ ॥ सु ॥ ७ ॥ विकराल रूप मिटा निज देवी । दिव्य रु-
प प्रगट करीया ॥ होकर संतुष्ट कहे वीरसे । मांगे सो देवु इणवीरीया ॥सु०॥ ८ ॥ वीर

ना किया भिक्षुक जो । मेंरे करणी फल स्त्री होना यह महारी रे लो ॥ अहो. ॥ वीचमें भव हुवे हैं अनेक जो । विद्युत प्रभहुवा नारीहरी तिण थायरी रे लो ॥ २८ ॥ अहो. ॥ दम्पाति वाणिक भ्रम जो । ललीताङ्गने लीलाकृति दोनों थयारे लो ॥ अहो.॥ निदानके पसाय जो । हरण करी भोगो कर्म फल छुटाथयार लो ॥ २० ॥ अहो. ॥ आयुजिस प्रकारहो । वन्धा तेसा भोग के लीलाकृति मरी रे लो ॥ अहो. ॥ छोडो चिन्ता वैर जो । निर्मळ मने मिल वैर विरोध दो परिहरीर लो ।३०।अहो.। यो सुण मुनि सद्बोध जो । विद्युप्रभ वैरागी हुइ दीक्षी गृही रे लो ॥ अहो. ॥ गयामुनिवर के साथ जो । ढाल सातमी ऋषि अमोलक ऊचरी रे लो ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ नयसार ललीताङ्ग मिल । लीलाकृति शरीर ॥ अग्नि संस्कार कर निवृते । मेटी मन की पीर ॥१॥ खेचर कहे भूचर भणी । तुम उपकार अपार॥तेतो फेडी सकूं नहीं । पण कुछ शक्तिसार ॥ २ ॥ नभ गमनी विक्रोवणी । दोनों विद्या गृहो राज ॥ अति अग्रह इण सो गृही । गयो खेचर निज जगाज ॥ ३ ॥ देख प्रभाव दो मन्त्र का । ललचाया इस मन ॥ अन्यभी ऐंसे मिलान को । करन लगा भ्रमन ॥ ४ ॥ अश्व शैया रूशुककी । सुनी पर संस्य कान ॥ ततक्षीण गया रत्नपुरी । तुम पीछे लगा राजान! ॥ ५ ॥ कुसुमपुरी के वनमें । रचा इन इन्द्रजाल ॥ विन गुन्हे तुमें सन्तापीया । हरी शैय्या अश्व मा

१ गगन

ल ॥ ६॥ इस मौके इस दुष्ट को । लेवो मारकर वैर ॥ मे तो अब छोडूं नही। हुइ बहु-
तही देर ॥ ७ ॥ ❁ ॥ ढाल ८ वी ॥ श्वामी सुणीयें ॥ यह० ॥ सुगुणा सुणीयें गुणी
हो परगुण लुणीये ॥आं॥ यो कहे देवी मुद्गल सहाइ । नृपको मारने धाइ ॥ इस दुष्टका
भार पृथ्वीसे । सहन होताहै नाहीं ॥ सुगु ॥ १ ॥ अतिदीन बचने नयसार वोले । वीर
सेण शरणे तुमारे ॥ सुणतेही वीर फिरे देवी आडे । माताजी इसे मत मारे ॥ सुगुणा ॥
॥ २ ॥ आपहो समर्थ यह आति असमरथ । आप नाथ यह अनाथो ॥ कीडीके ऊपरक
टक चडाना । युक्त कदापि न देखाते ॥ सुगु ॥ ३ ॥ आप वडा बड पनने विचारो । र
ङ्क की करुणा कीजे ॥ इतनीही अर्जी मेरी मान्य कर । अभय दान इसे दीजे ॥सु॥४
॥ इत्यादि वीर वाणी श्रवण कर । देवी आश्चर्य अति पाइ ॥ गुण कर्तापे गुणकरे सब
जगमें । उसमें क्या है नवाइ ॥ सु ॥ ५ ॥ महा दुःख दाता दुर्गुणी शत्रु । तास दया
कर छोडावे ॥ धन्य २ धन्य हरी केशरी नन्दन । तुम जोडे कौन आवे ॥ सु ॥ ६ ॥ इ
से न छोडती क्रोडो उपावे । पन तेरा बचन न लोपाइ ॥ नहीं मारुं मुद्गल पडा रहो ब-
न्धन । मरेगा योंही तडफडाइ ॥ सु ॥ ७ ॥ विकराल रुप मिटा निज देवी । दिव्य रु-
प प्रगट करीया ॥ होकर संतुष्ट कहे वीरसे । मांगे, सो देवु इणवीरिया ॥सु०॥ ८ ॥ वीर

पथम्पे कृपा करके । नयसार के बन्धन छोडो ॥ इसके जीने से सब खुश होवेंगे । और न मुझें कुछ कोडो ॥ सु ॥ ९ ॥ देवी कहे यह नहीं मेरे हाथे । वीर कहे यह क्या भाखो ॥ आपसे जबर और कौन जगत् में । आश्चर्य एहभी दाखो ॥ सु ॥ १० ॥ अमरी कहे महा सती पतिवृता । त्रिकरण शुद्ध शील पाले ॥ वो जो पाणी छाँटे इस दुष्टपर । तो छूटे बन्ध तत्काले ॥ सु ॥ ११ ॥ यों सुणकर सब जन हर्षाया । सतीयों बहुत जग मांइ ॥ अभीही बन्ध मुक्त नृप करेगा । अन्त वरसे राणीयों बुलाइ ॥ सु ॥ १२ ॥ प्रथम पटराणी आगे आइ । कहे देवीकी शाखे ॥ मुझ व्रत शुद्धतो प्राणेश छूटे । यों कह कर जल न्हाखे ॥ सु ॥ १३ ॥ पण किञ्चित प्रतीकारन चाला । पटराणी भी शरमाइ ॥ णर नीचो मुख छिपी मेहल में । तब आगे दूसरि आइ ॥ सु ॥ १४ ॥ तैसेही किया पक बन्धन छूटा । शरमा सो घर मे सिधाइ ॥ यों सब राणीयों परिचय दीने । पण एक नकार्यज सीजाइ ॥ सु ॥ १५ ॥ तब नामाङ्कित गाम में की सतीयों । अति आदरसे बुलाइ ॥ राजबले आवे मान धरी के । पण कोइ न बन्ध छोडाइ ॥ सु ॥ १६ ॥ सबसभाजन आश्चर्य पाया । अरे कोइ न सती जग मांहि ॥ छोडन की नही देवी के मन में । क्यों अबला का मान गमाइ ॥ सु ॥ १७ ॥ मनोगत देवी जाने सब के । कहे अ-

मो सर्व सुणो लोगो ॥ काया से शील पाले बहूतेरी । उसका मुख क्या छागा ॥सु।१८।
जो अवाल पनसे मन माल कर । अन्य नरको नही वांछे ॥ सोही महा सती जगमें पू-
जावै । ऐसी मिले तो वन्ध काटे ॥ सु ॥ १९ ॥ सब कहे ऐसी महीला जगमे । निश्च-
य न मिले कोइ ॥ नरसे अष्ट गुणा काम कामनीके । तो मन स्थिर कैसे होइ ॥ सु ॥
२० ॥ नमिले सती न वन्ध छूटे । न नृपती जीवीता रहावे ॥ मारण की देवी के मन
में । तो सारा कौन करावे ॥ सु ॥२१॥ निरासा हुइ रायका मन में । महा वेदना भइ-
काइ ॥ विननीर मीन ज्यो तडफण लगो । पशु परे अरडाई ॥ सु ॥ २२ ॥ तव वीर म
न कुरुणा उभराइ । देवी चरण मुरू ठाइ ॥ कहे कर जोडी माजी आप वतावो । ऐसी
त्रिया कहासे पार ॥ सु॥ २३ ॥ देवी कहे इस वसुधरा में । यद्यपी रत्न बहुत पावे ॥ इ
सही नगर में पुष्फा गणिका घर । कुसुमश्री सती रहावे ॥ सु ॥ २४ ॥ ते आकर जो
पाणी छॉटे । तो निश्चय वन्ध तूटे ॥ सुनके खुशी हुवे राजा परजा । वीरजी का वैम छु
टे । सु ॥ २५ ॥ यहतो काम हुवा अति सुंन्दर । इस गामेही निकलङ्क थावे ॥ ढाल
अमोल भणीयह आठवी । चौथे खण्ड सोभावे ॥ सु २६ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ मन्त्रि साम-
न्त उमराव मिल । शिविका सज्ज कराय ॥ बाजित्र नाद बहूत जन सङ्ग । पुष्फा के घर आ

श पहोंता तिहां रे । यह जोग बना श्रेयकोरे ॥ वि॥१८ ॥ धीज करण वक्त आइसो क
रं सब सन्मुख जाइ । ज्यो नाथ को विश्वास आइजी ॥ वि ॥ १९ ॥ ज्यों नाग कंचु-
की त्यागे । त्यों घर तज सती तब भागे । बैठी शिवकामें सब हुवा आगेजी ॥ वि ॥
२० ॥ वाजित्र आडम्बर जावे । छत्र धारे चमर डुलावे । सब गुण सती के गावेहो ॥वि
॥ २१ ॥ वेस्याके घर रेइ । विशुद्ध शील रखेइ । धन्य २ सती इण नेइहो ॥ वि॥२२॥
तब छेल छबिला भाखे । हम गये इस घर घर न्हाख । पण देखी नहीं कोइ आँखे हो ॥
वि ॥ २३ ॥ पुष्फादि गणीका सारी । भेलीहो हंसे विचारी । कैसे सती रही यह नारी
हो ॥ वि ॥ २४ ॥ लक्खों सोनैया लीधा । घणा कामी को पसन्द कीधा । देवी भरो
सा कैसे दीधाहो ॥ वि ॥ २५ ॥ चलो देखें यह भी तमाशा । कैसे काटे नृपकी फासा
॥ चाली सब करती हांसा हो ॥ वि ॥ २६ ॥ सती आये पहिले राज माहें । बहू लोक
गये भराइजी ॥ पीछेसे सेविका आइ हो ॥ वि ॥ २७ ॥ जय सती २ धुनकारे । अऊा
तरी शभा मझारे जी । देवी को किया नमस्कार हो ॥ वि ॥ २८ ॥ वारीको कळशकर
लेइ । अधो दृष्टि ऊंचेश्वर केइजी । मेरे साक्षी केवली छेइ हो ॥ वि ॥ २९ ॥ वीरसेण
नृपति त्यागी । अन्य से मनसा नहीं लागी । तो फासी जावो भागी हो ॥ वि ॥ ३०

॥ या कहा छॉटा वरि । नृप छूट्टा भया तत्काली । हुइ जय ध्वनि उस वारी हो ।वि॥। २१ ॥ सुगन्धोदक पुष्प वर्षाये । सच्च शील प्रभाव दर्शाये । नव ढाल अमोलक गाये हो ॥ वी ॥ २२ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सव चिन्ते कौन विश्वद्धज । वीरसेण नामे राय ॥ ताकी यह अर्धाङ्गना । प्राणी पुण्य सिर ताज ॥ १ ॥ शरमी ऊठे नयसारजी । करदेवी को नमस्कार ॥ फिर वीरसेण कुसुमश्री के । पकडे चउ चरणार ॥ २ ॥ नम्र भूत अर्जी करे । करिये अपराध माफ ॥ मुझ अपकार उपकार तुम । अथाग को कथे साफ॥ ३॥ वीरसेण कहे रायजी । दुःख सुख कर्म से पाय ॥ आप प्रसादे से दोनो हम। विश्वमे गये प्रकटाय ॥ ४ ॥ सव समझे यह दम्पती । शील विशुद्ध सुरी पूज्य ॥ जग भूपण धन्य उभय को । जोडा मिला संतुज ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १० वी ॥ गोपीचन्द लडका।यह.। सत्य शील प्रसादे । आखीर सव सुख पाय है ॥ आं ॥ यह० ॥ त्रिदशी के चरणों मे नमकर । वीरसेण पूछन्त ॥ वैश्याके घर में रह नारी । कैसे रही शुद्ध शील वन्तजी ॥ सत्य ॥ १ ॥ सूर कहे सव सुणो शभा जन । इस महा पुरुप की वात ॥ कन्क शाल हरी केशरी नन्दन । व्यावन रत्न पुरी आतजी ॥ सत्य ॥ २ ॥ रणधीर नृप पुत्री कुसुम श्री । परणे उत्सव सङ्ग ॥ तोता अश्व शैय्या डायजे में । दी सुसरे घर रङ्ग जी ॥सत्य॥

३॥राज जमात केदे रणधीरजी । ले दीक्षा मोक्ष सिधाया ॥ वीरसेण परिवारभेटने । कन्क
साल को जाया जी ॥ सत्य ॥ ४ ॥ नाम भूल कुसुमपुरी कहना । तहां नयसार करी
चोरि ॥ इन मुझ अष्टम कर आराधी । मे दीया वचन प्रेम जेरिजी ॥ सत्य ॥ ५॥ अ
शूभ उदय तुम रहेगा जहां तक । करुंगा उचित में सहाय ॥ शूभ प्रगटे वहां में प्रगट
हो । देवूंगा सव जोग मिलायजी ॥ सत्य ॥ ६ ॥ वणीये इने समुद्र मे डाले । वहां भी
मेने उवारे ॥ तोभी डूवी जहाज तीनों विछडे । कर्म आगे क्या सारेजी ॥ सत्य ॥ ७॥
छूटा पटीया सती गइ मछोदरे । धीवर ला वेंची वैश्याने ॥ मच्छ फाडते जीवती निक-
ली । किये उपचार वचाने जी ॥ सत्य ॥ ८ ॥ अपार द्रव्य खरच कीनी साजी ॥ फिर
गणीका भोग आमन्त्रे ॥ नहीं माने मांगे खरचा देहम । क्या करे पडी पर तन्त्रेजी ॥स
त्य ॥ ९ ॥ शील रक्षण पक्षीयों को चुगाइ । विशुद्ध तोता मिलाया ॥ इन ठग सव का
मीयों तांइ । वैस्यका कर्ज चुकायाजी ॥ सत्य ॥ १० ॥ पहले मंजन दूसरे भोजन । नृ
त तीसर चौथे गान ॥ यों कामी चौपेहर भरमाये । गये सो सव रहे जान जी ॥ सत्य॥
११ ॥ यह सव युक्ति पोपट की है । सतीन जाने लगार ॥ सती सातवी मजले धर्म ध्यान
। करती दिन गुजार जी ॥ सत्य ॥ १२ ॥ उदधी कण्ठे मुरछा खाइ । पडे नृप वीरसेण ॥

वसुपत शेठ उठाकर लेगया । ओपधी देकिया चेन जी ॥ सत्य ॥ १३ ॥ पुत्रपरे घर मा
लक वनाकर । वसुपत पाये मरण ॥ वेपार मिस परदेश में निकले । पत्नीकी चौकस क
रणजी ॥ सत्य ॥ १४ ॥ इहां आया गया पत्नी सदने । शङ्कीत हो तव नीसरीया ॥
धींज करण की तव सुचना । सती ध्यान तव धरीया जी ॥ सत्य ॥ १५ ॥ सत्य शील
दया दान प्रसादे । पाप थोडा में खपाया । अशुभ पकी झड गये आत्म से । शुभ-त-
दा प्रगटायाजी ॥ सत्य ॥ १६ ॥ चोरही शिक्षा कर्म से पाया । सत्यवन्त सत्य प्रगटाया
। में भी महारा वचन निभाया । सो वस भणी ज़णायाजी ॥ सत्य ॥१७ ॥ यो सुन वी
रसेण हर्षाया । विस्माया सव लोक ॥ केइ वीर की केइ सती की शुक की । सराइ बु-
द्धि विलोकजी ॥ सत्य ॥ १८ ॥ दम्पति करजोडी कहे सुरी से । जबर किया उपकार ॥
आप कृपासे पीछा पाया । ऋद्दि सिद्धि सुख सारजी ॥ सत्य ॥ १९ ॥ सुरी कहे तुमसम
सती सन्त की । कहां मुझ भाग्य में सेव ॥ कर्म टालने नहीं मे समर्थ । पुण्य मिल्या
सुख हेवजी ॥ सत्य ॥ २० ॥ सर्व समक्ष भेटकरुं एक । तेस्वीकारो आप । कुसुम पुरीका
राज कीजीये । छोडून सेवा कदापजी ॥ सत्य ॥ २१ ॥ में अव जाकर पुरी वसाबु ।फि
र सामन्तो पठावुं । उनके साथ आप पधारजो । येहीज में चित्त चहावुंजी ।।सत्य॥२२॥

तव अश्व शैया नयसार सोपी । गइ वस्तु पुनः पाया ॥ पुण्य प्रगट्यां सव सुख प्रगट्या
। वीरसेण हर्पायाजी ॥सत्य॥२३॥ याद किया से हजार होवूंगा । यों कही देवी जावे ॥
महीमा शीलकी ढाल नववी में । ऋपि अमोलक गावेजी ॥ सत्य ॥ २४ ॥ ❋ ॥ दो-
हा॥ पुण्य पसाये वीर नृप । कीर्ती नोवत घुराय ॥ निकलङ्क नारी शुक तुरी । शैय्यामि-
ली पुनः आय ॥ १ ॥ निज तात पुर जान को । दम्पति हुवे तैयार ॥ नयसार आडा
फिरा । नजानैदु इसवार ॥ २ ॥ दुःख अति पाये मेरेसे । ते ऋण फेडन काज ॥ कुछे
क सेवालीजीये । मान विनंति राज ॥ ३ ॥ अति अग्रह जाणी रहे । अन्य मेहले सप-
रिवार ॥ भोगो पभोग दासादिक । सब सुख विलसे सार ॥ ४ ॥ सव लोक गये निज
२ घरे । यशः पसरा मुल्क मांय ॥ धन्य वसुधा तेरेविष । हुवे रत्न ऐसे पेदाय ॥ ५ ॥
❋ ॥ ढाल ११ वी ॥ घुडला गज घेवर ॥ यह० ॥ उस अवसर माहे । भृगूपूरी के लो-
क ॥ सुणी कुमर पर संस्या । वंधन चला सव थोक ॥१॥ राय शभा केमांही । आयास
वही साथ ॥ परन्तु गड़वड माहें । कर नहीं सके कुछ बात ॥ २ ॥ देखी कुमर की ऋ-
द्धि । अश्चर्य जनक करामात ॥ अपछरा जैसी नारी । इन्द्रसी ऋाद्धिसाक्षात ॥ ३ ॥ चि
न्ते अहो गंभीर्यता । कभी नहीं करी वात ॥ अपने समहो रहे । किये काम साक्षात ॥

४ ॥ अव वसुपत घर की । कौन करगे संभाल ॥ यहतो निश्चन्तहो वैठे वन भूपाल ५
एकन्त मेहल मांय । देखे कुमर जिसवार ॥ सव अधीरे होकर । आये तहा तत्काल ॥
६ ॥ देखी साथी जन को । वीरजी अति हर्षाय ॥ ऊठ सन्मुख आया । कियो सत्कार
सवा ॥ ७ ॥ पहिले की तरहही । वैठे सव बरोवर ॥ सुख साता पूछे । तव देवे सो उ
तर ॥ ८ ॥ हम सवों की साता । हे जी आपके पास ॥ रचना दखी आजकी । हम म
न हुवा निरास ॥ ९ ॥ हम आप हाथ नीचे । पाये वहूत आणन्द ॥ अव आपके हमा
रे । कैसे रहे पूर्व समन्द ॥ १० ॥ कोन संभालेगे । शेठ धन परिवार ॥ वेतो आप के
सुपरत । कर गये सव संभार ॥११ ॥ इतने दिन माहें । आपका सच्चा अवदात ॥ जरा
न दर्शाया । आज देखा साक्षात ॥ १२ ॥ यह कपट आपको । करना नहीथा जोग ॥
आ हमारे छाने । मिलाया सव संयोग ॥ १३ ॥ कुमर कहे भाइजी । नगरदेखने के का
म । मैं निकल अया यहा । दुःखी देखे नर श्याम ॥१४॥ तस साता कारण । करे यथा
शक्ति उपाय ॥ आप पुण्य पसाये । गइ ऋद्धि मिली आय ॥ १५ ॥ सव सराजाम ले
इ । आप आवो इण स्थान ॥ नीचे की मजल मे । सुख से रहो खान पान ॥ १६ ॥
फिर अपन सव मिलके । करेगे उचित सव काम ॥ और भूपुर से वोलावोवडे नर आ

म ॥ १७॥ यों सुन सब हर्षे । रहे उसी स्थान आय ॥ भूपूर से आये वृद्ध नर ते ठा
य ॥ १८ ॥ कूमर साथे मिल । उचित विचार सब कीध ॥ उत्तम नर देखी । शेठ के ना
मे कर दीध ॥ १९ ॥ कुलरीती सर्व ही । दीधी सर्व बताय ॥ गुप्त चोडेकी ऋद्धि दीनी
सब संभलाय ॥ २० ॥ दली पलंग पसाये । बहू मूल्य भूषण निकाल ॥ यथा उचित
सब को । देकर किये खुशाल ॥ २१ ॥ इच्छा सब पूरी । दिये निज घर को पहोंचाय
॥ सब रहे सुखमाही । कुमरजी का गुणगाय ॥ २२ ॥ फिर वीरकुमरजी । शुक पत्नी
एकन्त वीराज ॥ करी बातों मनकीं । जो इतने दिनों रहीथी भराज ॥ २३ ॥ सती अ
भि ग्रह फलीयो । आविल तप पारणा कीध ॥ जीम्या इच्छित भोजन । शुक कोभी मे
वा दीध ॥ २४ ॥ रहे सदा सुख माही । चारों रत्न सङ्ग वीरसेण ॥ कहा अमोल चौथा
खण्ड । ढाल इग्यारे सुसयोगेन ॥ २५ ॥ ❀ ॥ हरि गित छन्द ॥ श्रीवीरसेण समुद्र पा
रहो । वसुपत घर पति भये ॥ करदेशाटन पत्नी शुक शैया तुरि चउमिलगये ॥ विद्या
धर नयसार देवी दत्तपुत्रादि मध्यकये॥श्रीपुरनगेरसबसुसेद्ध।रहै अमो. पुण्य सेसुख लगये१

परम पुज्य श्री कहानजी ऋपिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारि मुनिश्रीअमो
लक ऋपिजी महाराज रचित श्रीवीरसेण कू. चरित्रका शील प्रभाव नामक च. ख. ॥समास॥

॥ दोहा ॥ परम पावंत्र परमात्मा । अरिहंत सिद्ध मुनिइश ॥ उपाध्याय मुनिवरजी । प्रणमु चरण धर सीश ॥ १ ॥ दधी मथन नवनीत सम । सारांश पञ्चम खण्ड ॥ पुरुपार्थ धर्मार्थ फल । सुणो भव्य मन अखण्ड ॥२॥ शील सत्यसे इह भवे । मिले ऋद्धि सज्जन मान ॥ पर भव स्वर्ग ऽपवर्ग लहै । वीर कुसुमा के समान ॥ ३ ॥ श्रीपूर मे नयसार घर । पूर्व पुण्य पसाय ॥ नित्य नवले सुख भोगवे । युगल सदा आनन्द मायं।४। इच्छित दायनी सेजसे । कहाडे बहुत धन आहार ॥ खर्चे खरचावे लाभले । दान पुण्य विवहार ॥ ५ ॥ मन विन दान होवे नहीं । दान विन कीर्ती नाय ॥ हाथ पोला का जग गोला । कहवत जग कह वाय ॥ ६ ॥ अवसर जाके कचरी मे । करे अदल इन्साफ ॥ आश्चर्य पाय शभा सभी । परसंशे नृप आप॥७॥दुःखी दरिद्रि कोइ आयके । करे वीर मुलाकात ॥ यथा शक्ति इच्छित दये । ताते हुवे विख्यात ॥ ८ ॥ यों सुखे काल शीघ्रही गमे । अब आगे लाभ की वात ॥ तज प्रमाद श्रोता सुणो । धारो ज्यो पाली जात ॥ ९ ॥ ढाल १ ली ॥ ललनाहो ॥ यह० ॥ कुसुमपुरी पोल वासीनी । देवी गइ स्वस्थान ललनाहो ॥ भागे सब जन लायके । वसायापुर भर भान ललनाहो ॥ सुणना चरित्र सुहामणा ॥ १ ॥ भण्डार धन से पूर्ण भरे । सेना समेलन कीध ल० ॥ मेहल म-

हुवा उदास ल. ॥ पहोंचाने बहुते चले । आये सीम तक सवहाल ल. ॥ सु॥ २२ ॥ न
मन करी सवयों कहे । रखना हमपर मेहर ल. ॥ भूलना मत जानो आपके । दर्शन शी
घ्र देना फेर ल. ॥ सु २३ ॥ वीरजी सव को सन्तोषीये । नैयना श्रुत सब फिर जाय ल
॥ ढाल प्रथम खण्ड पंचमें । ऋषि अमोलक गाय ललनाहो ॥ सु ॥२४॥ दोहा ॥ सुखे
मुकाम करते थके । आये कुसुमपुर बार ॥ प्रजा आइ सन्मुखे । लुली किया नमस्कार
॥ १ ॥ सोवागणी कड पुतले । दधी घट शिरे बधाय ॥ गान वाजित्र जयद्धनी । उतरे
वाग में आय ॥ २ ॥ तखंतारूढ शुभ महूर्तमें । हुवे शुरी कुसूम वर्षाय । स्वजन परजन
आणन्दिये । रही बधाइ बटाय ॥ ३ ॥ देव दोगूंदक की तरह ॥ भोगवे सुख नित-मेव
॥ वीते दुःख सब भूलिये । पूर्ण्यकी यही टेव॥४॥ राजाराणी परजा सुखी । आनन्द का
ल वीतया ॥ अब कहूं पीछे की कथा । जासे सम्बन्ध मिलजाय ॥ ५ ॥ ढाल २ री॥
व इम बोले ॥ यह. ॥ श्रीवीरसेण रत्नपुरी थकीजी सेना मेलीथीलार॥ हूकम प्रमाणे
लती । पहोंची कन्क शाल के द्वारजी ॥ सज्जन प्रेम देखो ॥ १ ॥ सीमाडीये दल दे
के । घवराइ पूछा करन्त ॥ किसका दल कैसे आयाहै । सत्य कहो जों होवे चित्त स
जी ॥ स ॥ २ ॥ फोजा धीप कहे वीरसेण काजी । जाणो यह सब परिवार ॥ वो आ

पाकर सवी ही लोको । देखे दृष्टि पसार । आसपास चौ बाजू जोतां । दिखे न कोइ प्रकार जी ॥ अ ॥ २ ॥ इतने में ऊभा रहा आकार । सिर उपर वीमान ॥ सब जन चित में चमक के सरे । देखन लगे असमान ॥ थक हुवे तस तेज प्रतापे । साक्षात जाने भान जी ॥ अ ॥ ३॥ विद्या धर के देव हे सरे । क्यों स्थंभा यहां यान ॥ के इस मे हे वीर सेण जी । लाय देव कोइ तान ॥ इत्यादि केइ कल्पना सरे । ऊपजी केइ मन म्यानजी ॥अ॥४॥ विमान स्थंभा जान के सरे । वीरजी नीचे जोए । स्वजन सेना ठाठ सो देखी । हर्षाश्चर्य चित्त होए ॥ क्यों यहां सब सज आकर ऊभे । कारण होगा कोएजी ॥ अ ॥ ५ ॥ इन्द्र इन्द्राणी कीपरे सरे । दम्पाति नीचे आए ॥ इच्छित जोडी देख के सरे । ज य २ कार बधाए ॥ धन्य सफल यह घडी हमारी । भेट जिनकी चहाए जी ॥ अ ॥ ६ ॥ पिता श्रीके चरणमे सरे । रखा सीस वीर आय ॥ पूत्र पराक्रमी देखी हर्षे । उठाकर हृदय लगाय ॥ सपूत देख सवही खुश होवे । तो मावित्र कहणा क्याय जी ॥ अ ॥ ७ ॥ कुसुम श्री त्रिया मण्डल मे । गइ झांजार झण कार । सासू जीके पग लगी सरे । हर्षे दोनों अपार ॥ पुष्प वृष्टि सवी के सिर ऊपर । देवी करी उसवार जी ॥अ॥८॥ वीछायत विछाय केसरे । सव वेठे एक स्थान ॥ पीता श्रीसे वीरजी पूछे कहीये वीतक वायान ॥ आप सभी

जन मेल होकर क्यों आये इस स्थान जी ॥ अ ॥ ९ ॥ हरी केशरी कह तुम तणी सरे
। भेजी सेना यहां आइ ॥ तुम कोण देखे पूछते सर । आगे आये कहांइ ॥ चौकस क
री पता नहीं लागता सरे । सबजने गये घबराइ जी ॥ अ ॥ १० ॥ आकाश वाणी हु
इ उसी वक्त । इस वक्त के मांय ॥ सुख से दम्पती आयंगे सरे । सुनकर सब हर्षाय ॥
उसी प्रमाणे हम सवी मिल । तुम सामे आये चलाय जी ॥ अ ॥११ ॥ तुम इतने दिन
कहां विलमे थे । सो कहीए समाचार । तब शुक कहे सुणीयो सब लोको । वीर वीतक
प्रकार ॥ सती सतवन्त की कथा सुणने से । होवे पाप उद्धारजी ॥ अ ॥ १२ ॥ रत्न
पुरीसे निकल लिये सरे ॥ सज्जन दर्शन काज ॥ उतावले हूवे वीर जी सरे । उडन अ
श्वारूढ थयाज ॥ कन्क शाल नाम भूलके सरे । कुसुम पुरी गया जरे ॥ अ ॥ १३ ॥
अश्व और पलंग की सरे । चोरी हुइ उसवार ॥ जहाज बेठके चलीयसरे । फूटी समुद्र म
झार ॥ पटीया जोग राजा राणी । अलग २ चले त्यारजी ॥ अ ॥ १४ ॥ मछोदर पडी
कुसुम श्री जी । वीकी जा वैस्या घर ॥ शील रत्न अती जत्न से राखा । संकट सहेकेइ
पर ॥ धीज करी प्रगट हुइ । मिले पति श्रीपुर जी ॥ अ ॥ १५ ॥ वसुपत घर रहे वीर
जीसरे । फिरे बहूत प्रदेश ॥ श्री पुर आये सब मिले सरे । किये सुखी वहां नरेश ॥ चौ

रत्न दो विद्या पाये । पुण्य फले विशेष जी ॥ सु ॥ १६ ॥ कुसुम पुरकी देवी, इस
मे । हूइ बहूत ही सहाय ॥ कुसुमपुरिका राज भी दीना । ऋद्धी सिद्धी सधाय । आपको
मिल ने आये सब । ऐसे कष्ट सहाय जी ॥सु॥ १७ ॥ इत्यादि सुनवीर चरित्रको । आ
श्चर्य सब ही पाया । कितनी बात सुण हर्षीया सरे । कितनीसे दुःख थाया ॥ शील स
त्य उदारता क्षमा । यह गुण सब ही सराया जी ॥ सु ॥ १८ ॥ वीरसेण जी मातेश्वरीके
जाकर प्रण मे पाय ॥ पुत्र बहु की जोडी देखी । माता जी अति हर्षाय ॥ हृदय चम्पा
प्रेमात्सुक होकर । सफल घडी सो जणाय जी ॥ सु ॥ १९ ॥ हर्षानन्द की बटे वधाइ ।
भेटणा बहुते आय । सो स्वीकारी यथा योग सबको सत्कारे तब राय । मंजूल रागे सखी
सहेल्या हिल मिल गीत रही गायजी ॥ सु ॥ २० ॥ पुण्योदय प्राप्त हूवा सरे । सब होवे
सु-संयोग ॥ यों सुख इच्छो तो करो सरे । निवर्द्य पुण्य सब लोग । पंचम खंडे ढाल ती
सरी । कही अमोल गुण छोगजी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥दोहा॥ अच्छा जोशी बोलाय
के । अच्छा मुहूर्त देखाय ॥ ऊंच ग्रह चन्द्र योग सुभ । देख जोतिषी फरमाय ॥ १ ॥
स्थिर चंद्र शुभ लग्न यह । अभी ही है महाराज ॥ इस ही वक्त प्रवेश से । सिद्ध होवे स
ब काज ॥२॥ यों सुण सब खूशी होवे। सेना भेली कीध ॥ यथा योग वाहण चडे । नो

वंते डंका दीध ॥ ३ ॥ मोटे गयवर ऊपरे । हरी केशरी वीर सेण । बैठे चामर छत्र युत्त । विरूधावली गर्जेण ॥४ ॥ प्रिती मती कूसुम श्री । बैठी महारथ मांय ॥ वहु देशी वहु दासीयों । परिवरी गीत गरणाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४थी ॥ आज आनन्द घन जो गीश्वर आया ॥ यह० ॥ आनन्द घन आज चिन्तित सार्या । सजोडे कुमर पधार्यारेलो ॥ अरी जन का तो मुखडा उतार्या । सज्जनोंका हुवा धार्यारे लो ॥ आ ॥ १ ॥ फोज यथा योग्य सर्व सजाइ । आगे कोतल चाल्याइरे लो ॥ तस पीछे पायक शस्त्र वक्रासज । तस पीछे अश्व अणी काइरे लो ॥ आ ॥ २ ॥ तस पीछे श्रेष्ट कूंजर नृपका । आगे पातो नचाइरे लो । वंदी जन विरूदावली बोले । भाट चारणों बोले बडाइरे लो ॥ अ ॥ ३ ॥ अमोघ धारसे दान सवी को । अर्पे कुमर उमाइरे लो ॥ दारिद्रीके दारिद्र गमावे । जाचक अति सन्तोष्याइरेलो ॥ आ ॥ ४ ॥ दोनों बाजु गज सब सिणगरे । मेघ घटा जैसा कालारे लो ॥ रत्न होदा बीजली परे चमके । गरजे गुल गुलाट मतवालारे लो ॥ आ॥ ५॥ तस पाछल शीवका और पनिस । तामे श्रेष्टि बैठाइरे लो ॥ दूंदाला फूंदाला रूपाला छोगाला । वस्त्र भूषण सोभाइरे लो ॥ आ ॥ ६॥ ता पीछ रथ जरी झूलर शोभे । राण्या मेठान्या बेठाइरे लो ॥ देश अठारे की परिवरी दासीयों । निज २ भाषा में गीत गाइरे

लो ॥ आ ॥ ७ ॥ अनेक प्रकार के वाजित्र बाजे । तासे अम्बर गाजेरे लो ॥ इत्यादि
सब ठाठ से चाले । नगर में महाराजेरे लो ॥ आ ॥ ८ ॥ सोले सिणगार सोवागणस
जाइ । सिर घट केड पुत्र सहाइरे लो । शुभ शकुन देने सन्मुख आइ । दक्षीणे ऊभी रहा
इरेलो ॥ आ ॥ ९ ॥ बजार गली हाट हवेली माइ । नरनारी अति ही भर्याइरे लो ॥
देखने सायवी ऊभे उमाइ । चौ वाजु नरछत छाइरेलो ॥ आ ॥ १० ॥ जोहरी बजारे स
वारी आइ । शाह मोतीयों के मेह वर्षाइरेलो ॥ जय वीजय कूमरजीकी जय बोल्याइ । यों
आये राज मेहल माहिरे लो ॥ आ ॥ ११ ॥ वाहग तज सिंहासग बैठे । तात तनुज
खुशी साइरे लो ॥ और यथा योग स्थान बैठाइ । तंबोल मीठाइ बटाइरे लो ॥ आ॥
१२ ॥ फिर सब निज २ स्थान गयाइ । सब पक्कान निपाइ जीम्याइरे लो ॥ अष्टानिक
महोत्सव पुर मे मंडाइ । वंदीवान छोड्याइरे लो ॥ आ ॥ १३ ॥ हांसल दंड को दीये
घटाइ । तोला मापा बधाइरे लो ॥ सज्जनो को इच्छित दे पोषे । यों सब को सन्तोष्या
इरे लो ॥ आ ॥१४॥ राज परजा देश जन सघलाइ । आनन्दे काल वीताइरे लो ॥ अ
व आगे सुणो धर्म कथाइ । जो दोनों भव सुख दाइरे लो ॥ आ ॥ १५ ॥ तेही काल
तेही अवसर माही । धर्म प्रिय ऋषि राइरेलो ॥ चरण करण गुणी विद्या सागर । वहूत मुनि

परिवर्याइरे लो ॥आ॥ १६ ॥ अप्रति वन्ध विहार करन्ता । तारता भव्य गण तांइरेलो ॥
कन्कशाल के सुमही उध्याने । पधारे सबमु,नेराइरेलो॥अ.१७॥योग्य जागारू अचित वस्तु
को । जाची उतर्या वाग मांहिरेलो ॥ ज्ञान ध्यान तप सयम करके । रहे निज आत्मा
भाइरे लो ॥आ॥१८ ॥ दीनी वधाइ वन पाल जाइ । सुन हर्षे वीर नृप सघलाइरे लो ॥
द्रव्य देइ मालिको संतोपा । फिर पानादि सज्ज कराइरे लो ॥आ१९॥ नृप कुमर राणी स
ती सज्जन । सचीव उमराव परजाइरे लो । निज शक्ते तव सिणगार सज्ज कर । सविधी
वन्दन चाल्याइरेलो ॥ आ ॥ २० ॥ पंच अंग नमी वन्दन कीना । अदूर सामान्त बेठा
इरे लो ॥ तव आचार्य सवोध फरमावे । भो भव्य सुणो हित लाइरेलो ॥ आ ॥ २१ ॥
अपार असार संसार के मांइ । दुर्लभ नर देह पाइरे ला । मोक्षका कारण करलो कमाइ ।
तो जन्म मरण मिट जाइरे लो ॥ २२ ॥ अनित्य तन धन स्वार्थी सज्जन । काल सदा
ढिग आइरे लो ॥ शीघ्र ही चेते सो सुख पावे । वक्त गमाइ पस्ताइरे लो आ ॥ २३ ॥
कभिभी मुनिकाजी मार्ग । लिया विना मूक्तिन पाइरेलो ॥ फेरक्यो जानके भव बडावो
चेतो! चेतो" वक्त पाइरे लो ॥ आ ॥ ४२ ॥ कहना हमारा करना तुमारा । जो माने
सो सुखपाइरे लो ॥ इत्यादि बहुत भाँत समझाये । अमोल ढाल चौथी माहिरे लो ॥ आ

॥ २५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सुण उपदेश ऋषि राज का । समझे बहुत भव्य लोक ॥ १ ॥ श्री हरी केशर राजवी । ऊठे भ-
क्ति सम व्रत आचारी । गये निज स्थान दे धोक ॥ १ ॥ श्री हरी केशर राजवी । ऊठे भ- ॥ २ ॥ निग्रन्थ पर
ति हर्ष लाय ॥ यथा विधी वंदन करी । कहे सत्य वाणी ऋषिराय ॥ २ ॥ निग्रन्थ पर
वचन अर्थीय । फरसन उत्कृष्ट चहाय ॥ सुनि करो शीघ्रही करो धर्म में ढील न थाय ॥
३ ॥ आनन्दी सुनि चरणवंद । आये निज महल मांय ॥ बात करी दीक्षा तणी । सुण
सज्जन सब आय ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ढाल ५मी ॥ उमीया अट याणी की देशी में ॥ वैरागी
वैराग्य में राचे हो नहु जाचे सज्जन मिली उने । नहीं काचे निकले तेह ॥ जिनको रङ्ग
चडे साचे हो वो राचे मुक्ति नारीयें । कोइ खेंचे धर्म स्नेह ॥ वै ॥ १ ॥ प्रीयवती कर
जोडी हो अङ्गमोडी कहे नाथ सांभलो कांइ । अभी क्या करो यह बात ॥ पचेन्द्रिय सु
ख भोगा हो काम जो गो पुत्र है आप के । अब क्या इस में ज्यादा चहाते ॥ वैरा ॥
२ ॥ नृप कहे भामीनी सुनिये हो यह लुनिय पुण्य फल पूर्व के । कांइ आगे संघ नहीं
आय ॥ यह सुख दुःख के दाता हो नहीं चहाता सुजसन अब रती उमाता शिव लेवाय
॥ वै ॥ ३ ॥ तब कहे राणी शाणी हो लोभाणी मन वैराग्य में । कांइ भली विचारी नाथ ।
जिस पद को आप चाओहो उमावो उसी को मोहरे । मे आवूंगा आपके साथ ॥ वै ॥

४ ॥ इत न न वीरजी आये हो साथ लाये कुसूम श्री मणी काइ प्रणम तात के पाय ॥
नृप कहे राज सभालो हो तुम आलो आज्ञा हम मणी दोनो लेवे दीक्षा हित लाय ॥ वै
॥ ५ ॥ यों सुन राज की वाणी हो विलखाणी कुमर कहे ऐसा हम आये मिलने काज।
राज पाठ नहीं चाहिये हो । मुज चाहिये सेवा आप की । यों कैसे तजो महाराज ॥ वै
॥ ६ ॥ सुख से रह घर मांहि हो कमाइ करिये धर्म की । उस मे नही देवें अन्तराय ॥
पोपध संवर सामायि हो । सुखदायी यह भी है घणी । जिस से सबको सुख थाय ॥ वै
॥ ७ ॥ हरी केशरी यों कहते ते हो । यह वय है हमारि धर्म की । काल का नहीं वि
श्वास ॥ संजम सेही सुख पावे हो । मिटावे फेर भ्रमण के । लूं नर भव लावा खास ॥वै
॥ ८ ॥ जो तुम मुज सुख दाइ हो तो मनाइ अब करना नहीं । दोनों भव के सज्जन
होय ॥ राज संभाल ने जोग हो । तुम होगे सर्व गुण संपन्ना । अब मेर अन्तराय क्यों
दोय ॥ वै ॥ ९ ॥ इत्यादि समझाया हो वह डाया कुमर सब समझीये ॥ कहते ने
णे नीरलाय ॥ करिये जैसे सुख पावे हो । कोन आडा आवे शुभ काम में । यो कहकर
मोने रहाय ॥ वै ॥ १० ॥ कुसुम श्री तब आइहो । नरमाइ हट कर यों कहे । नहीं जान
दूंगी लगार ॥ क्या-दुर्गुण मेरे में हो । सब छोडके जावो एकली । मुझे आपही का आ-

धार ॥ वै ॥ ११ ॥ में तो उत्साइ आइ हो आज्ञा मांइ रहूं आपके । आप करोगे मेरें लाड ॥
सुख तो कुछ न बतायर हो । तरसाया उलटा काल जा । नहाखा मुझपर दुःख पहाड ॥
व ॥ १२ ॥ राणी जी तस बुचकारी हो । कहे म्हारी राणी वहू सुणो । क्यों आर्त व्य
र्था लाय ॥ तुम तोहो धणी शाणी हो । कोइ जीव समाणी पति भणी । और घरमें कसी
कुछ नाय ॥ वै ॥ १३ ॥ तुम हुइ हो पर जोगी हो । अब दुःख भोगीं हम क्या करे
। कोइ तुम जैसी बहू पाय ॥ यों वहुअर बहु समझाइ हो । धीरपाइ दे सुसती करी ।
वों भी चुप तव रहाय ॥ वै ॥ १४ योगोत्सव कराया हो । बेठाया गादी कुमर भणी ।दी
देश में आणा फिराय ॥ दीक्षा उत्सव मण्डायाहो । हुलसाया हीया राणी रायका सिणगा-
र से तन सझाय ॥वै ॥ १५ ॥ सहश्र पूरुष उठावे हो ॥ बैठावे ऐसी पालखी । काइ छत्र
चमर ढूलाय ॥ वहू पर बाजा बाजत हो कांइ गाजत गगन गायन थकी । सहश्रों गम
परिवियार्य ॥ है ॥ १६ ॥ ॥ मध्य बजारस चाल हो निहारे जन नयनाश्रूत । केइ धन्य२
शब्द बधाय ॥ बाग के पास ही आया हो । देखाय दर्शन मुनि तणा । सब उतरे उस
ठाय ॥ वै ॥१७ ॥ उतरासण कर आइ हो । नमाइ पांचों अंगको। वंदणा कर कने आय
[illegible] । आप विना जग माय॥वै॥१८॥

तारो तारो तारो हो । उतारो पार भवोदधी । यों कह इशाण कुण आय ॥ पंच मुष्टि क
र लोचो हो तजो सोचो वस्त्र भूषण तजे । साधु साध्वी लिंग सजाय ॥ वे ॥ १९ ॥
आचार्य ढिग आय के हो । सामायिक ली जावजीवाकी । करिया आत्म का काज ॥
मुनि पंक्ति मे राजाजी हो । आर्याजी पंक्ते राणी गइ । यों मोक्ष पन्थ लगे आज ॥ वे
॥ २० ॥ सब सज्जन वन्दन कर के हो । चिन्ता धरकर गये निज २ घरे । रहते आ-
णन्द माय ॥ पंत्र मे खण्डे पंचमी हो सुख संचमी ढाल कही भली । अमूल्य वैराग्य भ
राय ॥ वे ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ श्री वीर सेण नृपती । सुख से पाले राज ॥ चउरंत
चक्रवर्ती ज्यों । भोगवते पुण्य साज ॥ १ ॥ रत्नपूर कन्क शालपुर ॥ कूसमपुर यह तीन
॥ वीच के राजाओ वशकर । आणा पलावे परवीन ॥२ ॥ देवी सदा हुकमे रहे । श-
य्या दे सुख साज । शुक रीजावे ज्ञाना नन्दे । अश्वदे इच्छित जागाज ॥३॥दोनों विद्या
प्रभाव से । करते इच्छित काम ॥ दान पुण्य करे उलट धर । धर्म ध्यान मे हाम ॥४ ॥
पक्खी दिन पोषा करे । सामायिक त्रिकाल । जैनोन्नति तन मन धने । करते हो उ-
जमाल ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ ठी ॥ कुमर अभय बुद्ध का भण्डारी ॥ यह० ॥ जीवको
धर्म है हितकारी । यथ्या तथा सरदे पाले तो । होवे खेवा पारी ॥ आं ॥ अब हरिकेशरी

असेवना और ग्रहणा शिक्षा । सीखे नसाइ
ऋषि राय जी, प्रणमे गुरू पाया । अनेक प्रकार तप-
काया ॥ जी ॥ १ ॥ द्वादशांगादि वहु पढीये । फिर शुभ परिणामो ॥ मासी अर्ध मां
श्चर्या मांडी । मोक्ष की धरी हामो ॥जी ॥ २ ॥ द्रव्ये चौथ छट अठमादि । अपूर्व करण आया मु-
सी ॥ भावे राग द्वेश किये पतले । प्रमाद विनाशी ॥ जी ॥ ३ ॥ मोह वैरी हणीया ॥ जी ॥
निवर को । क्षपक श्रेणी चडीया ॥ हो अवेदी सूक्ष्म सम्पराइ । अन्तराय जाते प्रगटीया । विम
४ ॥ तव पलायन हुवे तीनो शत्रु, ज्ञान दर्शनावरणो । ज्ञान उद्यम कीना ॥ फि
ल केवल ज्ञानो ॥ जी ॥ ५ ॥ प्रियश्रीजी गुरुणी पास रही । कर्म खपाते पूर खूटे न
र मांडी अति दुक्कर तपस्या । प्रमाद तज दीना ॥ जी ॥ ६ ॥ पुण्य फल लुटिया ॥ जी॥
ही । वीच में आयु खुटिया । छेद नारी लिंग वरी सुर पदी । होवेंगे
७ भवान्तरे महा विदेह में मनुष्य हूइ । संयमपद धारी ॥ कर्म खपाइ केवल पाइ । कन्कशाल
अवीकारी ॥ जी ॥ ८ ॥ अव केवली घणामुनि संग, गाम नगर फिरता ॥ केवली पधार्या ।
सुमही उद्याने । ले आज्ञा उतरता ॥ जी ९ ॥ दी वधाइ माली आइ । फिर चतुरंगी सेना सजा
नृप हर्षाइ प्रीति दाने । वहु धन दे सत्कार्या ॥ जी ॥ १० ॥ परजा जान सारा ॥ जी॥
इ । संग ले परिवारा ॥ वन्दण व्याख्यान सुणन को चाले ।

अपारो ॥ करुणा सिन्धू जग तारण कर द२।
११ विधी से वन्दन कर क वठा । ह५५२ अपारो ॥ करुणा सिन्धू जग तारण कर द२।
ना उचारो ॥ जी ॥ १२॥ अहो भव्य जीवो अपार संसार में । अनन्त भ्रमण करता
जन्म जरा रु रोग मरण के । दुःखसे अति डरता ॥ जी ॥ १३ ॥ औदारिक वैक्रिय ते
जस कारमणा । मन वचन श्वाशो ॥ यह सातो पुद्गल गृही छोडे । सूक्ष्म वादर तासो॥
जी ॥ १४ ॥ सातो के सब द्रव्य गृही छोडे। वादार कहवाये ॥ प्रथम औदारिक नन्तर
वैक्रिय । अनुक्रमे सूक्ष्म थाय ॥ जी ॥ १५॥ सर्व लोक जन्म मरण कर फरसा । क्षेत्र
परावृत वादर ॥ मेरु से असंख्यात श्रेणी आकाश की, फरसी फिरी सादर ॥जी ॥ १६
॥ एक एक श्रेणी उपर निरन्तर । आद अन्त किया मरणा । यों अनुक्रम से सब श्रेणी
फरसी । सो सूक्ष्म वरणा ॥ जी ॥ १७॥ समय आंवली आदि काल सब । जन्म मर
ण फरसा ॥ सो वादर काल परावर्तन । सूक्ष्म होवे ऐसा ॥जी॥ १८ ॥ सर्प्पणीके पहि
लेही समयमें । जन्म धरी मरीया ॥ दुसरी सरपणीके समय दूसरे।यों समय पूर्ण करिया
॥ जी ॥ १९ ॥ यों आंवलिका लव मूहूर्त दिन । पक्ष मांस वर्षो । पल्य सागार सर्प्पणी
काल चक्कर । मर अनुक्रम फर्स्यों ॥ जी ॥ २० ॥ भाव परावर्त झीणा अती है वर्णादि वी
स वोलो ॥ जिन के सब पुद्गल फर्श छोडे । वादर ते तोलो ॥ जी ॥ २१ ॥ सूक्ष्म प्रथम

एक गुणकालो । वढता अनन्त गुणो ॥ यों वीसें फर से अनुक्रम से, भाव सूक्ष्म सुणो ॥
जी ॥ २२ ॥ सब मिल एक पुद्गल परावर्तन । जिन जी फरमाया ॥ ऐसे अनन्त पुद्गल परा
वर्तन । कर के अपन आया ॥ जी ॥ २३ ॥ पापोदय दुःख पुण्योदय सुख । उलट पुलट
पाया ॥ राग द्वेष कर कर्म संच्चिये । गोता बहु खाया ॥ जी ॥ २४ ॥ ज्ञान से जाणो दर्शन
से श्रधो । हेय चरित्रे त्यागो ॥ पूर्वोपार्जित तप से खपावो । यों मोक्ष पन्थ लागो ॥ जी ॥
२५ ॥ मनुष्य जन्म का सार ज्ञान है । ज्ञान सार दया ॥ ज्ञान दया दोनों आराधी मोक्ष घणा
गया ॥ जी ॥ २६ ॥ भव भ्रमण टालन उपाव यह । आराधी सुखी होवो ॥ छट्टी ढाल
यह कहे अमोलक । वक्रमती खोवो ॥ जी ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सुन उपदेश ऋ
षि राज का । हर्षे सब सभा जन ॥ वीर सेण कर जोड तब । पूछे करी नमन ॥ १ ॥
सर्वज्ञ जी सर्व जानो हो । त्रिकाल के भाव ॥ आपही संशय छेदकर । वढावो धर्म उत्सा
व ॥ २ ॥ क्या कर्म से ऋद्धि लही । क्या कर्मे पाया दुःख ॥ वियोग संयोग आदि क
थन । प्रकाशो स्वमुख ॥ ३ ॥ केवली कहे देवानु प्रिय । सहज से कर्म बंधाय ॥
कडुक फळ भोगवते । अति ही मन पस्ताय ॥ ४ ॥ दत्त चित्त सुणी यों सवी । पूर्व
भव विरतन्त ॥ कर्म बन्धको डर धरी । तज अघ बनीये सन्त ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ७वी ॥

सुणो चन्दाजी।।यह०।।सुणो राजाजी। पूर्व भवकी।कहणी जाणी चेतजो। सुख साजाजी पुण्य
फले फले फलीयोते लुणजो खेतजी।।अ।।इसही जम्बू द्वीप मांही।।एरावत खेत्र कहवाइ।वोहीहे इसही
भरतससाही। अतीत काले आरे तीसरे मांही।।सुणो१।।बराडी देश वस्थलपुरी।।शोभित उभय
भयसे दूरी। ऋद्धि सिद्धि से भरपूरी। देवलोकसी सनूरी ॥ सुणो ।।२।। तास पति सोहं-
क राणो। न्याय नीती का घणा जाणो। पशू परजाका पाले प्राणो ॥ महा परतापी
घणा गुण खाणो ॥ सुणो ॥ ३ ॥ राणी सोभाग्यवति सती। शील रूप गुणे मोहे पति।
नमन खमण गुग देती रति। पुन्य सुख भोगवे काल गति ॥ सुणो ॥ ४ ॥ एकदा रा-
णी के गर्भ मया। नवमास गये जन्म भया। गुगे क्षेमंकर नामठया। भणी गुणी
परवीन भया ॥ सुणो ॥ ५ ॥ दुसरा पुत्र और भी भया। नाम प्रियंकर तास ठया।
सो स्वभाव से भोला रया। दोनो साथ ही रहे प्रेम गया ॥ सुणो ॥ ६ ॥ लघु बन्धव
भोलप भासी।।जेष्ट बन्धन करे हांसी।।वहुत चिडाइ उपजावे बगासी। यों नानाविध करता
नासी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ क्षेमंकर परणा वेगवती। रूप सुगो मे शोभे अति। एक स्वभा
वी पतनी पति। वो भी देवर से हसत्ती ॥ सुगो ॥ ८ ॥ प्रियंकर जोडी मिलाइ। प्रिय
वती भोली परणाइ। सुख भोगवे सुखी राही। होनहार सो टले नाही ॥ सुणो ॥ ९ ॥

वडा भाइ अरु भोजाइ । भोले दम्पति को चीडाइ । फिर मिष्ट बचने समझाइ । यों वांते
दिन वहूताइ ॥ सुणो ॥ १० ॥ एक दिन प्रियंकर पत्नी सङ्गे । खेलने गये वन में रङ्गे
। पुष्करणी पर ऊभे उमंगे । तव बृद्ध वन्धव आया उसे ढंगे ॥सुणो॥ ११ ॥ वावी में जा
नी थोडा पानी । मनमाहे कितुहल आणी । धकेल दिया दोनों प्राणी । अचिन्त पडे
गये घवरानी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ तिर कर दोनों वाहिर आये । चिन्ते किसीने गिराये ।
देखे तो पता कुछ नहीं पाये । तब हंसी क्षेम कर प्रगटाये ॥ सुणो ॥ १३ ॥ प्रियवाति अ
ति शरमाइ । असुरक्त हो कहे भोला भाइ । यह हांसी भली नहीं कहवाइ ॥ मिष्ट बोल
दोनों को लिये मनाइ ॥ सुणो ॥ १४ ॥ एक दिन कोइ पर्व आया । भोले दम्पति को
जीमाया । क्षेम कर प्रियंकर को हॅसाया । वेगवती प्रियवती को रमाया ॥ सुणो ॥ १५॥
दोनों रस्ते दोनों तांइ । अन्धारे भुवन में लेजाइ ॥ छोडके चूप वाहिर आइ । श्रवण दे
दे सुणे सो करे कांइ ॥ सु ॥ १६ ॥ दोनो आपस में अथडावे । भय भीत हो शोर करे
अरडावे । चमक के भीत से भडकावे । यों भटकत घवराते वाहिर आवे ॥ सुणो ॥ १७ ॥
दोनों हसते वाहिर रहीया । वो आकर ओलंभा दइया । मिष्ट बचन दोनों समझावइया ।
निज स्थान तास पहोंचावइया ॥ सुणो ॥ १८ ॥ एकदा प्रियवती तांइ । आदरे वेगवती

बोलाइ । वस्त्र भूषण खूब सजाइ । उंच सिंहासण-बेठाइ ।।सुगो।।१९।। दफर को तब बो
लावे । कहे वेस्या बताउं घर में लावे ।मोल भावे ते तहां आवे । प्रियवती को तब बतावे
।। सुगो ।। २० ।। दोनों गये तव शरमाइ । अलग २ भगे घरमाइ । जेठाणी अति ह-
र्षाइ । यो हंसी मे कर्म कठण वन्धाइ ।। सुगो ।। २१ ।। यों सहज कर्म बधावे । वन्ध नि
काचन उदय आवे । डरकर चेते सो सुख पावे । नहीं तो पीछे ते पस्तावे ।।सुगो।।२२ ।।
यह ढाल सातवी मांइ । कर्म वन्धन रीति दर्शाइ । हंसी न करे सो सुखपाइ । अमोल उ
पदेश कथे हित चहाइ ।। सुगो ।। २३ ।। ❀ ।। दोहा ।। एकादा बैठे गोखमे । पेखत
पुर रचनाय ।। देखे पन्थे मुनिवरा । इर्या पेखत जाय ।। १ ।। कृश तन तप से हुवा ।तप
तेजे दीपाय ।। अन भूषण भूषित परे । रहा तन सोभाय ।। २ ।। तीसरे प्रहर मध्यान मे
। चण्डु तपे पर चण्ड । तो भी गजगति चालते । रखके धैर्य अखंड ।३।। दखके हर्षा मन
घणा । तुर्त आ वन्दे पाय ।। अति अगृह लाये सदन मे । चारों अहार वहराय ।। ४ ।।
फिर पूछे कर जोड कर । फरमावो हमें धर्म ।। मुनिजी कहे स्थानक मे । गुरु जी मिटावे
भर्म ।। ५ ।। यों कहकर मुनिवर गये । करा आलोइ आहार ।। क्षेमंकर वेगवती तदा
। वंदन हूवे तैयार ।।६।। आये मुनिवर सन्मुखे । विधिसे वन्धन कीध ।। सन्मुख बैठे न

मूर्य

ग्रहो । तव गुरु उपदेश दीध ॥७॥ ❀ ढाल ८वी॥ पूर्व गुवालिया तन भव जी ॥ यह
॥ मुनि कहे भव्य सांभलो जी । सर्व जीव सुख चहाय ॥ अज्ञाने उपाव दुःख के करे
जी । तन धन जन पर लोभाय ॥ भाविक जन सुनना धर्म प्रकार ॥ आं ॥ १ ॥ तन
वय पलटे वृद्ध होवेजी । धन पुण्य खुटने से जाय ॥ स्वार्थ सरे बदले सगाजी । कहो
कोन है सुखदाय ॥ भ ॥ २ ॥ दीर्घ दृष्टिसे विचारतें जी । अनित्य सदा दुःख कार ॥
ममत्व इस से उतार के जी । करो आत्म गुणे प्यार ॥ भ ॥ ३ ॥ धर्म ही गुण चैतन
तणा जी । भावे तस चउ भेद ॥ ज्ञाने जाणे श्रद्ध से मकिते जी । चारित्रे कर्म छेद ॥
भ ॥ ४ ॥ द्रव्य दाने शील तप भावना जी । इच्छित सुख दातार ॥ अनुक्रमे मोक्षस्थान
देजी । तास है विविध प्रकार ॥ भ ॥ ५ ॥ अभय दान सब में श्रेयजी । बचाने अना
थों के प्राण ॥ पाले निजात्म सम सबेजी । तलहे अमर विमाण ॥ भ ॥ ६ ॥ सूपात्र
मुनिवर तणाजी । आहार वस्त्रस्थान शिष्य ॥ प्रतिलाभे उलट भावसे जी । ताकी सब
पूगे जगिस ॥ य ॥ ७॥ सधार्मी यों को पोपते जी । स्वामी वत्सल होय ॥ धर्म उपकर
ण पुस्तक देवे जी । धर्म दान कहवाय ॥ भ ॥ ८ ॥ खाया तो अफल होवे जी । दि-
या सो अफल न होय ॥ इस भव यश कीर्ती वडे जी । परभव भी सुख जोय ॥भ॥९॥

जी । करो दान का सद्व्यय ॥ पुण्य वन्त धर्प वृद्ध करे जी
य. जानके उलट भाव से जी । करो दान का सद्व्यय ॥ पुण्य वन्त धर्प वृद्ध करे जी
। प्राप्त लावा लेय ॥ भ ॥ १० ॥ शील धर्म दूसरा कहाजी । सर्व व्रतो का मूल ॥ सुरेन्द्र
नरेन्द्र तस प्रमाणे जी । स्वर्ग मोक्षकासूल ॥भ॥११॥ अब्रम्ह एकदा सेवतांजी । नव ला
ख सन्नीविनाश । असंख्य असन्नी पचेन्द्रिय को जी । मोह बन्ध करे नाश ॥ भ॥ १२॥
कोटी सोनैयें दान देजी । कोइ एक दिन पाले जी शील ॥ शीलका लाभ होवे घणाजी
देवे दोनें भवलील ॥ भ ॥ १३ ॥ इन भवे बल बुद्धि क्रान्तीजी । रूप गुण वृधि पाय
॥ पर भव मोक्षगति लहेजी ॥ निश्चय अमर गत जाय ॥भ ॥ १४ ॥ जो सर्व न पाली
सकोतो । अपरिग्रही करो त्याग ॥ निज परणी न तोपवे जी । न करे अधिक अनुरा
ग ॥ भ ॥ १५ ॥ पट परवी और दिन विषे जी । वली एकसे दूसरी वार ॥ श्रावक अब्र-
म्ह सेवे नहीं जी । टाले सो टाले भार ॥ भ ॥ १६ ॥ यो उतारने मोहको जी । अवसरे
सब करे त्याग ॥ यों आराध धर्म शील काजी । मिले मुक्ति मे माग ॥ १७॥ तृतीय धर्म
तपका कहाजी । अध नग वज्र समान ॥ दुष्कृत्य वन प्रजालेने जी । दावा नलसा जान
॥ भ ॥ १८ ॥ अनन्त मेरु मिश्री भखीजी । अनन्त समुद्र पीया दूध ॥ सर्व पुद्गल भखे वि
थके जी । तोभी न आइ सुध ॥भ॥१९॥ अब तुच्छ प्राप्त वस्तू से जी । इच्छा न तृप्ति पा

य ॥ अनन्त वक्त नर्कादि में। सही क्षुधा तृषाय ॥ भ ॥ २० ॥ तोभी गर्ज सरी नहीं जी।
अब बना सुजोग ॥ यथा शक्ति तप समाचरो जी । मिटे द्रव्य भाव रोग ॥ भ ॥ २१ ॥
दान शील तप यह तीनों जी । माल जानो श्रेयकार ॥ चोथा भाव सिद्धि कहाजी ।
यथा तथ्य फल दातार ॥ भ ॥ २२ ॥ चडते भाव तीनों किये जी । पावे उत्तम फल ॥ वि
ना भाव वी आदरेजी । तुछ फल देत अचल ॥ भ ॥ २३ ॥ क्षयोपशम करते थके जी ।क्षा
यक ता जब आय ।। सो रमे जब निजानन्द में जी । सो सुख न वरणाय ॥ भ ॥ २४ ॥
आराधो हित कर चहु जी । कहता ऋषि अमोल ॥ मुनिवोध वसुढाल में जी । अर्पे सुख
अतोल ॥ भ ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ यों सुन मुनि सद्बोध को । हर्षे दम्पति अपार ॥ सम्य
क्त्व युत धारन किये । मर्यादें व्रत बार ॥ १ ॥ वन्दन कर आये घरे । नित्य करे धर्म अभ्या
स ॥ सामायिक पोषध व्रत । रोके अव्रत खास ॥ २ ॥ हंसी मे कर्म जो वान्धिये । आलोये
नहीं तेय ॥ निकाचित वन्ध सो पडा । अवस्य भोगवे जेह ॥ ३ ॥ दान देते उलट भाव से।
शुद्धमन पाळे शील ॥ तपस्या करते विविधपरे । भाव सब से मिल ॥४॥ चउविध कर्म
आराधते । उन्नति कर जैन धर्म ॥ सेवा करे चारों तीर्थ की । जानते येही पर्म ॥ ५॥ ❀ ॥
ढाल ९वीं ॥ धन २ मेतारज मुनि ॥ यह० ॥ जैसा कर्म करे जीवडा । फल तैसा पावे ॥

आर्त किये अविके वन्धे । ज्ञानी समसे खपावे ॥जैसा॥१॥ एक दिन मुनि वन्दन करन
। विदेशी संघ आयो ॥ ताविषे एक श्राविका । धर्म रंग सवायो ॥जैसा॥२॥ निग्रन्थ
के प्रवचन की । वो थी वहुत जाणो ॥ देख क्षेमंकर वेगवती । धर्मराग प्रगटाणो ॥जै
सा॥३॥ संघकी सेवा साच वी । जाते सुख से पहोंचाया ॥ प्रिय धर्मिणी को तहां रखी ।
ज्ञान लेवा उमाया ॥जैसा॥४॥ मन तन धन से तेहनी । सेवा अति कीधि ॥ अन्त सम
य साज तसदीयो । स्वर्ग गति लीधीसो ॥जैसा॥५॥ प्रियंकर भणी धर्ममें । घालण कीना
उपावो ॥ अन्तराय उदय नहीं गृह्यो । रहीयो भोले भावो ॥जैसा॥६॥ आयुर्बन्धको भो-
गवी । प्रथम देवलोके ॥ इन्द्रके सामानिक पने । पुण्य फल विलोके ॥जैसा॥ ७॥ वेगव
ती आयु क्षय करी । ताकी देवी उपन्नी॥भोले दम्पति दोनो मरी।हुव कुगति गमनी ॥जै
सा॥८॥ तुम यहां अलग २ ऊपना । मिला पुन्य से जागो ॥ विसि भोगवी तुम घणी ।
समलो पूर्व रोगो ॥ जैसा॥९॥ प्रियंकर बहु भव भमत । धनपति सेठ थइया ॥ कुसुम
पुरी तुमको मिले। जहाज मे लगइया ॥जैसा॥१०॥ वावी मे तसन्हाखीया । तिन समुद्र
में डाले ॥ हंसी करते दवर तणी । वेगवती फल भाले ॥जैसा॥११॥ प्रियवती पाप उदय
से । वैश्य घर जाइ ॥ ताघर कुसुम श्रीगइ । पूर्व प्रीति पाल्याइ ॥जैसा ॥ १२ ॥ मोयरें मे

दम्पति को। हांसी कर के भमाया ॥ दो घडी दो वर्ष तुम ॥ परदेशे दुःख पाया ॥जैसे ॥ १३ ॥ वैस्या बनाइ देराणी को। तातें वैस्या कहाइ। यों बन्ध निश्चय भोगवे। तब कोन होवे सहाइ ॥ जैसा ॥ १४ ॥ ते श्राविका व्रत भंग सा भव के ताइ करने। कुसुम पुरे देवी हूइ। भइ सहायक तुमनें ॥जैसा ॥ १५ ॥ संकट निवारी यश कियो। सत्धर्म पसायो ॥ दुःख दिये दुःख होते है। सुख से सुख पायो ॥ जैसा ॥ १६ ॥ चउ विध धर्म आराधीया। चारों रत्न तुम पाये ॥ दान से धन पाया घणा। शीले रूप सवाया ॥जैसा॥ १७ ॥ तपसे तेजस्वी हुवे। भाव सें मिला चाया ॥ प्रत्यक्ष फल यह धर्मके। तुमारे को बताया ॥जैसा॥१८॥ करीये सो यहां पाये हो। करोगे सो पावोगे ॥ अवसर रूडा यह मिला। सुज्ञ नही गमावोगा ॥जैसा॥१९॥ प्रत्यक्ष परिचय प्रेक्षकर। कर्म बन्ध से डर जो। हांसी ठठा छोडके। आत्म हित ने कर जो ॥जैसा॥२०॥ नववी पञ्चम खंड की। कही अमोल ढालो ॥ चारोंही धर्म आराधने। होना उजमालो ॥जैसा॥२१॥❀॥दोहा॥ यों पूर्व भव सुण करी। कुसुम श्री वीरसेण ॥ हियापो करे मन चिपे। सेन्दा लागे वेण ॥१॥ज्ञाना वरण पतले हुवे। जाति समरण ज्ञान ॥ उपना जाणी सहूचरी। सत्य बचन भगवान॥२॥ करीये सोही पामीये। वेम नहीं इसमाय। अब न बिगाडूं प्राप्त भव। करुं शिव सुख उपाव॥३॥

धन्य जो तजे संसारको । मेरी नहीं स्मर्थ । आगरी धर्म आदरी । करूं कुछ आत्म अर्थ ॥४॥ केवली कहे करो शक्ति सम । ढील तणा नही काम ॥ व्रत वरण सावध हुवे । ते सुणज्यो धर हाम ॥५४॥ ढाल २०वी ॥ दया धर्म पावे तो कोइ पुण्यवन्त पावे ॥यह०॥ व्रत करके अव्रत घटावे । मोक्ष मार्ग सो पावेजी ॥ येही सार नरदेह पाये का । कोइ जी व सुपन्थ आवेजी॥वृत॥१॥दोष आठारा रहित अरिहंत जी। शुद्ध देवसोही धारोजी ॥ गुरु निग्रन्थ गुण सप्तवीस धारी । धर्म दया मझारोजी ॥वृत ॥ २॥ त्रस जीवोंकी हिंसा त्यागो । वन्ध छेद आति भार वर जोजी । आहार पाणीकी अन्तराय न देणी । स्थावर की यतना करजोजी ॥ व्रत ॥ ३ ॥ बडा मृषावाद निवारो । कूडा आल नहीं देणा जी ॥ गुझ मक हो मत मरम प्रकाशो । वरजो कूबोध रू लिखाणाजी ॥ वृत ॥४॥ चोरि न करो चोरि व स्तु न लीज्यो । तोल मापा खोटा छोडोजी ॥ अच्छी वुरी वस्तु न मिलावो । राज विरोध तज्यो जोडोजी ॥वृत॥५॥ पर स्त्री संग अनंग क्रीडा न करणी । छोटी उमर कुंवारी त्यागो जी ॥ वेस्या विद्वा स्वल्प काल की । नपुंसक संग मत लागोजी ॥ वृत ॥ ६ ॥ द्रव्य राज्य की करो मर्यादा । ज्यादा इच्छा टालोजी ॥ द्रव्य बढे तो धर्मार्थ लगावो । तृष्ण ममता जालोजी ॥ व्रत ॥ ७ ॥ पूर्वादि चउ ऊंची नीची । दिशाका प्रमाण कीजजी ॥ क्षेत्र वृ

जी ॥ व्रत ॥ ८ ॥ छवीस बोल की करो मर्या
द्धि संमेल न करना । आगे पग नहीं दीजेजी ॥ वृत ॥ ८ ॥ छवीस बोल की करो मर्या
दा । पंच अभक्षयन भकीयेजी ॥ पन्दरह प्रकार का व्यापार त्यागो । सातमा वृत रक्षीये
जी ॥ व्रत ॥ ९॥ अनर्थ आत्मा से सदा वारो । सस्त्र संग्रह नहीं करणाजी ॥ परवाही व
स्तू उघाडी मतमेलो। हिंसक उपदेशन उचरणाजी॥व्रत१०॥तीनों काल सामायिक करणा ।
सावद्य काम परहरनाजी । संसा रीकार्यवी कथा छोडो ॥ ज्ञान के ध्यान में रमणाजी ॥
वृत ॥ ११ ॥ नित्य दिशा वगासी करिये । परिमाण उप भोग परि भोगोजी ॥ दय
पालो दश पच्चखाण धारो । रोको इच्छा तिहु जोगो जी ॥वृत ॥ १२॥ प्रति पूर्ण पोषध
वृत धारो । त्याग करो चहुं आहारोजी ॥ धर्म ध्यान में चहू पेहर गुजारो । एक दिन
तो लेखे लगाडो जी ॥ वृत ॥ १३ ॥ जीमते विभाग करो अहारका । साधूको दान दे
नाजी ॥ सूजती वस्तू असूजती नमेलो । हाथ सो साथ लावा लेनाजी ॥ वृत ॥ १४ ॥
आयू अन्त जाण के करीये संथारा । जीवन मरन इच्छा टारोजी । आलोइ निन्दी शुद्ध
होयके । आत्म कार्य सुधारो जी ॥ व्रत ॥ १५ ॥ इत्यादि शिक्षा जिन जी दीनी । दंप
ति धारी लीनी जी ॥ यथा विधि फिर वंदना कीनी । आत्म ऋधि वरी चीनीजी ॥व्रत
॥ १६ ॥ निजस्थान आइ जेठ पुत्र बुलाइ । राज ऋधि संभलाइ जी ॥ पोषध शाल में

रहे आइ । धर्म ध्यान म आत्म रमाइजी ॥ व्रत ॥ १७॥ हरीकेशर जिनकी आयु खूटी
। वेदनी नामरू गोतोजी ॥ यह भी आयु के साथही खूटे । तव मिली जोतमें जोतोजी
॥व्रत॥ १८॥ प्रिती माति सती स्वर्ग पधारे । स्त्री लिङ्गको छेदी जी । मानव होकर संय
म लेकर । होवेगा सिद्ध अखेदीजी ॥व्रत१९॥ दोनोंका निहारण किया वीर सेणजी । ज
ग रीति प्रमाणोजी ॥ कृत कृतार्थ हुवा राजा राणी । कृत करणी फल जाणोजी ॥व्रत
॥२०॥ वीर सेण कुसुम श्री तांइ । धर्म करन्ता देखीजी ॥ चुडामणी सुख कहे नरमांइ ।
धर्मेच्छु हो विशेखीजी ॥व्रत॥ २१ ॥ जैसे सुख आपकी आत्मा चावे । तैसे ही महारी
चावेजी ॥ जो आप करो सो मुझ वतावो । तो सत्सङ्ग फल आवेजी ॥ व्रत ॥ २२ ॥
वीर जी समणोपा सक उसको । नवकारादि सीखावे जी । थोडे मे वहूत धारा बुद्धिवन्त।
सम्यक्त्व आत्म स्पर्शावे जी ॥व्रत॥२३॥ ज्ञान ध्यान तप जप शुक्र करके । सातवे स्वर्ग
सीधाया जी ॥ देखो प्रत्यक्ष सत्संगती फल । तदन्तर राणी रायाजी ॥ व्रत ॥ २४ ॥
आलोइ निन्दि संस्थारो करिया । धर्म ध्यान चित धारीया जी ॥ आयू अन्त अचुत स्व
र्ग सिधाया जी ॥ वृत ॥ २५॥ दोनों देव मित्र हुवा आपस मे । यथा पाणी सी प्रीति
जी ॥ ढाल दशवी पांचवी ढाल यह पंचवे खण्डकी । ऋषि अमोल कही इतिजी ॥व्रत॥

२६॥❀॥ दोहा ॥ वीर कुसुम दोनों देवता । निजेन्द्र दर्शन काम ॥ चाले महा विदेह
को । प्रश्न पूछन हाम ॥१॥ चूडामणी शुक देवता।मिला रस्ते मे आय ॥ प्रीति पूर्व जा
गृत हुइ । देखे ज्ञान लगाय ॥२॥ जाणा पूर्व सम्बन्ध को । अलंगी मिलेतेह ॥ मिल
आवन्दे जिनन्द्र को । वाणी सुणी धरनेह ॥३॥ वन्दि पूछे नम्रहो । हम भव्य केअभव्य
॥ चरमा चरमे सुलभवोही । फरमावो भव तव्य ॥४॥ जिनजी कहे भव्य चर्म तिहूं । सु
गकर अति हर्षाय ॥ वन्दि आये निजस्थान के । रहते मिल सुख मांय ॥५॥ शुकजी
व सतरे सागरोपम । देवका आयु भोग ॥ मनुष्य होकर श्रावक बने । पूर्व सुकृत योग
॥६॥वहांसे चव स्वर्ग तीसरे । देव हूवा दिव्य काय॥आगे शिव सुख सब वरे । सुणना
सोही उपाय॥७॥❀॥ढाल११वी॥चंद्रायणकी देशीमें॥शील सुवा पियके।गुणग्रही सुखी होवो
भवी जना ॥ टेर॥ तिण काले पूर्व महा विदेहके मांयरे । सुकच्छ नाम विजये छे खण्ड वे
चायरे । मध्य खंड में स्वगत पुरी सोभायरे । महागुणवन्त जसोधर नाम रायरे। पद्माराणी
शील रूप दीपायरे ॥ पणहां । रहती सुख के माय पुन्य विलसायरे ॥ शील॥शील॥१॥
स्वर्ग बारवे थकी चवे दोनों देवरे । पद्मावती कूंके उपने तत् खेवरे ॥ युगल वृषभ शुभ
स्वपना राणी लेवरे ॥ हर्ष धरी महीपति को हाल सोकेवरे ॥ दान पुन्य डोहल हुवे अह-

पेवरे ॥पणहां॥ शुभ वक्त क माय हुवे प्रसेवरे ॥शील॥२॥ जोडले दोनों पुत्र जन्मिया जवरे । दासी वधाइ दीनी नृप ने तवरे । करी वडारण धन दिया अवथवरे । नगर देश में गांडा तव ओछवरे । वहुत लोको सुणके पाये अचवरे ॥ पणहां॥ पांच धायसे वृद्धि होय सू हवरे ॥शील॥३॥ दिन बार मे न्याती सव जीमायरे । द्रढ धर्मी प्रिय धर्मी नाम थपायरे । शुक्र शशीपरे वृद्धि नित्यही पायरे । वाल पने से धर्मपे प्रिति सवायरे । योग्य वय मे वहूतर कला पढायरे ॥पणहां॥ जोवन वयमें जवरींसे परणायरे ॥शील॥४॥ लुब्ध वृतिसे भोग रहेसो भोगरे । परन्तू मनमें वसे निरन्तर जोगरे । सामायिक पोषध करे सु योगरे । तीसरे श्वर्गसे शुभ जीव आयु वियोगरे द्रढ धर्मी के पुत्र हुवा पुण्य छोगरे॥पणहां॥ धर्म धुरंधर नाम दिया गुण छोगरे ॥शील॥५॥ वोभी वाल पणासे धर्म में सूररे । पाप कार्यसे सदा रहोसो दूररे भण गुण कर विद्या में हुवा भरपूररे । मात पिताके सदा रहे हजूररे । परणाने हटकरे ते न करे मजूररे ॥पणहां॥ दिक्षा लेनेकी वात करे ते भूररे ॥ शील॥६॥ द्रढ धर्मी प्रिय धर्मी धर्म धुरं धररे । तीर्थंकर ढिग संयम लीना वाररे । द्वादशांगी ज्ञान किया कंठागररे । फिरतो तपस्या मांडी वहूतही पररे । कर्म कटक का जोर लिया सव हररे ॥पणहां॥ मोक्ष पुरी लेनेका रहे विचररे ॥शील॥७॥ हो अप्रमादी अपूर्व क

रण आवन्तरे । अवेदी अकपाइ पद पावन्तरे । क्षयकर मोहणी शुक्ल ध्यान ध्यावन्तरे । अघाति घाती अखण्ड ज्ञानी थावन्तरे । सर्वलोका लोक हस्तावल सा पहावन्तरे ।प।केवल ज्ञानी ।शिव दुलहा बने भगवन्तरे ॥शील॥८॥ गाम नगर पुर विचर किया उपकाररे । बहुत पूर्व लग पाला संयम भारे । आयु खुटे अघाति कर्म कर छाररे । तीनो विराजे जाकर मोक्ष मझाररे । अजर अमर अविन्याशी हुवे अवीकाररे ॥पगहां॥ चिन्तित कार्य सर्व पडे तस पाररे ॥ शील ॥ ९ ॥ यहतो कथी सु कथा करने उपदेशरे । अब इसका सारांश सुणो वररेहशरे । वीरसेण ज्यों वर तो नरों हमेशरे । बालही वयसे धर्माभ्यास करे शरे । विस समय मे धैर्य धारिये विशेषरे ॥पणहां॥ करो वैरीपे उपकार तो यशः लहसेरे ॥ शील ॥ १० ॥ भय स्थान कदा नहीं करिये प्रमादरे । संकट समय करो ज्ञान से चित समादरे । जान दुसरेके छिद्र न करना यादरे । उपगारीका उपकार कथो सुसादरे । पाकर सम्यक्त्व दानी बनो स्याद वादर ॥पणहां॥ धर्म आराधी पावो सुख अगादरे ॥शील॥११॥ सती कुसुम श्री वपतिपे धरा प्रेमरे । अति संकट नहीं खण्डा जरा नेमरे । वैश्याके घर शील पालाउन केमरे । धैर्य से उज्वल हुइ शर्द शशी जेमरे । अन्ते वरत वर पाइ अविछल खेमरे ॥पणहा॥ अहो बाइयों यों वरते पावोगी सब क्षेमरे ॥शील॥१२॥ हरी केशरी घर योग

पुत्र को जानरे । संभलाया राज संयममलिया पुन खानरे ।

पुत्र को जानरे । संभलाया राज संयमलिया गुन खानरे ।कर उद्यम आत्माका किया कल्या
नरे । रणधीर नृप स्वार्थीया जग पहचानरे । छोडी ममता पाये मुक्ति स्थानरे ॥ पणहां ॥
यों अवसर लख चेतो चतुर सुजानरे ॥ शील॥१३॥ क्षेमंकर वेगवती ने कीना हांसरे ।
प्रियंकर प्रियरती को भोले विमासरे । सहज कर्म बंध भोगवे होके उदासरे । छोडी हांस
आराधो धर्म हुलासरें । दान शील तप भाव येही माल खासरे ॥पणहां॥ यों हांसी तज
करो धर्म तो मिले सुख सासरे ॥शील॥१४॥ पशु भी हो शुक करी अति श्वामी सेवरे ।
संकट मे सुबुद्धि से सहाय तस देवरे । स्वामी साथ ही धारा धर्म तत् खेवरे । कर करणी
आत्मा तारी पशू मेवरे । तुमतो मानव का कहिये अधिकवरे ॥पणहां॥ शुद्ध करणी करो
स्वर्ग मुक्ति वक्त एवरे ॥शील॥१५॥ द्रढ धर्मी प्रिय धर्मी दोनो भाइरे । धर्म धुरंधर करणी
करी हेतलाइरे । छत्ते जोग तजा भोग संसार में रहाइरे । साधा आत्मिक अर्थ सा अ-
वसर पाइरे । लीनो संयम भारसो मुक्ति गयाइरे । पणहां ॥ इत्यादि सारांश गृहो सुखदा
इरे ॥शील॥ १६ ॥ तो पावोगे सुख दोनों भवमांइरे । इस भव होवे यश आगे मोक्ष पाइ
रे । सुनने का यह सार जो आये चलाइरे । वक्ता कर्ता की मेहनत सफल जो थाइरे ।
अत्री कुछ भी पच्चखाण करो । उमाइरे ॥पणहां॥ करना सो करो आत्म हित वक्त येही

सहाइरे ॥ शील १७ ॥ बोध प्रदीपक माय में बांची यह कथा । जुडता सम्मास मिलाय के जोडी ये यथा । जिनाज्ञा विरुद्ध जो कोइ कथा व्रता । तो मिथ्या दुष्कृत्य देता संघ की सया । आसय पर उपकार मेने यहा मथा ॥ पणहां ॥ समजाइ मेरी आत्म करी जगकी प्रथा ॥ शील ॥ १८॥ इन्दू निधि रु काय शैशी सवत्समंही । विजय दशमी अश्विन मास शोभे सही । मुम्बापुरी हनूमान गली ज्यूंनी जही । मंगलदास की वाडी में चौमास रही । वीरसेण कुसमश्री की चरी कही ॥पणहां॥ शीलवन्तो के गुण कथनेसे पवित्र मही ॥-शील ॥ १९ ॥ श्रीमहावीर-वृद्धमान प्रभु साशण धणी । पाटानु पाटे श्रेणि हुइ मुनिश्वर तणी । लूंकागच्छ कहानजी ऋषिकी कीर्ति घणी ॥ साधूमार्गी मूल सम्प्रदाय यह अतिही गुणी । श्री तारा ऋषिजी तस शिष्य हुवे गुणमणी ॥ पणहां ॥ श्री काला ऋषिजी पूज्य हूवे गुणवन्त गुणी ॥शील२०॥ श्री वक्षु ऋषिजी के शिष्य पूज्य धन जी भये । तस्य शिष्य श्री खूबा ऋषि ज्ञानी गुणी थये । तस्य श्री चेना ऋषि आर्य भावेमये । श्री केवल ऋषि के आश्रय अमोलक रय । गुरुपासाय चरित्र कथसु बुद्धि भये ॥पणहां॥ कर्ता वक्ता श्रोता हो श्री लये ॥ शील॥ २१ ॥

॥ सारांश—हरीगीत छन्द ॥ वीरसेण कुसुमपुरी पतहो पिताके दर्शन लिया ॥ हरी केशरी ऋषि केवली हो कर । पूर्व भव दर्शा दिया ॥ श्रावक हो स्वर्ग वास कर महा वि देह से मुक्ति गया । पंचम खण्ड यह सार मुनि अमोल संक्षेपे किया ॥१॥ कळश ॥ धन्य २ मुनि हरीकेशरी धन्य २ प्रियमतिवर ॥ धन्य २ रणधीर नृपको धन्य २ रत्नावती सर ॥ धन्य २ श्रीवीरसेण को ॥ धन्य २ हो कुसुम श्री ॥ धन्य २ शुक चूडामणी। सव को वंदन हो मेरी ॥ १ ॥ दान शील तप भावना । यह धर्म चारो सार है । परभाव वरणा इनोंका आराधे खेवा पार है ॥ देव जिनेश्वर जपो गुरु निग्रन्थ को प्रणमीजीये । जिनाज्ञा मे धर्म धारो दयामूल सो कीजीये ॥ २ ॥ यह धर्म धारो आत्म सुधारो आरे उत्तम आवीया ॥ इसलिय यह वीरसेण कुसुम श्री चरित्र गावीया ॥ कहे अमोल श्रोता धार धर्म हृदय अति हुलसावीया ॥ इह लोक सुख संपत वरे । परभवे शिव सुख पावीया ॥ ३ ॥

सहाइरे ॥ शील १७ ॥ बोध प्रदीपक माय में वांची यह कथा । जुडता सम्मास मिलाय के जोडी ये यथा । जिनाज्ञा विरुद्ध जो कोइ कथा व्रता । तो मिथ्या दुष्कृत्य देता संघ की सथा । आसय पर उपकार मेने यहा मथा ॥ पणहां ॥ समजाइ मेरी आत्म करी जगकी प्रथा ॥ शील ॥ १८॥ इन्दू निंधी रु कांय शेशी सवत्समंही । विजय दशमी अश्विन मास शोभे सही । मुम्बापुरी हनूमान गली ज्यूंनी जही । मंगलदास की बाडी में चौमास रही । वीरसेण कुसुमश्री की चरी कही ॥पणहां॥ शीलवन्तो के गुण कथनेसे पवित्र मही ॥-शील ॥ १९ ॥ श्रीमहावीर-वृद्धमान प्रभु साशण धणी । पाटानु पाटे श्रेणि हुइ मुनिश्वर तंणी । लूंकागच्छ कहानजी ऋषिकी कीर्ति घणी ॥ साधूमार्गी मूल सम्प्रदाय यह गुणमणी ॥ पणहां ॥ श्री काला ऋषि अतिही गुणी । श्री तारा ऋषिजी तस शिष्य हुवे गुणमणी ॥ पणहां ॥ श्री काला ऋ अतिही गुणी । श्री तारा ऋषिजी तस शिष्य हुवे गुणमणी ॥शील२०॥ श्री वक्षु ऋषिजी के शिष्य पूज्य धन जी मषिजी पूज्य हुवे-गुणवन्त गुणी ॥शील२०॥ श्री वक्षु ऋषिजी के शिष्य पूज्य धन जी मषिजी पूज्य हुवे-गुणवन्त गुणी । तस्य श्री चेना ऋषि आर्य भावेमये । तस्य शिष्य श्री खूबा ऋषि ज्ञानी गुणी थये । तस्य श्री चेना ऋषि आर्य भावेमये । तस्य शिष्य श्री खूबा ऋषि ज्ञानी गुणी थये ॥पणहां॥ श्री केवल ऋषि के आश्रय अमोलक रय । गुरुपासाय चरित्र कथेसु बुद्धि भये ॥पणहां॥ कर्ता वक्ता श्रोता ह्रीं श्री लये ॥ शील॥ २१ ॥

॥ सारांश—हरीगीत छन्द ॥ वीरसेण कुसुमपुरी पतहो पिताके दर्शन लिया ॥ हरी केशरी ऋषि केवली हो कर । पूर्व भव दर्शा दिया ॥ श्रावक हो स्वर्ग वास कर महा वि देह से मुक्ति गया । पंचम खण्ड यह सार मुनि अमोल संक्षेपे किया ॥१॥ कळश ॥ धन्य २ मुनि हरीकेशरी धन्य २ प्रियमतिवर ॥ धन्य २ रणधीर नृपको धन्य २ रत्नावती सर ॥ धन्य २ श्रीवीरसेण को ॥ धन्य २ हो कुसुम श्री ॥ धन्य २ शुक चूडामणी। सब को वंदन हो मेरी ॥ १ ॥ दान शील तप भावना । यह धर्म चारो सार है । परभाव वर णा इनोका आराधे खेवा पार है ॥ देव जिनेश्वर जपो गुरु निग्रन्थ को प्रणमीजीये । जि नाज्ञा मे धर्म धारो दयामूल सो कीजीये ॥ २ ॥ यह धर्म धारो आत्म सुधारो आरे उत्तम आवीया ॥ इसलिये यह वीरसेण कुसुम श्री चरित्र गावीया ॥ कहे अमोल श्रो ता धार धर्म हृदय अति हुलसावीया ॥ इह लोक सुख संपत वरे । परभवे शिव सुख वीया ॥ ३ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके महन्त मुनि श्री
खूबा ऋषिजी महाराजके आर्य शिष्य श्री चेना ऋषिजी महाराज
और तपस्विजी श्री केवल ऋषिजी महाराज के आश्रित
श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित वीरसेण कूसुम
श्री चरित्रका धर्म प्रबंध नामक पंचम
खन्ड समाप्तम्.
और
॥ श्री वीरसेण कूसुम श्री चरित्र समाप्तम् ॥